हिंदी पुस्तक–6

(प्रथम भाषा)

(छठी कक्षा के लिए)

X9C8N3

ਸਰਵ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संस्करण 2020-21
संस्करण 2021-22 .... 14,500 प्रतियां

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल
चित्रकार : अमरजीत सिंह वालिया

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਰਵ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्स नोवा पब्लिकेशन्ज़, सी-51, फोकल प्वाईंट एक्सटेन्शन, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केन्द्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षणिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (प्रथम भाषा) के प्राइमरी स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के नवीकरण की योजना प्रवेश वर्ष 2007 से बनायी हुई है। प्राइमरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें लागू की जा चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक हमारा छठा प्रयास है। इस पाठ्य-पुस्तक में पंचम प्रयास को आगे बढ़ाया गया है। पाठों का चयन बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप किया गया है। पाठ्य-पुस्तक के विस्तृत अभ्यास भाषायी ज्ञान देने के साथ-साथ बच्चों की सूझ-बूझ, रचनात्मक क्षमता एवं कल्पनाशीलता को विकसित करने में सहायक होंगे। अभ्यास और प्रयोग के माध्यम से बच्चों को व्याकरण के बिंदु रोचक ढंग से समझाये गये हैं।

पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार श्री अमरजीत सिंह वालिया ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय- सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	प्रार्थना	संकलित	1
2	वह आवाज़	संकलित	5
3	संगीत का जादू	संकलित	10
4	जाह्नवी की डायरी	कंचन जैन	16
5	मैं सबसे छोटी होऊँ	सुमित्रानंदन पंत	22
6	दृढ़ निश्चयी: सुशीला	डा० सुनील बहल	25
7	देश-प्रेम	डा० मीनाक्षी वर्मा	29
8	पेड़ की कहानी	संकलित	35
9	दोहा अंत्याक्षरी	सुधा जैन	40
10	राष्ट्रीयता का तीर्थ-खटकड़ कलां	संकलित	44
11	कराहती दहाड़	शिव शंकर	49
12	शून्य..... नहीं अनन्त	शिव शंकर	54
13	नर हो, न निराश करो मन को	संकलित	58
14	तीज	संकलित	61
15	पाँच प्यारे	संकलित	66
16	मदर टेरेसा	डा० मीनाक्षी वर्मा	71
17	एक बूँद	संकलित	76
18	तीन प्रश्न	संकलित	79
19	वायुयान के जन्मदाता	डा० सुनील बहल	86
20	मैराथन की दौड़	संकलित	90
21	साथी हाथ बढ़ाना	साहिर लुधियानवी	94
22	आत्मबलिदान	'चुने हुए बाल एकांकी' से संकलित	97
23	बाबू जी बारात में	संकलित	104
24	ईमानदार बालक	विष्णु प्रभाकर	109
25	बाल लीला	संकलित	114

पाठ-1

प्रार्थना

ईश्वर तू है सब का स्वामी
क्षमा सिंधु तू अन्तर्यामी,
तेरे गुण पाएं हम बच्चे,
काम करें सब अच्छे-अच्छे।

तू है ज्योति का आगार
सत्य-ज्ञान दया भंडार,
अमित आलोक तेरा हम पाएँ,
मिल जुल कर तेरे गुण गाएँ।

भगवन् हम बनें उदार,
तेज-तप संयम भंडार,
पापमय अंधकार भगाएँ,
पुण्यों का प्रकाश फैलाएँ।

तेजोमय तव रूप महान,
दो हमको भक्ति का दान,
विद्या बुद्धि-विवेक बढ़ा दो,
शीलवान और धीर बना दो।

हम बच्चे हों तेरा रूप,
देश के रक्षक, वीर सपूत,
भगवन् हमरे ताप मिटा दो,
जीवन के अपराध भुला दो।

ईश्वर , हम हों सदा निर्भीक,
सेवें गुरु-पितु-मातु, सुप्रीत,
मिले कृपा तेरी का दान,
पाएँ नित्य-नूतन वरदान।

सबके पालक दया निधान,
प्रेम बढ़ाकर हरो अज्ञान,
पढ़-लिखकर सब बनें महान,
करें सदा जग का कल्याण।

-डॉ. धर्मपाल मैनी

अभ्यास

भाषा-बोध

शब्दार्थ

अन्तर्यामी	=	हृदय में रहने वाला	आगार	=	खजाना
अमित	=	बहुत	आलोक	=	प्रकाश
तेजोमय	=	बहुत ज्योति वाला	तव	=	तेरा
विवेक	=	भले-बुरे की पहचान	रक्षक	=	रक्षा करने वाला
ताप	=	कष्ट	निर्भीक	=	निडर
सुप्रीत	=	प्रेम के साथ	नूतन	=	नया
कल्याण	=	भलाई, परोपकार			

'अ' लगाकर विपरीत शब्द लिखो

सत्य	=	असत्य	संयम	=	________
ज्ञान	=	________	धीर	=	________
विद्या	=	________	विवेक	=	________

इन शब्दों के विपरीत शब्द अलग तरह से बनते हैं : जैसे—

गुण	=	अवगुण	पाप	=	पुण्य
स्वामी	=	सेवक	सपूत	=	कपूत
उदार	=	अनुदार	जीवन	=	मृत्यु
अंधकार	=	प्रकाश	अपराध	=	निरपराध
प्रेम	=	घृणा	निर्भीक	=	डरपोक
नूतन	=	पुरातन	वीर	=	कायर
			वरदान	=	अभिशाप

इन शब्दों को याद करें।

इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो

ईश्वर = **भगवान, परमात्मा**

सिंधु = ______, ______

भण्डार = ______, ______

प्रकाश = ______, ______

अंधकार= ______, ______

वरदान = ______, ______

पिता = ______, ______

गुरु = ______, ______

माता = ______, ______

नए शब्द बनाओ

शील + वान	=	______	पाप + मय	=	______
दया + वान	=	______	तेजो + मय	=	______
गाड़ी + वान	=	______	तपो + मय	=	______

समझो

'अन्तर्यामी' में 'र्' रेफ है। 'प्रेम' में 'र' पदेन है। 'कृपा' में ऋ की मात्रा ' ृ ' लगी है। इन शब्दों में रेफ, पदेन और 'ऋ' की मात्रा पहचान कर लिखो

प्रकाश	=	पदेन 'र'	निर्भीक	=	______
सुप्रीत	=	______	कृपा	=	______
प्रार्थना	=	______			

संयुक्त अक्षर से नए शब्द बनाओ

क् + ष = क्ष = रक्षक, _______

ज् + ञ = ज्ञ = ज्ञान, _______

त् + र = त्र = मात्रा, _______

विचार-बोध

1. प्रभु के लिए कविता में कौन-कौन से शब्द प्रयोग हुए हैं ?
2. बच्चे प्रभु से क्या-क्या माँग रहे हैं ?
3. किसका प्रकाश फैलाने की प्रार्थना की है ?
4. किन-किन की सेवा करने की बात कही गयी है ?
5. प्रभु के कौन-कौन से गुण आपको प्रभावित करते हैं ?

सप्रसंग व्याख्या करो

सबके पालक दया निधान,
प्रेम बढ़ाकर हरो अज्ञान,
पढ़-लिखकर सब बनें महान,
करें सदा जग का कल्याण।

आत्म-बोध

1. प्रार्थना को समझकर याद कर लें।
2. प्रतिदिन सुबह उठकर और सोते समय प्रभु का स्मरण करें।
3. सदा प्रभु की कृपा अनुभव करते हुए नम्र बने रहें।
4. प्रभु एक है। हम सबमें उसी की ज्योति विद्यमान है।

रचना-बोध

इसी प्रकार का प्रार्थना गीत लिखो और प्रार्थना सभा में सुनाओ।

पाठ-2

वह आवाज़

मंटू जब स्कूल से लौटा तो वह बहुत थका-थका सा था। घर के दरवाज़े में प्रवेश करते ही वह अपनी माँ को मुस्कराते हुए पाता था। आज उसकी माँ वहाँ नहीं थी। वह अदर घुसा चला आया। उसने अपने कमरे में जाकर बस्ता पटका और माँ की तलाश में निकल पड़ा। उसका जी कर रहा था कि वह झपटकर माँ के गले से लिपट जाए और रोना मुँह बनाकर उसे डाँट पिलाये, ''आज तुम दरवाज़े पर क्यों नहीं मिलीं? मुझे ज़ोरों की भूख लग रही है।''

भूख की याद आते ही उसे लगा कि जैसे वह सचमुच ही भूखा है। रोज ऐसा होता था। स्कूल से आने पर माँ उसे खाने के लिए दे देती थी, लेकिन आज तो सब कुछ उलट-पुलट हो गया। आखिर बात क्या है? माँ कहाँ गयी?

सोचता-सोचता वह रसोई के पास वाले कमरे में जा पहुँचा। वहीं बैठकर वे लोग खाना खाया करते थे। वे लोग बहुत अमीर नहीं थे। उनके घर में बढ़िया-सी खाने की मेज़ भी नहीं थी लेकिन फिर भी जिस दिन किसी का खाना होता, उस दिन दो-तीन छोटी-छोटी मेज़ें जोड़कर उन पर चादर बिछा दी जाती थी और खाना लगा दिया जाता था।

अचरज से मंटू ने देखा कि आज भी सब कुछ उसी तरह लगा हुआ है। ज़रूर कोई खाने पर आने वाला होगा? तब तो बड़ा अच्छा, बढ़िया-बढ़िया चीज़ें खाने को मिलेंगी। यह सोचते-सोचते उसकी निगाह मेज़ पर गयी। उस पर सजा था खाने का सामान-सेब, चीकू, संतरे, रसगुल्ले, दालबीजी इत्यादि-इत्यादि।

उसने सोचा, माँ ज़रूर रसोई घर में समोसे बना रही होगी। हाँ, रामू भी दिखायी नहीं देता। वह ज़रूर बाज़ार गया होगा। पिता जी शायद अभी तक दफ्तर से नहीं आये। वे मेहमान को लेकर आयेंगे। वे हमेशा ही ऐसा करते हैं, पर पम्मी अभी तक क्यों नहीं आयी? ज़रूर उसके स्कूल में आज कोई खास बात है।

उसे लगा जैसे वह अकेला है। आसपास कोई नहीं है। सामने फल और मिठाई देखकर उसके पेट में ज़ोर-ज़ोर से चूहे कूदने लगे।

तभी उसने सुना, जैसे कोई उसका नाम लेकर धीरे-से पुकार रहा है- ''मंटू!''

मंटू चौंक पड़ा। उसने एकदम घूमकर पीछे की ओर देखा, लेकिन वहाँ तो कोई भी नहीं था।

तब तक वह मेज़ के बिल्कुल पास आ पहुँचा। अब वह सब कुछ भूल गया। उसने हाथ बढ़ाकर एक चीकू उठाया। एक रसगुल्ला लिया और इधर-उधर देखकर उसने दोनों चीज़ें खायीं। लेकिन बार-बार उसे ऐसा लगता रहा जैसे किसी ने उसका नाम लेकर पुकारा है- ''मंटू, तुमने ठीक

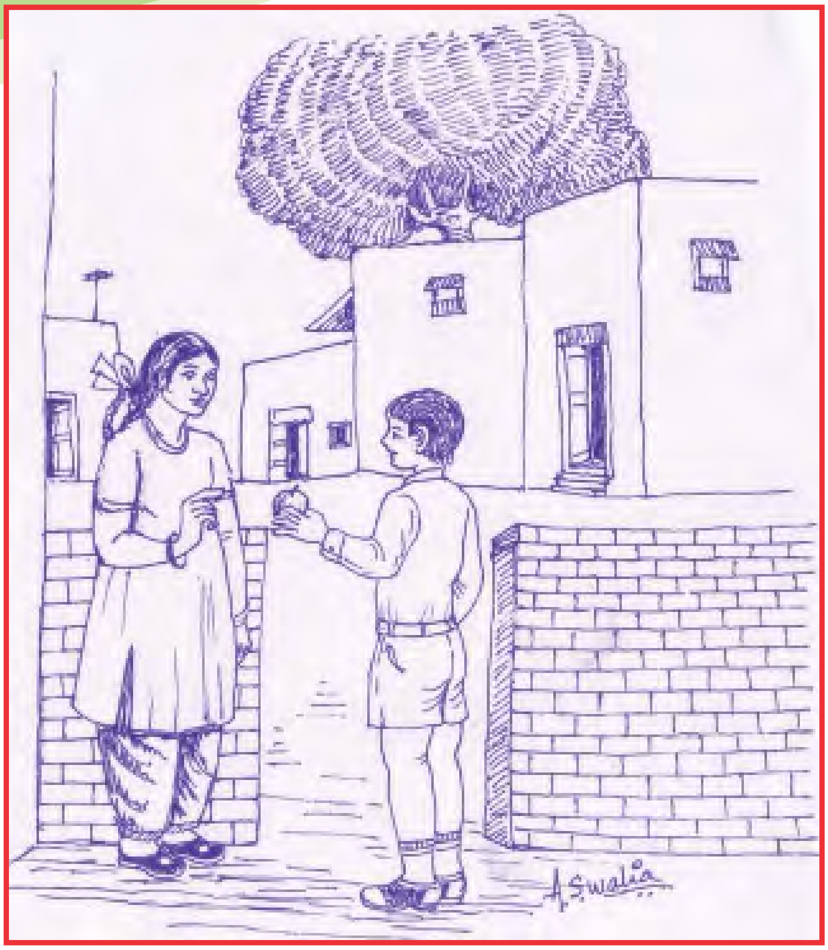

काम नहीं किया। यह चोरी है। तुमने माँ से नहीं पूछा।''

इतने में चीखती-चिल्लाती उसकी बड़ी बहन पम्मी भी वहाँ आ पहुँची। उसने तेज़ी से अपना बस्ता पटका और बोली, ''अरे, मंटू भइया! जानते हो आज हमारे स्कूल में क्या हुआ?'' मंटू ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह अपने में खोया रहा। पम्मी ने यह देखकर पूछा, ''अरे मंटू भइया! तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो? मम्मी कहाँ हैं?''

मंटू तल्खी से बोला, ''मैंने मम्मी को नहीं देखा।''

पम्मी बोली, ''तो आओ, हम देखते हैं। आज अशोक चाचा चाय पर आने वाले हैं। वह उन्हीं के लिए समोसे बना रही होगी।''

यह कहती हुई पम्मी रसोई की ओर भागी। मंटू उसके पीछे-पीछे चला।

माँ रसोई घर में नहीं थी। दोनों बच्चे निराश होकर लौट ही रहे थे, तभी उन्होंने माँ को आते हुए देखा। वह मुस्करायी और बोली, ''मुझे ज़रा देर हो गयी। आज तुम्हारे अशोक चाचा आ रहे हैं। उनको हमारे मुहल्ले की बरफी बहुत अच्छी लगती है। वही लेने गयी थी। अच्छा, आओ, कपड़े बदलो, हाथ-मुँह धोओ। मैं तुम्हारा नाश्ता तैयार करती हूँ।''

दोनों बच्चे तैयार होने के लिए चले गये। पम्मी ज़ोर-ज़ोर से कहानी पर कहानी सुनाती रही, लेकिन मंटू बराबर कुछ सोचता रहा। बराबर कहीं खोया रहा। उसने अपने कपड़े बजाय खूँटी पर टाँगने के एक कोने में फेंक दिये। हाथ-मुँह धोते समय दो बार लोटा उसके हाथ से छूटकर गिरा।

यहाँ तक कि चाचा के आने पर भी उसकी उदासी दूर नहीं हुई, उसे खुश करने के लिए चाचा ने कई गीत सुनाये, किंतु वह नहीं हँसा। उस रात उसने एक सपना देखा-चीकू और रसगुल्ला उसके पेट में कूद रहे हैं और कह रहे हैं, ''मंटू ,तुमने हमें अपनी मम्मी से बिना पूछे खाया था। तुमने ठीक काम नहीं किया।''

वह सवेरे उठा, किंतु वह अब भी प्रसन्न नहीं था। उस दिन उसने स्कूल का काम भी मम्मी से ही कराया। स्कूल में सबसे पहला पीरियड गणित का था। आज उसके सारे सवाल ठीक थे। अध्यापक ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपायी और कहा, ''मंटू, तुम होशियार होते जा रहे हो। इसी तरह मेहनत करोगे तो क्लास में फर्स्ट आओगे।''

मंटू ने अध्यापक की बातें सुनीं। वह चुप रहा। उसे लगा जैसे किसी ने फिर पुकारा है, ''मंटू तुमने फिर ग़लत काम किया।''

मंटू चौंक पड़ा। लेकिन जितना ही वह चौंकता आवाज़ उतनी ही तेज़ होती। उसने साफ़ साफ़ सुना। आवाज़ कह रही थी, ''मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। सवाल तुमने अपने आप नहीं किये हैं। अपनी मम्मी से कराये हैं।''

मंटू ने सोचा- 'आखिर यह आवाज़ कहाँ से आती है? क्या मेरे अंदर से आती है? क्या रात के सपने की तरह सवाल भी मेरे पेट में बैठे हुए बोल रहे हैं?'

मंटू को लगा जैसे उसे पसीना आ रहा है वह मशीन की तरह अपनी सीट से उठा और अध्यापक की मेज़ के पास आ गया। वह धीरे से बोला ''सर, मैं आपको एक बात बताना भूल गया था।''

अध्यापक ने पूछा, ''क्या बात?''

मंटू ने धीरे से कहा, ''सर, ये सवाल मैंने नहीं, मेरी मम्मी ने किये थे।''

अध्यापक ने मंटू को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसकी आँखों में झाँका और मुस्कराकर बोले, ''तो क्या हुआ! आज तुमने अपनी मम्मी से पूछकर किये हैं, तो कल अपने आप कर लोगे। मुझे खुशी है कि तुमने मुझे सच बात बता दी।''

मंटू को लगा जैसे एक ही क्षण में सब-कुछ पलट गया है। वह बिल्कुल हल्का हो गया है। मास्टर जी जो कुछ पढ़ा रहे हैं, वह सब उसे बहुत अच्छी तरह समझ आ रहा है। उसे बहुत खुशी हुई। वह दिन भर बहुत प्रसन्न रहा, लेकिन बीच-बीच में मिठाई की बात उसे याद आती रही।

छुट्‌टी मिलने पर वह सदा की तरह भागता हुआ घर आया। देखा, माँ दरवाज़े पर खड़ी मुस्करा रही है। वह उसके गले से चिपट गया। मंटू बोला, ''मम्मी, मम्मी मैं तुम्हें एक बात बताना भूल गया था। कल जब मैं घर आया था तो तुम मुझे यहाँ नहीं मिली थी। मुझे बड़ी भूख लग रही थी। तुमसे बिना पूछे मैंने एक रसगुल्ला और एक चीकू उठाकर खा लिया।''

मम्मी एक क्षण को गंभीर हुई, फिर मुस्करा कर बोली, ''तो कल तुमने चोरी की थी, लेकिन कोई बात नहीं। देर से ही सही, तुमने मुझे बता दिया। आओ, कपड़े बदलो। मैं तुम्हारे लिए नाश्ता लगाती हूँ। लेकिन, हाँ बेटे, तुम्हें अपना अपराध स्वीकार करने के लिए किसने कहा? ''

मंटू ठिठका फिर बोला– ''पता नहीं मम्मी! तब से बराबर कोई मुझसे कहे जा रहा है– 'मंटू तुमने ग़लती की है।' असल में मम्मी, वह चीकू और रसगुल्ला मेरे पेट में बैठे-बैठे बोल रहे हैं। सपने में मैंने उन्हें ही देखा था।''

मम्मी का चेहरा खिल उठा, वह बोली, ''मंटू, यह तुम्हारी अपनी ही आवाज़ है। जब कोई बुरा काम करता है तो वह आवाज़ तुरंत उसे चेता देती है।''

मंटू बोला, ''मम्मी, मैंने अध्यापक से भी कह दिया था कि आज ये सवाल मेरी मम्मी ने किये हैं, मैंने नहीं। वे बहुत खुश हुए ।' यह सुनते ही दोनों हाथ आगे बढ़ाकर मम्मी ने मंटू को अपनी छाती में भर लिया। फिर उसके गालों को बार-बार चूमती हुई बोली, ''तुम बहुत अच्छे हो, बहुत ही भोले और सच्चे हो।''

–विष्णु प्रभाकर

अभ्यास

I भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ :-

निगाह = नज़र, तल्खी = तीखा स्वर, पीठ थपथपायी = शाबाशी देना

(ii) आपको पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता होगा कि कुछ शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं और कुछ स्त्री जाति का। जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराये उसे पुल्लिंग, जो स्त्री जाति का बोध कराये उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

निम्न शब्दों के लिंग परिवर्तन करो-

माता –	पिता	मामा –	______
चाचा –	______	बहन –	______
दादा –	______	बेटा –	______

(iii) निम्न मुहावरों के अर्थ बताते हुए वाक्यों में प्रयोग करो :-

चूहे कूदना : ______________________________

आँखों में झाँकना : ______________________________

खोए रहना : ______________________________

छाती में भरना : ______________________________

पसीना आना : ______________________________

चेहरा खिल उठना : ______________________________

पीठ थपथपाना : ______________________________

कहानी पर कहानी सुनानाः______________________________

(iv) जो शब्द एक होने का बोध कराये उसे एक वचन कहते हैं जो एक से अधिक का बोध कराये उसे बहुवचन कहते हैं। वचन बदलो :-

दरवाज़ा -	**दरवाज़े**	खूँटी -	______
बच्चा -	______	मिठाई -	______
रसगुल्ला-	______	रसोई -	______
बस्ता -	______	चुहिया -	______

(v) विपरीतार्थक लिखो :-

सच -	**झूठ**	अमीर -	______
आज -	______	भूख -	______
मेहनत -	______	होशियार-	______
उदास -	______		

(vi) वर्ण विच्छेद करो

बस्ता : ब्+अ+स्+त्+आ

दफ़्तर : __+__+__+__+__+__+__

रसोई : __+__+__+__+__

II विचार-बोध :

1. मंटू के घर मेज़ पर खाने का क्या-क्या सामान पड़ा था?
2. चोरी करने पर मंटू की अर्न्तात्मा ने क्या आवाज़ दी?
3. मंटू के घर चाय पर कौन आने वाले थे?
4. मंटू ने क्या ग़लत काम किया था?
5. मंटू के हाथ से लोटा क्यों गिरा?
6. चित्र को देख कर आठ वाक्यों में उसका वर्णन कीजिए।
7. मंटू की जगह यदि आप होते तो क्या करते?

III आत्म-बोध

1. मंटू की तरह अन्य छात्र भी माता-पिता एवं अध्यापकों से सदा सत्य बोलने का प्रयत्न करें।
2. झूठ बोलने के बुरे फल जानकर झूठ बोलना छोड़ दें।
3. मंटू की तरह अपनी अंदर की आवाज़ को सुनकर ठीक काम करें।

पाठ-3

संगीत का जादू

राजा अकबर के राज्य में एक साधु रहता था। साधु बहुत अच्छा संगीतज्ञ भी था। जब राजा अकबर को साधु की इस विशेषता का पता चला तो उसकी भी साधु का संगीत सुनने की इच्छा हुई।

अकबर ने अपने दो-तीन अनुचरों को साधु को बुलाने के लिए भेजा। साधु के पास पहुँचकर उन लोगों ने राजा का संदेश उसे सुनाया और कहा- ''आपका सौभाग्य है महात्मा जी, जो आपका संगीत सुनने की राजा ने इच्छा प्रकट की है। यदि आपका संगीत राजा को पसंद आ गया तो वह आपको मुँह माँगी रकम दे देगा, निहाल कर देगा।''

उन लोगों की बातें सुनकर साधु मुस्कराया। फिर बोला- ''राजा ने मेरा संगीत सुनने की इच्छा प्रकट की, इसके लिए धन्यवाद। किंतु जिस संगीत को राजा सुनना चाहता है, वह संगीत तो कभी-कभी संयोग से बन पड़ता है। प्रयत्न से पैदा किया हुआ संगीत राजा को प्रसन्न न कर सकेगा। मैं राजा को संगीत सुनाने के लिए नहीं जा सकता, आप लौट जायें।''

राजा के अनुचर लौट गये, किंतु उनकी दृष्टि में वह साधु मूर्ख था। ''इतने अच्छे अवसर को हाथ से गँवा दिया'' वे बार-बार इसी बात को दुहरा रहे थे।

जब उन्होंने साधु का निर्णय राजा को बताया तो राजा क्रोध से लाल हो उठा। उसने साधु को बुरा भला कहा। परंतु राजा का मन्त्री विद्वान और बुद्धिमान था। उसने राजा को शांत करते हुए कहा, ''महाराज! आप क्रोध न करें। अपराध क्षमा हो, वह साधु अवश्य है, किन्तु आप उसे बुरा भला नहीं कह सकते। सत्य बात तो यह है......खैर .....रहने दो।''

राजा का क्रोध शांत हो चुका था। उसने नम्र वाणी में मंत्री से कहा- ''नहीं-नहीं मंत्री जी! रहने क्यों दें, आप पूरी बात कहिए।''

''तो सुनिये महाराज! सत्य बात यह है कि इस समय वह साधु आपकी सम्पत्ति का याचक नहीं है, बल्कि आप उसके संगीत के याचक हैं। याचक आप हैं और दाता वह साधु! आपको यदि संगीत सुनना ही है, तो आपको साधु के पास ही पहुँचना होगा। वैसे तत्काल मैं आपके मनोरंजन के लिए दरबार के प्रसिद्ध गायक तानसेन को बुलवा चुका हूँ। वह थोड़ी देर में आता ही होगा।''- मंत्री ने उत्तर दिया।

मंत्री ने ज्योंही अपना कथन समाप्त किया, त्योंही दरबारी गायक तानसेन आ पहुँचा। राजा ने तानसेन को भी साधु वाली बात बतायी।

तानसेन ने कहा -''महाराज ! वह साधु तो सचमुच स्वर्ग का गंधर्व है, शायद किसी शाप के कारण इस पृथ्वी पर आ पहुँचा है। अहा! क्या जादू है उसकी उँगलियों में! ज्योंहि वीणा के तारों पर उँगलियाँ फिरती हैं, वीणा अमृत बरसाने लगती है। किसी ने सत्य ही कहा है महाराज! सच्चा संगीत पैदा नहीं किया जाता, वह तो संयोग से स्वयं सजीव हो उठता है। वह हम जैसा भाड़े का टट्टू नहीं है,

महाराज! जो राजा की आज्ञा पाते ही पूँछ हिलाता हुआ आपके दरबार में आ पहुँचे।' राजा ने कहा,''कलाकार! यदि आप भी उसकी कला के प्रशंसक हैं, तब तो वह वास्तव में बहुत ही गुणवान होगा। यह बात सुनाकर तो आपने हमें विवश कर दिया है कि उसके पास चलकर ही उसके संगीत का आनंद लिया जाये।''

कुछ क्षण रुकने के बाद अकबर ने मंत्री को आज्ञा दी–

''मंत्री जी, मैं तानसेन के साथ उस साधु का संगीत सुनने जाना चाहता हूँ। हमारे लिए दो घोड़े मँगवाओ।''

मंत्री कुछ उत्तर देता, इसके पूर्व ही वह तानसेन बोल उठे–''ऐसा ग़जब मत करना महाराज! यदि आपको सच्चा संगीत सुनना है तो आपको यह भुला देना होगा कि आप राजा हैं। आपको विनम्र श्रोता बनकर ही संगीतज्ञ के पास चलना होगा।''

''तो क्या पैदल ही?'' अकबर ने प्रश्न किया। ''न केवल पैदल ही, बल्कि इन राजसी वस्त्रों को उतार कर भी। यदि आपने राजा बनकर संगीत सुना तो वह तो वैसा ही संगीत बनकर रह जाएगा, जो हम नित्य आपको सुनाते हैं।''

कलाकार की शर्त बड़ी अजीब थी। किंतु अकबर तो संगीत सुनने के लिए व्याकुल था। उसने तुरंत अपनी राजसी पोशाक उतारकर मामूली कपड़े पहन लिए और नंगे पैर उस संगीतज्ञ के साथ चल पड़ा।

साधु की झोंपड़ी पर पहुँचते-पहुँचते उन्हें रात हो गयी। वह पूर्णमासी की रात थी। कार्तिक का महीना था। चंद्रमा की शीतल ज्योत्सना ने उनकी दिनभर की थकान हर ली। राजा अपने साथ आये संगीतकार से बोला–''कलाकार! यदि इतने परिश्रम के बाद भी हम साधु का सच्चा संगीत न सुन पाये तो दुःख होगा। कोई ऐसी युक्ति सोचिए, जिससे हम साधु का संगीत सुन सकें।''

''महाराज! मैंने युक्ति सोच ली है, उसके सफल होने की पूरी-पूरी आशा है, आप निराश न हों।'' इतना कहकर तानसेन ने राजा को झोंपड़ी के बाहर बने चबूतरे पर बिठा दिया और स्वयं भी उसके समीप ही बैठकर अपनी वीणा के तार मिलाने लगा। जान-बूझ कर ही उसने ग़लत ढंग से राग अलापना शुरू कर दिया।

वीणा की झंकार और राग का ग़लत अलाप सुनकर साधु झोंपड़ी से बाहर निकल आया। उसने वीणा को अपने हाथ में ले लिया और संगीतकार को राग निकालने की सही तरकीब बताने लगा। ''महाराज! इस राग को आप ही गायें तो आपकी बड़ी कृपा होगी।'' संगीतज्ञ ने साधु से निवेदन किया।

साधु ने सहर्ष गाना शुरू कर दिया। गायक और श्रोता, सब आनंद में डूबकर आत्मविभोर हो गये। उन्हें यह भी पता न चला कि चंद्रमा सूरज के रूप में बदल चुका है। जब वे आनंद के संसार से निकलकर वास्तविक दुनिया में लौटे तो पता चला कि रात जा चुकी है। साधु को भी अपने दैनिक कृत्य करने थे, उसने वीणा संगीतज्ञ को लौटाते हुए कहा– ''सचमुच आनंद आ गया आज तो।''

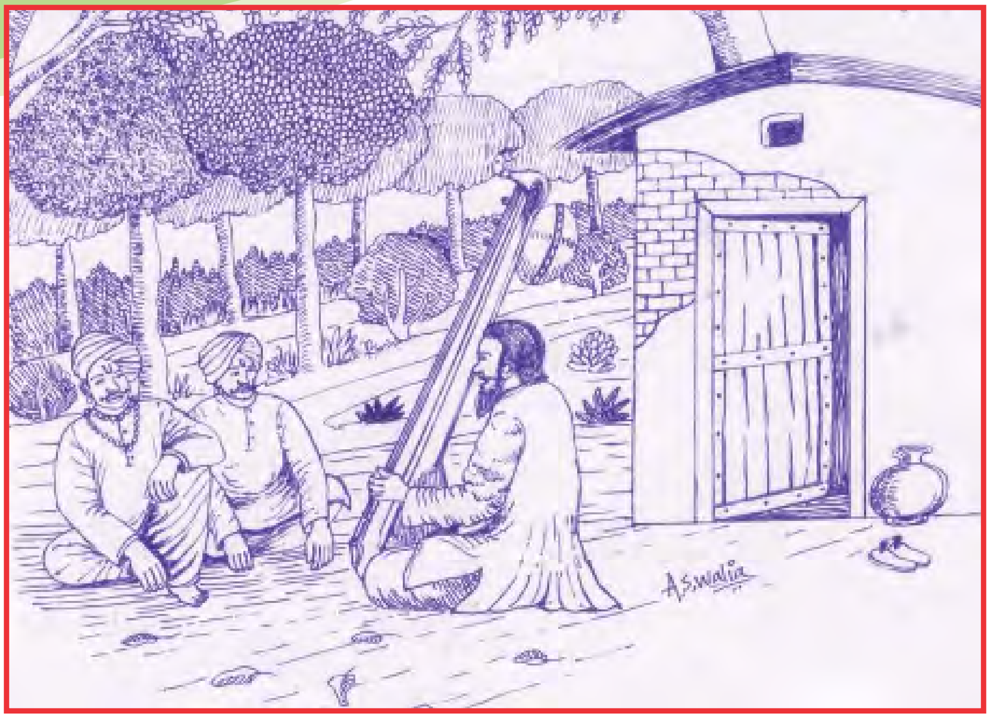

"हाँ महाराज! सचमुच आनंद आ गया। मैं आठ वर्ष से राजा हूँ, किंतु आठ वर्ष की लम्बी अवधि में कभी भी एक घंटे को भी मुझे ऐसा आनंद नहीं मिला, जो आज लगातार आठ घंटे तक मिला है।" राजा ने कहा।

राजा को अपने सामने देखा तो साधु कुछ सकपकाया, तभी राजा के साथी संगीतज्ञ ने सारी कहानी साधु को सुना दी।

साधु ने हँसकर राजा से कहा– "आपके सेवक यों कह रहे थे कि हमारे राजा को आपका संगीत पसंद आ गया तो वे आपको पुरस्कारों से लाद देंगे। अब आपको संगीत पसंद आ ही गया है, कहिए अब आप मुझे क्या दे रहे हैं?"

"महाराज! आपके पास बिताये इन आनंद के क्षणों की तुलना में मेरा सारा राज्य भी तुच्छ है। मेरा अहंकार भी गल गया है।" इस प्रकार कहते हुए राजा की आँखें भर आयीं और लुढ़क कर दो मोती साधु के पैरों पर जा पड़े।

जानते हो वह साधु कौन था? वह था महान् संगीतज्ञ गुरु हरिदास। गुरु हरिदास तानसेन के गुरु थे। भारत को ऐसे महान व्यक्तियों पर नाज़ है।

अभ्यास

I. भाषा-बोध :

(i) शब्दार्थ :-

संगीतज्ञ = संगीत विद्या का ज्ञाता, संगीत जानने वाला   अनुचर = पीछे चलने वाला सेवक, नौकर

सौभाग्य = अच्छा भाग्य, खुशनसीबी

निहाल = प्रसन्न, खुशहाल

निर्णय = फैसला

अपराध = कसूर, खता, जुर्म

क्रोध से लाल होना = बहुत अधिक गुस्सा आना

क्षमा= माफी।

सम्पत्ति = धन, दौलत (विलोम = विपत्ति)

दाता = दानी, देने वाला

तत्काल = इसी समय, फिलहाल

मनोरंजन = मन बहलावा

कथन = बात

सजीव = जीवंत, मार्मिक

प्रशंसक = प्रशंसा करने वाला

विनम्र = नम्रतापूर्ण

श्रोता = सुनने वाला

व्याकुल = बेचैन

ज्योत्स्ना = चाँदनी, चंद्रिका

युक्ति =तरकीब, तरीका

अलापना = गाना, उचित उतार- चढ़ाव के साथ उच्चारण

गायक = गाने वाला

सकपकाया = बेचैन-सा हुआ

आत्मविभोर = आत्मदर्शन में लीन, आत्मानंद में मग्न

पुरस्कार = इनाम

अहंकार = घमण्ड

कृत्य = कार्य (दैनिक कृत्य-प्रतिदिन करने योग्य कर्म)

अवधि = समय सीमा, निश्चित समय

(ii) नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए :-

संगीतज्ञ, सौभाग्य, अनुचर, बुद्धिमान, याचक

-नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो :-

निहाल कर देना, हाथ से गँवा देना, क्रोध से लाल होना, थकान हरना, आँखें भर आना

(iii) 'संगीतज्ञ' शब्द का अर्थ होता है- 'संगीत को जानने वाला।' इसी प्रकार नीचे लिखे अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखो

1 धर्म को जानने वाला = ______________________

2 नीति को जानने वाला = ______________________

3 सब कुछ जानने वाला = ______________________

4 कुछ भी न जानने वाला = ______________________

5 साहित्य की रचना करने वाला = ______________________

6 गीत लिखने वाला = ______________________

7 चित्र बनाने वाला = ______________________

8 मूर्तियाँ गढ़ने वाला = ______________________

(iv) वर्ण को समझते हुए शब्द बनाओ

अ+क्+अ+ब्+अ+र्+अ = **अकबर**

स्+आ+ध+उ = ______________

त्+आ+न्+अ+स्+ए+न्+अ = ______________

स्+अ+म्+प्+अ+त्+त+इ = ______________

म्+अ+न्+त्+र्+ई = ______________

(v) (क) राजा **अकबर** के राज्य में **एक साधु** रहता था।

(ख) राजा का **क्रोध** शांत हो चुका था।

(ग) **तानसेन** दरबारी **गायक** था।

(घ) सचमुच **आनंद** आ गया।

ऊपर लिखे वाक्यों में **राजा, अकबर, साधु, क्रोध, तानसेन, गायक, आनंद आदि शब्द किसी व्यक्ति, जाति या भाव का बोध कराते हैं। ऐसे शब्दों को संज्ञा कहते हैं। 'अकबर', 'तानसेन', किसी व्यक्ति के नाम हैं। इसी प्रकार गायक, साधु किसी जाति के नाम हैं। 'क्रोध' , 'आनंद', मन के भाव हैं, जिन्हें अनुभव किया जा सकता है। इसके आधार पर संज्ञा शब्द तीन प्रकार के हुए :-**

1. **व्यक्ति वाचक संज्ञा**
2. **जाति वाचक संज्ञा**
3. **भाववाचक संज्ञा**

आप अपनी कॉपी पर तीनों प्रकार की संज्ञाओं के पाँच-पाँच उदाहरण लिखो।

(ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:-

(क) साधु बहुत अच्छा-----था। (संगीतज्ञ, विद्वान)

(ख) मंत्री विद्वान और -----था। (धनवान/बुद्धिमान)

(ग) वह साधु तो सचमुच----का गंधर्व है। (भूलोक/स्वर्ग)

(घ) कलाकार की शर्त बड़ी----थी। (अजीब/नवीन)

(ङ) साधु ने----गाना शुरू कर दिया। (सखेद/सहर्ष)

(च.) महाराज! सचमुच-----आ गया। (आनंद/पसीना)

(घ) किसने कहा, किससे कहा और कब कहा?

1. महाराज, आप क्रोध न करें।
2. आप उसके संगीत के याचक हैं।
3. ''कोई ऐसी युक्ति सोचें जिससे साधु का संगीत सुन सकें।''
4. एक घंटे तक भी मुझे ऐसा आनंद नहीं मिला, जो आज लगातार आठ घंटे तक मिला है।
5. कहिए अब आप मुझे क्या दे रहे हैं?

II. विचार-बोध

(क) 1. राजा के अनुचरों की दृष्टि में साधु कैसा था?

2. साधु ने अनुचरों को क्या उत्तर दिया?

3. मंत्री की दृष्टि में याचक कौन था और दाता कौन था?

4. राजा साधु का संगीत सुनने के लिए किस वेष में दरबारी संगीतज्ञ के साथ चला?

5. वीणा की झंकार और राग का गलत अलाप सुनकर साधु ने क्या किया?

6. साधु का संगीत सुनकर राजा ने क्या कहा?

(ख) इस कहानी का क्या संदेश है? अपने शब्दों में लिखो।

आत्म-बोध

1 संगीत एक ललित कला है। ललित कलाएँ पाँच होती हैं।

साहित्य कला, संगीत कला, चित्र कला, मूर्ति कला, वास्तु कला

* अकबर-एक मुगल बादशाह

* **तानसेन**-तानसेन राजा अकबर के दरबार में गायक था। तानसेन बचपन में नटखट प्रकृति का था। उनमें पशु-पक्षियों की आवाज़ का अनुकरण करने की प्रवृत्ति प्रबल थी। एक बार उन्होंने स्वामी हरिदास को शेर की आवाज़ निकाल कर हैरान कर दिया। उनकी शिक्षा स्वामी हरिदास की देख-रेख में हुई। सम्राट अकबर ने जब उनकी कीर्ति सुनी तो उन्होंने तानसेन को अपने दरबार में बुला लिया। उसके गायन से प्रभावित होकर अपने 'नवरत्नों' में सम्मिलित कर लिया। इनके गायन के प्रभाव से वर्षा होना, दीपक जलना और जल में उष्णता का संचार होना आदि अनेक चमत्कारिक उदाहरण मिलते हैं।

2 कुछ पाने के लिए अपने अंहकार को समाप्त करने का प्रयत्न करो।

3 हर बच्चे में कुछ जन्मजात विशेषता होती है। अध्यापक उस विशेषता को पहचानकर उसे उभारने का प्रयास करे।

पाठ-4

जाह्नवी की डायरी

जाह्नवी को डायरी लिखने का शौक है। प्रतिदिन सोने से पूर्व वह डायरी लिखती है। आजकल वह चंडीगढ़ से मुंबई अपने चाचा जी के घर आई हुई है और अपने चचेरे भाई-बहन व चाचा-चाची जी के साथ मुंबई घूम रही है। साथ ही वह रात को बैठकर घूमी जगहों का वर्णन अपनी डायरी में भी करती है। उसे पता है बाद में भले ही इस यात्रा का स्मरण धूमिल पड़ जाए किंतु ये डायरी उसे यात्रा के हर पल का स्मरण कराती रहेगी।

10 अक्तूबर, 2010

आज सुबह ही हम लोग घर से चल पड़े। चाचा जी ने तय कर लिया था कि मुंबई दर्शन टूरिस्ट बस से किया जाएगा इसलिए उन्होंने रात को ही 'बाम्बे सफारी' टूरिस्ट बस में बुकिंग करवा दी। हम लोग सुबह आठ बजे बस में सवार हो गए। बस में काफी विदेशी पर्यटक भी थे। बस से हमने ग्लोरिया चर्च, हुतात्मा चौंक, जहांगीर आर्ट गैलरी, प्रिंस आफ वेल्स म्यूज़ियम, राजा भाई टावर, मरीन ड्राईव, तारापोर वाला एक्वेरियम, गिरगाँव चौपाटी, कमला नेहरू पार्क, बूट हाउस, हैंगिंग गार्डन, श्री महालक्ष्मी मंदिर, हाजी अली, नेहरू सैंटर प्लेनेटेरियम, सिद्धि विनायक मंदिर, जुहू बीच, हरे रामा हरे कृष्णा (इस्कॉन) मंदिर आदि दर्शनीय स्थलों पर घूमा। कुछ स्थलों

को केवल दूर से ही देखा तो कुछ स्थानों के पूरी तसल्ली से दर्शन किए और जानकारी प्राप्त कर आनंद लिया। बस में सवार गाइड ने सभी स्थलों के इतिहास का विवरण दिया। रात को 8 बजे बस ने हमें छत्रपति शिवा जी टर्मिनस के सामने उतार दिया जो विक्टोरियन शैली की भव्य इमारत है। छत्रपति शिवाजी टर्मिनस को पहले विक्टोरिया टर्मिनस (बाम्बे वीटी) भी कहा जाता था। इसी इमारत में पश्चिम रेलवे का मुख्यालय है। वाकई मुंबई में एक ओर गगनचुम्बी इमारतें हैं तो दूसरी ओर झोंपड़पट्टी। मुंबई बहुत ही भीड़-भाड़ वाला महानगर है। हर किसी को एक दूसरे से आगे निकलने की तेज़ी है। यहाँ के लोगों का जीवन तेज़ रफ़्तार महानगरीय जीवन है।

11 अक्तूबर, 2010

आज हमने 'ऐलीफेंटा द्वीप' की यात्रा करनी थी इस लिए सुबह जल्दी-जल्दी तैयार होकर 'गेट वे आफ इंडिया' पहुँच गए। सामने ही होटल ताज की भव्यता देखते ही बनती है। 'गेट वे आफ इंडिया' के पीछे अरब सागर है। इसी अरब सागर में ऐलीफेंटा द्वीप स्थित है। द्वीप तक पहुँचने के लिए हमने स्टीमर की टिकटें ले लीं और स्टीमर में बैठ गए। दूर तक हिलोरें मारता समुद्र का नीला पानी और हर तरफ फैली अपार शांति मन को सुकून प्रदान कर रही थी। समुद्र की लहरों और इनके साथ उड़ते परिंदों को निहारना मनमोहक लग रहा था। बड़े-बड़े समुद्री जहाज रोमांचित कर रहे थे। लगभग पौने घंटे में हम ऐलीफेंटा द्वीप पहुँच गए। इस टापू में एक किलोमीटर तक चलकर हम ऐलीफेंटा गुफाओं तक पहुँच गए। इस गुफा के प्रवेशद्वीप कई हैं और छत एक ही है। इन गुफाओं के मुख्य द्वार पर हाथियों के बुत बनाए गए थे। हाथी को अंग्रेज़ी में 'ऐलीफेंट' कहते हैं इसलिए इन गुफाओं का नाम ऐलीफेंटा पड़ गया फिर

धीरे-धीरे इस बेहद खूबसूरत द्वीप को भी ऐलीफेंटा के नाम से पुकारा जाने लगा। कहते हैं अब

मुख्य द्वार वाले हाथियों को हटा कर मुंबई के अजायबघर में रख दिया गया है। एक ही शिलाखंड को काटकर विशाल गुफाएँ बनाई गई हैं। गुफाओं की दीवारों पर मूर्तियों और चित्रों को बड़ी कलात्मकता से उकेरा गया है। गुफा के एक कोने में शिव और पार्वती की विवाह की मूर्ति विराजमान है। किसी जगह गंगा के अवतरण को इतनी सूक्ष्मता से उकेरा गया है कि लगता है गंगाजी सचमुच ही पृथ्वी पर उतर रही हों तो दूसरी जगह अर्द्धनारीश्वर की सुंदर मूर्ति सुशोभित हो रही है। इन मूर्तियों को महान शिल्प का दर्ज़ा प्राप्त है। आगे चलकर हमने रावण के कैलाश पर्वत को उठाने वाली मूर्ति देखी फिर हम शंकर समाधि नामक स्थान पर पहुँचे। आगे जाकर एक चट्टान के नीचे गंगा का एक अनूठा कुंड देखा जिसका जल ऊपर शांत दिखता है पर अंदर ही अंदर चलता रहता है। इन गुफाओं को देखते-देखते हम बाहर आ गए। सचमुच ऐलीफेंटा द्वीप में ऐलीफेंटा गुफाएँ आज भी भारत के गौरवशाली अतीत को प्रस्तुत कर रही हैं।

अभ्यास

भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ :**

अर्द्धनारीश्वर = शिव का वह रूप जिसमें आधा भाग पार्वती का होता है, शिव-पार्वती का संयुक्त रूप

स्मरण	=	याद करना	म्यूज़ियम	=	अजायबघर, संग्रहालय
विवरण	=	विस्तार से	भव्यता	=	विशालता
मुख्यालय	=	मुख्य कार्यालय	कलात्मकता	=	कला से भरपूर
शिलाखंड	=	चट्टान	सूक्ष्मता	=	बारीकी, महीनता
सुशोभित	=	सुंदर लगना	गौरवशाली	=	गौरवयुक्त, सम्मानित
विराजमान	=	विद्यमान	रोमांचित	=	आनंदित
शिल्प	=	कला	कुंड	=	तालाब-जैसा

गाइड = यात्रियों को किसी नगर के दर्शनीय स्थान दिखाने वाला

द्वीप = स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर समुद्र हो

स्टीमर = भाप से चलने वाला छोटा जहाज़

(ii) **लिंग बदलो**

हाथी	_______	राजा	_______
भाई	_______	चाचा	_______

(iii) **वचन बदलो**

रात	_______	इमारत	_______
गुफा	_______	मूर्ति	_______
स्थल	_______	द्वीप	_______
परिंदा	_______	लहर	_______

हाथी ________

(iv) **विपरीतार्थक शब्द लिखो**

पूर्व	________	सोना	________
रात	________	उतार	________
पीछे	________	धीरे	________
विशाल	________		

(v) **पर्यायवाची शब्द लिखो**

चट्टान	________	पर्वत	________
परिंदा	________	लहर	________
गंगा	________	शिव	________
पार्वती	________		

(vi) **वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो**

देखने योग्य _______

आकाश को छूने वाला _______

जिसका पार न पाया जा सके _______

मन मोहने वाला _______

जिस भवन में विचित्र चीज़ों का संग्रह किया जाता है _______

घूमने के शौकीन _______

कला से भरपूर _______

अंदर जाने का द्वार _______

मुख्य कार्यालय _______

ऐसा भूमिखण्ड जो चारों तरफ से समुद्र से घिरा हो _______

(vii) **भाववाचक संज्ञा बनाओ**

स्मरण	_______	बैठना	_______
महान	_______	चलना	_______
लिखना	_______		
सूक्ष्म	_______		

(viii) **शुद्ध करो**

मूरती	______	चंढीगड़	______
सुशोभीत	______	समाधी	______
समरण	______	रफतार	______
अर्धनारीश्वर	______		

(ix) **वाक्यों में प्रयोग करो**

द्वीप ____

मूर्ति ____

अतीत ____

खूबसूरत ____

अनूठा ____

द्वार ____

आनंद ____

गुफा ____

समाधि ____

बुत ____

(x) **जाह्नवी ने अपनी चाची से कहा, मैं आपके यहाँ मुंबई आ रही हूँ।**

इस वाक्य में जाह्नवी (संज्ञा) ने अपने लिए **'मैं'** और अपनी चाची (संज्ञा) के लिए **'आपके'** शब्द का प्रयोग किया है

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। मैं, मेरा, हम, उन्हें, वह शब्द सर्वनाम हैं। **बोलने वाला अपने लिए जैसे 'मैं' 'मुझे', (उत्तम पुरुष) सुनने वाले के लिए जैसे 'तू', 'तुम', 'तुम्हें' (मध्यम पुरुष) और अन्य के लिए 'वह', 'वे' 'उसे', 'उन्हें' आदि (अन्य पुरुष) सर्वनामों का प्रयोग करता है। अत: इन्हें पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।**

(II) **विचार-बोध**

(क) 1. जाह्नवी को किस का शौक है ? वह प्रतिदिन सोने से पूर्व क्या करती है ?

2. जाह्नवी घूमी जगहों का वर्णन डायरी में क्यों करती है ?

3. वह मुंबई में कहाँ-कहाँ घूमी ?

4. जाह्नवी को स्टीमर में बैठकर समुद्र कैसा लग रहा था ?

5. ऐलीफेंटा द्वीप का नाम 'ऐलीफेंटा' कैसे पड़ा ?

6. ऐलीफेंटा गुफाओं में किन-किन की मूर्तियाँ हैं ?

(ख) 1. जाह्नवी की मुंबई यात्रा का विस्तृत वर्णन करें।

2. ऐलीफेंटा गुफाओं का वर्णन करें।

(III) आत्म-बोध

1. जहाँ भी कहीं घूमने जायें वहाँ की प्रकृति, माहौल का आनंद मनायें।
2. बड़ों को सहयोग दें। उनकी आज्ञा में रहें।

(IV) रचना-बोध

1. विभिन्न द्वीपों की जानकारी एकत्रित करें।
2. डायरी शैली में अपने किसी देखे स्थान को लिखने की कोशिश करें।
3. 'समुद्र की यात्रा का अनुभव' विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

पाठ-5

मैं सबसे छोटी होऊँ

मैं सबसे छोटी हाऊँ,
तेरी गोदी में सोऊँ,
तेरा आँचल पकड़-पकड़कर
फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ।
बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात!
अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!
ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,

– सुमित्रानंदन पंत

अभ्यास

भाषा बोध

(i) **शब्दार्थ**

आँचल : साड़ी या दुपट्टा जैसे कपड़ों का किनारे का हिस्सा

मात :	माता, माँ	कर :	हाथ
सज्जित :	सजाना	गात :	शरीर

(ii) **वचन बदलो**

गोदी =	________	परी =	________
खिलौना =	________	मैं =	________

(iiii) **विपरीत शब्द लिखो**

दिन =	________	पकड़ना =	________

छोटी = ________ सुखद = ________

(iv) **पर्यायवाची शब्द लिखो**

माता = ________,________

दिन = ________,________

रात = ________,________

मुख = ________,________

हाथ = ________,________

गात = ________,________

स्नेह = ________,________

(v) **सर्वनाम शब्दों के रूप बनाओ**

मैं	मेरा	मेरी	मेरे
तू	________ ,	________ ,	________
आप	________ ,	________ ,	________
हम	________ ,	________ ,	________

(vi) **इन शब्दों में अंतर बताओ**

स्नेह = प्रेम

शांति = सन्नाटा

धूल = राख

ग्रह = गृह

(II) **विचार-बोध**

1 कविता में बच्ची सबसे छोटी होना क्यों चाहती है ?

2 बचपन में बच्चे अपनी माँ के निकट ही रहते हैं। कविता में निकट रहने की कौन-कौन सी स्थितियाँ बतायी गयी हैं ?

3 माँ अपनी बच्ची के क्या-क्या काम करती है ?

4 यह क्यों कहा गया है कि माँ बच्चे को बड़ा बनाकर छलती है ?

सप्रसंग व्याख्या करो

बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात।

(III) आत्म-बोध

1 कविता को पढ़ने के बाद एक बच्ची और माँ का चित्र आपके मन में उभरता है। माँ और बच्चे का सम्बन्ध जीवन भर का है। अनुभव करें।

2 बड़े होने पर अपनी माँ के प्रति अपना कर्त्तव्य न भूलें।

(IV) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1 माँ और बच्ची का अपनी कल्पना से चित्र बनाओ और उस चित्र के आधार पर एक कहानी बनाओ।

2 माँ की दिनचर्या नियमित रहती है। परंतु कुछ मौकों जैसे जन्मदिन, मेहमान आ जाने पर, किसी त्योहार के दिन, घर के किसी सदस्य के बीमार पड़ने पर उसकी दिनचर्या में बदलाव आ जाता है। किसी भी एक मौके पर अपनी माँ की दिनचर्या लिखो।

3 आप अपनी माँ को क्या सहयोग दे सकते हैं ?

पाठ-6

दृढ़ निश्चयी सुशीला

राजस्थान में टोंक ज़िले के हनुमनपुरा गाँव में कुमारी सुशीला अपनी माँ के साथ अपने ननिहाल में रहती थी। यह उसका दुर्भाग्य था कि उसके पिता का देहांत हो चुका था। वह इस कमी को हरदम महसूस करती थी। उसकी आयु 13 साल की थी और वह आठवीं कक्षा में पढ़ती थी। वह खूब मन लगाकर पढ़ाई करती थी। परंतु उसकी माँ और नाना ने सोचा कि सुशीला आखिर लड़की ही तो है। यह पढ़-लिखकर क्या करेगी? यह विचार कर वे उसकी शादी के बारे में सोचने लगे। उनकी यही कोशिश थी कि जल्दी से जल्दी इसके हाथ पीले कर दें और इस ज़िम्मेवारी से मुक्त हो जायें।

एक दिन उसकी माँ ने सुशीला को बताया कि उसके लिए उन्होंने योग्य वर ढूँढ़ लिया है और जल्दी ही उसकी शादी कर देंगे। अपनी शादी की बात सुनकर सुशीला के पैरों तले की ज़मीन ही खिसक गयी क्योंकि उसने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं था और न ही उसकी उम्र शादी के लायक थी। उसने अपनी माँ से इसका विरोध किया। किंतु उसे बार-बार शादी करवाने

के लिए मजबूर किया जाने लगा। जब सुशीला इसका विरोध करती तो उसकी माँ यही दलील देती कि लड़की जितनी जल्दी अपने ससुराल चली जाये उसके लिए उतना ही अच्छा है। किंतु सुशीला तो अपने इरादे से टस-से-मस नहीं हुई। इसलिए वह इस बाल-विवाह के लिए कतई राज़ी नहीं हुई। तब उसकी माँ व नाना ने अपनी बिरादरी के कुछ लोगों के द्वारा भी सुशीला पर दबाव बनाया और बात न मानने पर न केवल उसे भूखा-प्यासा रखा अपितु उसे मारा-पीटा भी गया। किंतु सुशीला बिल्कुल भी विचलित नहीं हुई।

एक दिन सुशीला अपने पर अन्याय होता देखकर ननिहाल से भागकर अपने तायाजी के घर चली गयी। उसे अपने तायाजी पर पूरा विश्वास था कि वे उसकी मदद ज़रूर करेंगे। उसकी हिम्मत व दृढ़ निश्चय को देखकर उसके ताया ने उसे राजस्थान के मुख्यमंत्री और पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखने की सलाह दी। उन्होंने स्वयं भी प्रशासन के आला अधिकारियों से इस अत्याचार के बारे में बात की। जब बात इतनी ऊपर पहुँच गयी तो पुलिस ने तुरंत इस मामले को गंभीरता से लेते हुए इसमें हस्तक्षेप किया व इस बाल-विवाह को रुकवाया। पुलिस ने उसकी माँ, नाना व अन्य रिश्तेदारों को बताया कि बाल-विवाह कानूनन अपराध है इसलिए वे सुशीला को विवाह के लिए बाध्य नहीं कर सकते। उसके घर वालों को अब अपनी ग़लती का अहसास हो गया था। उन्हें सुशीला के दृढ़ निश्चय व स्वाभिमान के आगे आखिर झुकना ही पड़ा। नि:स्संदेह अपने पर होते अन्याय का इतनी बहादुरी से सामना करने पर और इतनी कम उम्र में अपनी सजगता का परिचय देने पर उसे उसके स्कूल तथा ज़िले में सम्मानित किया गया। यही नहीं उसकी इस निर्भीकता तथा दृढ़ निश्चय के कारण उसे नई दिल्ली में 24 जनवरी 2007 में आयोजित एक समारोह में प्रधानमंत्री डा० मनमोहन सिंह जी द्वारा राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से भी नवाज़ा गया।

अभ्यास

भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

दुर्भाग्य	=	बुरी किस्मत	मुक्त	=	स्वतंत्र
उम्र	=	आयु	दलील	=	तर्क
कतई	=	बिल्कुल	ननिहाल	=	नाना-नानी का घर
दृढ़	=	मज़बूत	सजगता	=	सावधानी

(ii) **मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो**

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
हाथ पीले करना	शादी करना	____________________
पैरों तले की जमीन खिसक जाना	होश उड़ जाना, बहुत घबरा जाना	____________________

टस से मस न होना	दृढ़ रहना, अनुनय-विनय का कुछ प्रभाव न होना।	____________________
दबाव बनाना	मजबूर करना	____________________

(iii) **इन शब्दों में अक्षरों के क्रम को ठीक करते हुए शब्द लिखो**

निलहान	**ननिहाल**	खलरिक	________	सखिक	________
कयला	________	सुलरास	________	रीदबिरा	________
अकक्षधी	________	प्रनसशा	________	ददम	________
वदबा	________	धअराप	________	रोसहमा	________
नमहमोन	________	तावीर	________	यरिपच	________

(iv) **विपरीत शब्द लिखो**

मुक्त	________	जल्दी	________	लायक	________
राज़ी	________	विश्वास	________	विचलित	________
दृढ़	________	ऊपर	________	अन्याय	________
निर्भीक	________				

(v) **इन शब्दों को उनके सही स्थान पर लिखो**

कक्षा, निर्भीकता, सुशीला, माँ, हनुमनपुरा, प्रधानमंत्री, सजगता, नाना, नई दिल्ली, वीरता, मनमोहन सिंह, बहादुरी

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
________	________	________
________	________	________
________	________	________
________	________	________

उपयुक्त सर्वनाम लगाकर वाक्य पूरे करो

(क) _______पिता का देहांत हो चुका था।

(ख) _______अपनी माँ से इसका विरोध किया।

(ग) _______ताया ने हिम्मत दिलायी।

(घ) _______खूब मन लगाकर पढ़ती थी।

(ङ) _______स्वयं भी अधिकारियों से बात की।

विचार-बोध

1. सुशीला कहाँ की रहने वाली थी ?
2. सुशीला ननिहाल क्यों रहती थी ?
3. उसकी माँ और नाना सुशीला की शादी क्यों जल्दी कर देना चाहते थे ?
4. सुशीला ने अपनी शादी का विरोध क्यों किया ?
5. बाल-विवाह का विरोध करने पर सुशीला को क्या-क्या अत्याचार सहने पड़े ?
6. सुशीला घर से भागकर किसके घर गयी और उसने उसकी क्या सहायता की ?
7. सुशीला का विवाह किस प्रकार रुका ?
8. सुशीला को किस-किस ने सम्मानित किया और क्यों ?
9. सुशीला के चरित्र से आप को क्या शिक्षा मिलती है ? लिखें।

आत्म-बोध

1. अन्याय करना व सहना दोनों ही पाप हैं। इस बात को जीवन में धारण करें।
2. सामाजिक बुराइयों के प्रति सदैव जागरूक रहें तथा उनको जड़ से उखाड़ने में जी-जान से जुट जायें।

रचना-बोध

1. यदि आप सुशीला की जगह होते तो इस समस्या का कैसे सामना करते ? लिखें।
2. इस कहानी के छोटे-छोटे संवाद लिखकर बाल-विवाह की सजगता पर लघु नाटिका का स्कूल में मंचन करें।

पाठ-7

देश-प्रेम

आज विद्यालय में चित्र बनाओ प्रतियोगिता आयोजित हुई। कुछ बच्चे भारत का मानचित्र बना रहे थे तो कुछ तिरंगा झंडा चित्रित कर रहे थे। कुछ राष्ट्रीय प्रतीक चिह्नों के चित्र उकेर रहे थे तो अन्य महात्मा गाँधी, भगत सिंह, आदि के चित्रों को आकार दे रहे थे। प्रतियोगिता समाप्त होने पर जब विद्यार्थी कक्षा में आए तो सबके चेहरे खिले हुए थे। अब हिंदी का पीरियड था। अध्यापिका ने कक्षा में प्रवेश करते ही बच्चों से चित्र बनाओ प्रतियोगिता का विषय पूछा तो सभी विद्यार्थी देश-प्रेम के रंग में रंगे हुए एक साथ बोल पड़े देश-प्रेम।

अध्यापिका-'बच्चो, आज आप ने देश-प्रेम और राष्ट्र-प्रेम जैसी महान भावना को चित्रों द्वारा कागज़ों पर साकार किया है। जानते हो, देश-महज भूमि के टुकड़े को कहते हैं तो राष्ट्र-भूमि, उस पर रहने वाले लोगों और उनकी संस्कृति को कहते हैं तो देश प्रेम-देश की उन्नति व विकास में योगदान देने, देश के गौरव की रक्षा करने, उसकी समस्याओं को सुलझाने को कहते हैं। वस्तुतः मनुष्य के जिन कार्यों से देश की प्रगति हो वही कार्य देश-प्रेम, देशभक्ति, राष्ट्रपूजा, राष्ट्रवंदना तथा मातृभूमि प्रेम की सीमा में आ जाते हैं। बच्चो, प्रेम बहुत ही पवित्र भावना है। प्रेम के सम्बन्ध में माँ और मातृभूमि दोनों का ही स्थान उच्च है।'

'मैडम, प्रेम के सम्बन्ध में माँ और मातृभूमि का स्थान उच्च कैसे है?' पलक ने बड़ी ही जिज्ञासापूर्वक पूछा।

'देखो बच्चो, माँ हमें जन्म देती है। अपनी ममता, करुणा, स्नेह और वात्सल्य से हमारा पालन-पोषण करती है। उसी प्रकार जन्म भूमि भी माँ के ही समान अपनी वायु, अन्न, जल, फल-फूल तथा वनस्पतियों से हमारा पालन-पोषण एवं संवर्द्धन करती है इसीलिए इन दोनों का स्थान उच्च है। माँ की तरह जन्मभूमि अथवा देश के प्रति हमारा प्रेम उमड़ना स्वाभाविक है।'

सभी विद्यार्थी अध्यापिका की बातों में निमग्न थे। अध्यापिका ने सब बच्चों पर दृष्टि दौड़ाई और बोली, 'शायद आपको मालूम हो, देश-प्रेम ही वह धागा है जिसमें देशवासी मोतियों की तरह गुंथे रहते हैं। देश को कहीं भी आघात पहुँचने पर एकजुट हो जाते हैं। भारत को परतंत्र बनाकर जब ब्रिटिश शासकों ने देश के स्वाभिमान व संस्कृति पर चोट की, पूरे राष्ट्र का शोषण किया तो देश-प्रेम के वशीभूत न जाने कितने ही देशभक्त देश की स्वतंत्रता के लिए उमड़ आए और अपना तन-मन-धन अर्पित करने के लिए तैयार हो गए।'

अब तो आप ज़रूर स्वतंत्रता-संग्राम के आंदोलन में पहुँच गए होंगे। चलो तूलिका, अब कुछ स्वतन्त्रता सेनानियों के नाम बताओ।'

तूलिका-महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय

अध्यापिका-हार्दिक आप भी बताओ।

हार्दिक-भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, पं जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री

अध्यापिका- 'बच्चो, ये सब वे देशप्रेमी हैं जिनका स्वाधीनता-संग्राम में योगदान उल्लेखनीय है। यह देशप्रेम ही था कि राष्ट्रपिता बापू ने सत्य और अहिंसा को अपना शस्त्र बनाया, बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार बताया, लाला लाजपतराय ने अंग्रेज़ों की लाठियों से शहीदी को पाया, भगत सिंह ने फाँसी के फंदे को हँसते-हँसते गले लगाया। सुभाष चंद्र बोस ने अपनी फौज बनाकर भारत को आज़ाद करवाने का सपना सजाया।'

जंगे आज़ादी में देशप्रेम की ताकत से परतंत्रता की बेड़ियाँ खुल गईं, गुलामी की ज़ंजीरें टूट गईं। देशप्रेम की शक्ति के आगे अंग्रेज़ों की लाठियाँ, गोलियाँ व फाँसी के फंदे लाचार साबित हुए। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हो गया। लाल किले पर स्वतंत्र भारत का ध्वज फहराया गया।

स्वतंत्रता के बाद नए भारत का निर्माण हुआ। हमारा देश संसार का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष देश बना। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार व विज्ञान आदि विभिन्न क्षेत्रों में भारत ने विकास किया। साथ ही देशभक्ति, देशप्रेम की परिभाषा भी बदली।

आज केवल हर पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी, गाँधी जयंती तथा अन्य राष्ट्रीय पर्वों पर ही देशवासियों को देश-प्रेम की भावना उमड़ती है। मैडम कुछ लोग जुलूस निकालते हैं फिर गुस्से में भर्राए हुए सरकारी बसों को आग लगा देते हैं। क्या यह देश की सम्पत्ति को ही हानि पहुँचाते हैं?' आदित्य बोला।

हाँ आदित्य, वे देश की सम्पत्ति को यानि सार्वजनिक सम्पत्ति को ही हानि पहुँचाते हैं। स्कूल, अस्पताल, बसें, रेलें आदि हमारी सम्पत्ति हैं। इनकी सुरक्षा करनी चाहिए। साथ ही सार्वजनिक स्थलों तथा ऐतिहासिक इमारतों के रख-रखाव व संरक्षण की जिम्मेवारी भी हमारी ही है। हमें इनकी दीवारों को नामों और भद्दी टिप्पणियों से रंगना नहीं चाहिए।'

तभी काव्या कुछ पूछने के लिए खड़ी हो जाती है, 'मैडम, मैं अकसर टी.वी. में देखती हूँ कि देश के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर बम विस्फोट जैसी घटनाएँ होती हैं, जिसमें कई लोग मर जाते हैं और कई घायल हो जाते हैं। कुछ व्यक्ति इस तरह के कार्य क्यों करते हैं?'

'देखो काव्या, कुछ लोग ऐसी गतिविधियों द्वारा देश की एकता व शांति को भंग करना चाहते हैं। अकसर स्कूल व कालेजों में भी विद्यार्थी अपनी बात मनवाने के लिए तोड़-फोड़ का सहारा लेते हैं जो शिष्टाचार की निशानी नहीं है। आप उच्च आदर्शों को हृदय, में संजोए रखें। देश की रक्षा करें व आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र सेवा के लिए आगे आकर सच्चे देशप्रेमी बनें।'

'मैडम, फिर तो हमारे देश के सैनिक ही सच्चे देशप्रेमी हैं जो सदैव देश की रक्षा कर राष्ट्र सेवा कर रहे हैं। हम बच्चे कैसे देश की सेवा कर सकते हैं?' शार्दूल ने पूछा

अध्यापिका–बच्चो, आप छोटे हो और अपने छोटे–छोटे प्रयासों से ही समाज में बदलाव लाकर देश सेवा कर सकते हो। जैसे आपके पड़ोस में कोई अशिक्षित है तो उसे पढ़ाने की पहल करें। स्कूल में एन०एस०एस०, एन०सी०सी० से जुड़कर देश–सेवा कर सकते हो। स्कूल, घर तथा बाहर बिजली, पानी आदि प्राकृतिक संसाधनों की बचत करके देश–प्रेम में योगदान दे सकते हो। जंगलों, झीलों, नदियों, जंगली जीवों एवं प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करना, प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकम्प, सूखा इत्यादि में तथा विभिन्न दुर्घटनाओं जैसे रेल दुर्घटना, बस दुर्घटना आदि में बढ़–चढ़ कर सहयोग देना भी देश–सेवा व देश–प्रेम है।

बच्चो, आज आप सबका देशप्रेम का जज़्बा सिर्फ क्रिकेट मैच के जुनून के रूप में दिखाई देता है वह भी तब जब क्रिकेट मैच भारतीय टीम खेल रही हो तो देश–प्रेम उफान पर होता है लेकिन बाद में यह कम होता जाता है। यह सब करना बुरा नहीं किंतु देश–प्रेम इससे कहीं गहरी भावना है।

बच्चो, देश के विकास के मार्ग पर सतत आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। छोटी–छोटी अव्यवस्था पर सरकार को कोसने की बजाय हम नागरिकों के भी देश के प्रति कुछ कर्तव्य हैं जिनका पालन कर हम देश–प्रेम का परिचय दे सकते हैं। आखिर यह देश हमारा है। इसके लिए हमें करना होगा बुराइयों से कुछ संघर्ष और लेने होंगे कुछ संकल्प।

बच्चो, आप अभी छोटे हैं आपको वोट डालने का अधिकार नहीं है। फिर भी आपको पता होना चाहिए कि वोट का उचित प्रयोग करते हुए अच्छी छवि वाले प्रतिनिधि चुने जाने चाहिए क्योंकि अच्छी सरकार ही देश को आगे ले जा सकती है।

हर व्यक्ति अपने अपने क्षेत्र में उत्तमता हासिल करे जैसे आप लगन से पढ़ाई पढ़ें, विद्यालय में अनुशासन बनाएं। किसान, अध्यापक, डाक्टर तथा इंजीनियर आदि अपने–अपने क्षेत्र में परिश्रम व निष्ठा से कार्य करते हुए देश के विकास में सहयोग दें।

देश की अच्छी छवि बनाने में योगदान देना सच्चा राष्ट्र–प्रेम है। भारत–भ्रमण में आए विदेशी पर्यटकों से अच्छा–सा व्यवहार करें साथ ही विदेश–भ्रमण के दौरान भी व्यवहार में शिष्टता प्रदर्शित करें।

राष्ट्रीय झंडे, राष्ट्रगान तथा राष्ट्र के प्रतीक चिह्नों का सम्मान करें। देश की सम्पत्ति को नुकसान न पहुँचाएँ।

बच्चो, यदि एक पीढ़ी के देश–प्रेम ने देश को स्वतन्त्र करवाया तो आज आप जैसी युवा पीढ़ी का कर्तव्य है कि आप अपने ऐसे ही देश–प्रेम के कार्यों से देश को विकसित बनायें और अपने देश को विकसित देशों की श्रेणी में लायें।

अभ्यास

भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

मानचित्र	=	नक्शा
संस्कृति	=	सभ्यता का वह स्वरूप जो आध्यात्मिक एवं मानसिक विशिष्टता का द्योतक होता है
राष्ट्रवंदना	=	राष्ट्र अथवा देश का गुणगान
स्वाभाविक	=	प्राकृतिक
परतन्त्र	=	गुलाम
धर्मनिरपेक्ष	=	सभी धर्मों को समान मानना
शिष्टता	=	सभ्य व्यवहार
स्वाभिमान	=	आत्म-सम्मान
वात्सल्य	=	संतान के प्रति माता-पिता का स्नेह
संवर्द्धन	=	बढ़ाना
वशीभूत	=	वश में होना, अधीन
उल्लेखनीय	=	उल्लेख करने योग्य, बताने योग्य
लोकतांत्रिक	=	लोकतंत्र संबंधी
संरक्षण	=	रक्षा करना
पर्यावरण	=	चारों ओर का वातावरण
प्राकृतिक	=	कुदरती
आपदाओं	=	विपत्तियाँ
टिप्पणी	=	संक्षेप में प्रकट की गई राय
भद्दी	=	बुरी, गंदी

(ii) **लिंग बदलो**

अध्यापिका	________	सिंह	________
लाला	________	दास	________

(iii) **वचन बदलो**

तिरंगा	________	चेहरा	________	झील	________
बेड़ी	________	रेल	________	कक्षा	________
सीमा	________	चित्र	________		

(iv) **विपरीतार्थक शब्द लिखो**

पवित्र	________	परतंत्र	________	निर्माण	________

शांति	________	सहयोग	________	अव्यवस्था	________
साकार	________	उच्च	________		

(v) **पर्यायवाची शब्द लिखो**

भूमि	________	माँ	________	सम्पत्ति	________
जंगल	________	नदी	________	ध्वज	________
प्रगति	________	मनुष्य	________		

(vi) **वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो**

विद्या ग्रहण करने का स्थान ________
जिसकी आत्मा महान हो ________
तीन रंगों वाला ________
जो विद्या ग्रहण करे ________
अपना राज्य ________
शिष्टतापूर्ण आचरण और व्यवहार ________
इतिहास से संबंध रखने वाला ________
शहीद होने को तैयार ________

(vii) **विशेषण बनाओ**

भारत	________	राष्ट्र	________	देश	________
शिक्षा	________	विज्ञान	________	संस्कृति	________

(viii) **शुद्ध करो**

भूकमप	________	प्रकृतिक	________	संसकृति	________
महातमा	________	शान्ती	________	शिस्टाचार	________
सम्पत्ती	________				

(ix) **वाक्यों में प्रयोग करो**

ध्वज ____
संकल्प ____
अर्पित ____
मातृभूमि ____
विस्फोट ____
संग्राम ____

आकार ____

पर्यावरण ____

निमग्न ____

(x) (1) ये सब वे देशप्रेमी हैं।

इन दोनों का स्थान उच्च है।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'ये' 'इन' किसी निश्चित व्यक्ति का बोध कराते हैं अत: निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं।

जिस सर्वनाम से दूरवर्ती अथवा समीपवर्ती व्यक्ति, प्राणी, वस्तु और घटना का निश्चित बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे यह, ये, वह, वे।

(2) कुछ तिरंगा चित्रित कर रहे थे

आपके पड़ोस में कोई अशिक्षित है।

काव्या कुछ पूछने के लिए खड़ी हो गई।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'कुछ', 'कोई' किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं कराते, अत: अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं।

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति, प्राणी या वस्तु का बोध नहीं होता उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे कोई, कुछ।

विचार-बोध

(क) 1. बच्चे चित्र प्रतियोगिता में क्या-क्या बना रहे थे?

2. देश प्रेम से क्या अभिप्राय है?

3. प्रेम के संबंध में माँ और मातृभूमि का स्थान उच्च कैसे है?

4. स्वाधीनता-संग्राम के कुछ देशप्रेमियों के योगदान का वर्णन करो?

5. स्वतंत्रता के बाद किस प्रकार के नए भारत का निर्माण हुआ?

6. स्वतंत्रता के बाद देशप्रेम की परिभाषा कैसे बदली है?

(ख) 1. देश, राष्ट्र और देश-प्रेम किसे कहते हैं?

2. नागरिकों के देश के प्रति क्या कर्तव्य हैं जिनका पालन कर वे देशप्रेम का परिचय दे सकते हैं?

3. बच्चे देश की सेवा कैसे कर सकते हैं?

आत्म-बोध

1. घर, समाज और स्कूल- सभी जगह हमारे व्यवहार में देशप्रेम झलकना चाहिए।

2. स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनियाँ पढ़ें और प्रतिदिन प्रार्थना में इस विषय पर चर्चा करें।

पाठ-8

पेड़ की कहानी (आत्म-कथा)

मैं जब अपने गुणों का बखान करने लगूँ तो मुझ पर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने का दोष मत लगाएँ। मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि डींग नहीं हाँकूँगा। मिथ्या-कथन मेरा स्वभाव नहीं। न मैं गपोड़ शंख हूँ, न शेख चिल्ली। मैं हूँ आपका चिर-परिचित पड़ोसी, आपके आँगन का निवासी। वाटिका की शोभा, आँख का तारा, 'पेड़'। मैं जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा।

मैं नन्हे से बीज के रूप में धरती के गर्भ में छिपा रहता हूँ। जल, लवण, रसायन आदि का भोजन पाकर मैं पनपता हूँ, पुष्ट होता हूँ। अपनी जड़ें आस-पास बिखेर कर मज़बूती से पैर जमा देता हूँ। फिर छोटे-से अँकुर के रूप में भूमि फोड़ बाहर निकल कर सिर हिलाने लगता हूँ। बढ़ते-बढ़ते मैं विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेता हूँ।

'वृक्ष' सचमुच मेरा यह नाम आपको अवश्य सुहावना लगता है। इस नाम के ध्यान में आते ही आप भला क्या सोचते हैं? ठंडी और ताज़गी से भरपूर छाया, आस-पास खेलते हुए बच्चे, छाया-तले विश्राम करते हुए थके यात्री, स्वादिष्ट फल-बेर, जामुन, आम और न जाने क्या-क्या चित्र आपके मन में उभरते हैं। मेरा और प्राणी-जगत का चोली-दामन का साथ है। प्रकृति मुझे जीवन देती है। प्राणी मेरी देखभाल करते हैं। बदले में मैं उन्हें सहारा देता हूँ, उनके जीवन का आधार बनता हूँ।

मैं भले ही प्राणी-जगत की तरह गतिशील नहीं, परंतु मुझे पत्थर की भाँति जड़ समझना भूल होगी। अब तो मेरी गिनती प्राणियों में होने लगी है। मेरा भी अपना एक जीवन है। बसंत आने पर मैं भी आपकी तरह खुशी से खिल उठता हूँ और पतझड़ आने पर उदास होने का मेरा स्वभाव प्राणी-जगत से मिलता जुलता है।

छोड़िए इन नीरस बातों को! आइए, कुछ मतलब की बात करें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं सर्व-व्यापक हूँ- आप पूछेंगे कैसे? देखिए नगर के बाज़ार में आप सब जगह फल देखते हैं, नित्य फलाहार करते हैं- ये मेरे ही अंग हैं। रसोई घर में जलाने की लकड़ी, कुर्सियाँ, मेज़, खिड़कियाँ, दरवाज़े- सब मेरे ही घास-पत्तों से बना है। जिस गाड़ी या जहाज़ में आप यात्रा करते हैं , उसका निर्माण मेरी ही लकड़ी से हुआ है।

मैं प्राणी–जगत का जीवन–दाता हूँ। अन्न, फल, फूल आदि से उन्हें तृप्त तो करता ही हूँ, परंतु उससे भी बढ़कर उन्हें प्राण–वायु (ऑक्सीजन) का दान देता हूँ। जब प्राणी साँस लेते हैं या वस्तुएँ जलती हैं तो वायुमंडल में विद्यमान ऑक्सीजन कार्बनडाइऑक्साइड नाम की एक विषैली गैस में बदल जाती है। मेरे पत्ते इस विषैली गैस को पी जाते हैं और सूर्य के प्रकाश की सहायता से इसे फिर ऑक्सीजन और कार्बन में बदल देते हैं। ऑक्सीजन वायु में छोड़ देते हैं और कार्बन से पौधों में अन्न, सत्व और मिठास पैदा करते हैं। मेरे पत्ते प्रकृति की अद्‌भुत प्रयोगशालाएँ हैं। जहाँ विषैली गैस को प्राणवायु और जीवों के भोजन में बदलने का यह कार्य निरंतर होता रहता है। पुराणों में एक कथा आती है कि समुद्र मंथन से निकले भयंकर हलाहल (विष) को भगवान शंकर ने स्वयं ही पी लिया था और इस तरह से विश्व का कल्याण किया था। मुझे भी उनका अनुकरण करने का गौरव प्राप्त है।

मेरे पत्ते वाष्प–कण हवा में छोड़ते हैं जो हवा को ठंडा करते हैं और ठंडी हवा वर्षा लाने में सहायक होती है। वर्षा के जल से प्राणियों को जीवन मिलता है। खेती हरी–भरी होती है और प्राणियों को भोजन मिलता है। जंगलों ओर पहाड़ों में मैं अपने दल–बल के साथ मीलों लम्बी पंक्तियों और घने झुंडों में निवास करता हूँ। पक्षी मुझ पर बसेरा लेते हैं और पशुओं को मैं आश्रय देता हूँ।

मैं भूमि तल की उपजाऊ मिट्‌टी को वर्षा के जल में बह जाने से रोकता हूँ। मैं बाढ़–जल के वेग को कम करके धरती को नष्ट होने से बचाता हूँ। मेरे शरीर से प्राप्त होने वाले कच्चे माल से दुनिया के बड़े–बड़े कारखाने चलते हैं। मैं जीवनदायी अमूल्य औषधियों और जड़ी बूटियों को जन्म देता हूँ, जो प्राणियों के रोग का निवारण कर उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करती हैं। राम–रावण युद्‌ध में मेघनाथ के प्रहार से जब लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए तो मैंने ही संजीवनी बूटी से उन्हें प्राण–दान दिया था। सर्वत्र व्याप्त मलेरिया नाम के भयंकर रोग से जीवों की रक्षा करने वाली कुनीन मेरे ही एक भाई सिनकोना नाम के वृक्ष से प्राप्त होती है। मेरी निमोलियों के गुण कौवा तक जानता है। मेरी हरियाली आँखों को ज्योति देती है और मन को प्रसन्नता।

पीपल, नीम, वट, चीड़, ताड़, नारियल, शीशम, देवदार आदि मेरे असंख्य भाई विश्व के हर कोने में बसे हुए हैं और प्राणी–जगत का कल्याण करने में हर समय लगे रहते हैं। परोपकार मेरे जीवन का ध्येय है। न मैं किसी से ईर्ष्या रखता हूँ, न द्‌वेष। बुराई का बदला भलाई से देना मेरे जीवन का आदर्श है। लकड़हारा मेरे शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर देता है, किंतु बदले में मैं उसके कुटुम्ब का पालन करता हूँ। बच्चे ईंट–पत्थरों के प्रहार से मुझे घायल कर देते हैं, फिर भी मैं उनसे प्यार करता हूँ। ईंट–पत्थर के बदले में उन्हें जामुन, बेर और पके आम देकर प्रसन्न कर देता हूँ। वेद और पुराण मेरी महिमा गाते हैं। दूसरों का भला करने में ही मैं अपने जीवन को सार्थक समझता हूँ। इसी में अपने को धन्य मानता हूँ और मानता रहूँगा।

अभ्यास

I भाषा-बोध :

(i) शब्दार्थ :-

मिथ्या-कथन = झूठ बोलना,
हलाहल = एक प्रकार का विष,
निवारण = दूर करना,
निरंतर = लगातार
द्वेष = वैर भाव
बखान = कहना
ज्योति = रोशनी, प्रकाश
तृप्त करना = संतुष्ट करना,
अनुकरण = अनुसार कार्य करना,
पतझड़ = जिस ऋतु में पत्ते झड़ जाते हैं।
औषधि = दवाई
सर्वत्र = सब जगह
आत्मकथा = अपनी कहानी

(ii) वाक्यों में प्रयोग करो

प्रकृति ____

प्राणवायु ____

झुंड ____

पंक्तियों ____

प्रहार ____

(iii) मुहावरों व लोकोक्तियों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए

आँखों का तारा ________________________________

चोली दामन का साथ ________________________________

डींग हाँकना ________________________________

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना ________________________________

(iv) शुद्ध रूप लिखें

तिपत	________	दवेष	________	जयोति	________
नीवारण	________	आकसीजन	________	आशरय	________
प्राणीयों	________	सवादिष्ट	________	जामून	________
खीड़कियाँ	________				

(v) समानार्थक लिखिए

ज्योति	________	हलाहल	________	निवारण	________
मज़बूती	________	परिचित	________	विशाल	________

नीरस ________ असंख्य ________ उपजाऊ ________
मूर्च्छित ________

(vi) **निम्न वाक्यों में संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो और बताओ किस प्रकार की संज्ञा है**

1. मैं नन्हे से बीज के रूप में धरती के गर्भ में छिपा रहता हूँ।
2. मैं विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेता हूँ।
3. नगर के बाज़ार में आप फल देखते हैं।
4. पीपल, नीम, वट, चीड़ आदि मेरे असंख्य भाई हैं।
5. वेद-पुराण मेरी महिमा गाते हैं।

(vii) **विपरीत शब्द लिखो**

जीव ________ रस ________ निर्माण ________
नगर ________ विशाल ________ भूमि ________
हलाहल ________ पतझड़ ________

(viii) **वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो**

अपना स्वयं लिखा हुआ जीवन-चरित्र ________
फल खाने वाला ________
जीवन देने वाला ________
सबमें रहने वाला ________

(ix) **भाववाचक संज्ञा व सर्वनाम छाँटो**

1. 'वृक्ष' सचमुच मेरा नाम आपको सुहावना लगता है।
2. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर मैंने ही उनके प्राण बचाए थे।
3. बुराई का बदला भलाई से देना मेरे जीवन का लक्ष्य है।
4. मेरी हरियाली आँखों को ज्याति देती है और मन को प्रसन्नता।

II विचार-बोध

(क)
1. पेड़ किस रूप में धरती में छिपा रहता है?
2. वह कैसे पनपता है?
3. पेड़ किसके जीवन का आधार बनते हैं?
4. पेड़ का स्वभाव प्राणी-जगत से किस प्रकार मिलता-जुलता है?
5. पेड़ के अंग कौन-कौन से हैं?
6. प्राणी-जगत का जीवन दाता कौन है?
7. वायु-मंडल में कौन-कौन सी गैसें मिली होती हैं?

8. पेड़ के पत्ते हवा में क्या छोड़ते हैं ?

9. वर्षा का जल किस प्रकार उपयोगी होता है ?

10. लक्ष्मण को प्राण दान कैसे मिला था ?

11. कुनीन किस प्रकार प्राप्त होती है ?

(ख) 1. पेड़ किस प्रकार शिव का अनुसरण करते हैं ?

2. पेड़ हमें परोपकार का पाठ कैसे पढ़ाते हैं ?

III आत्म-बोध

1. अपने घर आँगन को पेड़-पौधों से सजाओ।

2. एक गमले में तुलसी का पौधा लगाओ और उसकी देखभाल करो।

3. पेड़ों के समान परोपकारी बनो।

4. पेड़ों के समान गुणकारी बनो।

पाठ-9

दोहा अंत्याक्षरी

आज रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर कक्षा में बहुत-से विद्यार्थी अवकाश पर थे। कुछ विद्यार्थी ही उपस्थित थे उनकी भी पढ़ने में रुचि नहीं थी। अध्यापिका कक्षा में प्रवेश करते ही बच्चों के मनोभावों से अवगत हो गई थी इसलिए खेल-खेल में बच्चों को पढ़ाने की युक्ति सोचकर बोली, 'चलिए आज पढ़ाई की भी छुट्टी। आज हम अंत्याक्षरी खेलेंगे।'

सभी बच्चे उत्साहित होकर फिल्मी गानों की खुसर-फुसर करने लगे। अध्यापिका उनकी धीमी आवाज़ों को सुनकर बोली, 'अरे, नहीं...नहीं... मैं फिल्मों की अंत्याक्षरी की बात नहीं कर रही हूँ। फिल्मी गानों की अंत्याक्षरी तो आप अपने घर के सदस्यों और मित्रों के साथ अक्सर खेलते ही रहते होंगे पर अभी आप मेरे साथ दोहा अंत्याक्षरी का खेल खेलोगे। इस बहाने हम कबीर, रहीम जैसे महान कवियों को भी स्मरण कर लेंगे। बच्चो तैयार हो न? ये तो अच्छा हुआ कि आज कक्षा में लड़के और लड़कियों की संख्या बराबर है यानि आठ-आठ। अब टीम 'क' के लड़के एक तरफ बैठ जायें और टीम 'ख' की लड़कियाँ दूसरी ओर बैठ जायें। लीजिए दो टीमें इस खेल को खेलने के लिए तैयार हो गईं। अब मैं एक दोहे से अंत्याक्षरी का शुभारम्भ करती हूँ' :-

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परति निसान॥

टीम 'क' — 'नहाये धोये क्या भया, जो मन का मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोय बास न जाय।।'

टीम 'ख' — 'यो रहीम सुख होत है, उपकारी के संग।
बाँटन बारे को लगे, ज्यों मेंहदी के संग।।'

टीम 'क' — 'गुरु कुम्हार शिव कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दे, बाहर मारै चोट।।'

टीम 'ख' — 'टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पौइए, टूटे मुक्ताहार।।'

टीम 'क' — 'रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजे डार।
जहाँ काम आवै सुई, का करे तलवार।।'

टीम 'ख' — 'रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरौ चटकाय।
टूटे ते फिरि न जुरै, जुरै गाठि परि जाय।।'

घंटी बजने पर पीरियड समाप्त हो गया था। दोहा अंत्याक्षरी भी खत्म हो गई थी। दोनों टीमों ने एक से बढ़कर एक दोहे सुनाए।

अभ्यास

भाषा-बोध

शब्दार्थ

रक्षा-बंधन	=	राखी का त्योहार	पर्व	=	उत्सव
प्रवेश	=	अन्दर आना	मनोभाव	=	मन के भाव
अवगत	=	परिचित होना	युक्ति	=	उपाय
अंत्याक्षरी	=	अन्तिम अक्षर से शुरू होने वाला खेल			
उत्साहित	=	उत्साह से भरपूर	शुभारम्भ	=	अच्छे ढंग से शुरू करना
जड़मति	=	मूर्ख	सुजान	=	सज्जन
रसरी	=	रस्सी	सिल	=	पत्थर
कुम्हार	=	घड़े बनाने वाला	शिष	=	शिष्य
मुक्ताहार	=	मोतियों की माला	खोट	=	दोष
कुम्भ	=	घड़ा			

वचन बदलो

लड़का = ________
बच्चा = ________
कवि = ________
टीम = ________
मित्र = ________
लड़की = ________
दोहा = ________
घंटी = ________

लिंग बदलो

कवि = ________
सदस्य = ________
गुरु = ________
कुम्हार = ________
शिष्य = ________

विपरीत शब्द लिखो

अवकाश	=	________	उपस्थित	=	________
रुचि	=	________	उत्साहित	=	________
प्रेम	=	________	समाप्त	=	________
सुख	=	________	जड़मति	=	________
लघु	=	________			

पर्यायवाची लिखो

मीन = ________,________

तलवार = ________,________

हाथ = ________,________

धागा = ________,________

गुरु = ________,________

बास = ________,________

कुम्भ = ________,________

उपकार = ________,________

पढ़ो और समझो

रसरी	=	रस्सी	निसान	=	निशान
आवत	=	आना	धोय	=	धोना
बाँटन		बाँटना	गढ़ि-गढ़ि	=	गढ़ना
काढ़ै	=	निकालना	मनाइए	=	मनाना
पौइए	=	पिरोना	बड़ेन	=	बड़ों
डार	=	डालना	तोरौ	=	तोड़ना
जुरै	=	जुड़ना	गाँठि	=	गाँठ

वाक्य बनाओ

पर्व = ____

रुचि = ____

अंत्याक्षरी = ____

अभ्यास = ____

खुसर-फुसर = ____

अवकाश = ____

विचार-बोध

(क)
1. कक्षा में बहुत से विद्यार्थी अवकाश पर क्यों थे ?
2. विद्यार्थी किस अंत्याक्षरी की खुसर-फुसरकरने लगे ?
3. मूर्ख सुजान कैसे बन सकता है ? दोहे के आधार पर लिखें।
4. उपकारी का स्वभाव कैसा होता है ?
5. गुरु और कुम्हार के काम में क्या समानता होती है ?

6. सज्जनों की तुलना किससे की गई है ?

7. 'हर वस्तु का अपने-अपने स्थान पर महत्व होता है।' पाठ से चुनकर वह दोहा लिखें।

8. रहिमन धागा ———— गाँठि परि जाए। इस दोहे का अर्थ लिखें।

(ख) 1. अंत्याक्षरी में गाए जाने वाले दोहों से आपने क्या सीखा, अपने शब्दों में लिखो।

2. दोहा अंत्याक्षरी के अतिरिक्त और कौन-कौन-सी अंत्याक्षरी खेली जा सकती है ?

आत्म-बोध

1. पाठ के सभी दोहों के अर्थ समझते हुए कंठस्थ करें।

2. संत कबीर, रहीम और बिहारी के दोहों का संकलन करें।

3. वर्तमान युग के संदर्भ में नए दोहों की रचना करें।

पाठ-10

राष्ट्रीयता का तीर्थ खटकड़ कलां

बच्चो, क्या आपने कभी खटकड़ कलां का नाम सुना है। नहीं सुना! यह अमर शहीद भगत सिंह के पैतृक गाँव का नाम है। इस स्थान का नाम खटकड़ कलां है। वैसे तो खटकड़ कलां ज़िला नवांशहर शहीद भगत सिंह नगर का एक छोटा-सा गाँव है पर यह किसी बड़े तीर्थ-स्थल से कम नहीं। आज़ाद भारत में शहीदों से जुड़े हुए स्थान तीर्थों से कम माने भी क्यों जायें?

अमर शहीद भगत सिंह का जन्म लायलपुर, पाकिस्तान के बंगा चक नम्बर 105 में हुआ था, खटकड़ कलां में नहीं। अब जन्म-स्थान पाकिस्तान में छूट जाने के कारण पैतृक गाँव खटकड़ कलां को ही जन्म-स्थान के बराबर आदर-सत्कार दिया जा रहा है। इसलिए इसे तीर्थ-स्थल के समान भी माना जाता है।

क्या आप चंडीगढ़ से जालंधर बस में गये हैं? जैसे ही नवांशहर से जालंधर जाने वाली सड़क पर बस दौड़ती है तो केवल दस किलोमीटर के बाद सड़क पर शहीद भगत सिंह की कांस्य-प्रतिमा व स्मारक आपकी आँखों से ओझल नहीं रह पाते और उस पल मन ही मन ''इंकलाब ज़िंदाबाद'' ज़रूर गूँज जाता है। बच्चो, शहीद भगत सिंह का यह प्रिय नारा था। जब भी वे कोई क्राँतिकारी काम शुरू करते तब ''इंकलाब ज़िंदाबाद'' का नारा बुलंद करते। आपको भी

उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और रचनात्मक कार्य करने चाहिए। यह मत सोचो कि हमारी उम्र छोटी है। भगत सिंह ने छोटी उम्र में ही बड़े काम कर दिखाये।

आपको अमृतसर के जलियाँवाला बाग का दु:खांत मालूम है कब हुआ था। सन् 1919 को वैशाखी वाले दिन यानी 13 अप्रैल को। वहाँ एक जनसभा में एकत्रित हुए लोगों पर अंग्रेज़ पुलिस अधिकारी जनरल डायर के आदेश पर अंधाधुंध गोलियाँ चलायी गयी थीं। उस समय भगत सिंह बहुत छोटे थे पर वे अपनी बहन अमरजीत कौर को बताये बिना अमृतसर गये थे और उस बाग़ से रक्त से भीगी मिट्टी लेकर लौटे थे। कितने संवेदनशील व भावुक थे शहीद भगत सिंह तभी तो बचपन में अपने पिता से उन्होंने कहा था कि खेतों में बंदूकें क्यों नहीं बो देते जिससे हम गुलामी से पीछा छुड़ा सकें। देखा, भगत सिंह हर समय कैसे स्वतंत्रता प्राप्त की जाये, इसी उधेड़बुन में लगे रहते थे।

शहीद भगत सिंह को न केवल पढ़ने का बल्कि लिखने व अभिनय करने की भी ललक थी। वे क्रांतिकारी साहित्य खूब मन लगाकर पढ़ते। जहाँ तक लिखने की बात है तो यह कहा जा सकता है कि यदि वे क्रांतिकारी न होते तो एक लेखक के रूप में ज़रूर प्रसिद्ध होते।

जब उनके क्रांतिकारी विचारों से माता विद्यावती व पिता किशन सिंह अच्छी तरह परिचित हो गये तब उन्होंने भगत सिंह को गृहस्थी की बेड़ियों मे बाँधना चाहा पर वे तो भारतमाता की गुलामी की बेड़ियाँ काटने का संकल्प किए हुए थे। इसलिए घर छोड़कर भाग खड़े हुए और सीधे कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार-संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने "बलवंत" नाम से लेख लिखे जिन्हें अगर पढ़ने का मौका मिले तो आप सहज ही यह विश्वास कर लेंगे कि वे लेखन में ही टिके रहते तो कितने बड़े लेखक होते। उर्दू, हिंदी व अंग्रेज़ी पर उन्हें एक समान अधिकार प्राप्त था।

शहीद भगत सिंह की स्मृति में 23 मार्च को प्रतिवर्ष खटकड़ कलां व फिरोज़पुर के निकट सतलुज के किनारे हुसैनी वाला में मेले लगते हैं। वे अपने साथियों राजगुरु व सुखदेव के साथ 23 मार्च, 1931 को हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर झूल गये थे। सुखदेव पंजाब के लुधियाना नगर में ही जन्मे थे तो राजगुरु महाराष्ट्र प्रदेश के वासी थे परंतु भारत माता की गुलामी की बेड़ियाँ काटने के लिये विभिन्न राज्यों के क्रांतिकारी एक-साथ चले थे और फाँसी के फंदे चूमे थे। बच्चो, उसी आज़ादी की रक्षा करने के लिए क्रांतिकारी वीरों की राष्ट्रीय-भावना आज भी उतनी ही ज़रूरी है।

खटकड़ कलां में शहीदों की स्मृतियों को बनाये व संजोये रखने के लिये प्रतिमा के पीछे स्मारक बनाया गया है। इसमें शहीद भगत सिंह व उनके क्रांतिकारी साथियों के चित्र लगाये गये हैं। भगत सिंह की डायरी का एक पृष्ठ स्वागत करता है और प्रवेश करते ही भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के चित्र लगे हुए हैं। दुर्गा भाभी का चित्र भी देखने को मिलेगा। सांडर्स को मार कर लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेकर जब भगत सिंह लाहौर से रेलगाड़ी में फरार हुए थे तब दुर्गा भाभी ने ही उनकी सहयात्री बनकर उन्हें भागने में सहायता की थी।

शहीद भगत सिंह को जो काव्य-पंक्तियाँ बहुत प्रिय थीं और जिन्हें वे अक्सर गुनगुनाया करते थे, वे भी स्मारक में एक पट्टिका पर लिखी हुई हैं:

सेवा देश दी करनी बड़ी ओखी
गल्लां करनीयां फेर सुखालियां ने
जिहना देश सेवा विच पैर पाया
उहना लख मुसीबतां झलीयां ने!

भगत सिंह के आदर्श शहीद करतार सिंह सराभा थे और वे उनका चित्र हर समय अपनी जेब में रखते थे। सराभा का चित्र भी स्मारक में लगा हुआ है। शहीद भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह का चित्र भी देखने को मिलेगा। वे उनसे भी प्रभावित थे। अजीत सिंह का निधन 15 अगस्त,1947 को हुआ था। जैसे ही उन्होंने डलहौजी में भारत के स्वतंत्र होने का समाचार सुना तब उन्होंने कहा कि हमारा प्रण पूरा हुआ और प्राण त्याग दिये।

स्मारक में जिसे देखकर आपकी आँखें भीगे बिना न रह पायेंगी वह एक शीशे के शो-केस में रखा मर्तबान है, जिसमें सतलुज के किनारे से चिता के स्थान से लायी गयी मिट्टी है। अंग्रेज़ सरकार ने जनता के रोष को देखते हुए चुपके से सतलुज के किनारे भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का अंतिम-संस्कार कर दिया था। बहन अमरकौर जब अपने माता-पिता के साथ वहाँ पहुँची तो वह मिट्टी आँचल में सहेज लायीं- किसी अमूल्य धरोहर की तरह। क्या वह किसी धरोहर से कम है?

गाँव में पैतृक घर राष्ट्र के नाम समर्पित है। भगत सिंह की माता विद्यावती ने स्वतंत्रता के बाद यहीं अपना जीवन बिताया। वे मामूली गाँव वासी स्त्री की तरह रहती थी पर बड़े-बड़े लोग उसकी चरण धूलि लेने आते थे। आज भी उस घर में माता विद्यावती द्वारा रसोई के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले बर्तन, कातने के लिए चरखा, छोटी-सी पीढ़ी, जो सामान वहाँ पड़े हैं, वे भी उनके सादगी-भरे जीवन की गवाही देते हैं। उनको ''पंजाब माता'' का सम्मान भी दिया गया था।

बच्चो, जब कभी अवसर मिले तब खटकड़ कलां जाकर स्मारक ज़रूर देखना। इसीलिए तो ये पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं:

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।

बच्चो, खटकड़ कलां शहीद भगत सिंह ही नहीं, बल्कि शहीदों की स्मृति संजोये एक स्मारक है, स्मारक ही नहीं, एक तीर्थ है और ऐसे तीर्थ की यात्रा न करने वाला अभागा ही कहलायेगा।

–कमलेश भारतीय

अभ्यास

I भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

प्रसिद्ध = मशहूर	स्मारक = याद में	प्रण = प्रतिज्ञा
धूलि = धूल	सम्मान = आदर	धरोहर = अमानत
उम्र = आयु	प्रतिमा = मूर्ति	बुलन्द = ऊँचा
पट्टिका = पटिया, तख्ती	पैतृक = पिता का	कांस्य = ताँबे और टिन से बनी एक धातु
सहयात्री = साथ यात्रा करने वाली		

(ii) समानार्थक शब्द लिखो

आज़ाद	________	शहीद	________	प्रसिद्ध ________
क्राँतिकारी	________	स्वागत	________	

(iii) शुद्ध रूप लिखो

समिति	________	परसिद्ध	________	पैतरिक	________
सवतंत्रता	________	जलियावाला	________	समारक	________
सनवेदनशील	________				

(iv) 'शील' 'शाली' 'कारी', 'ता', शब्दांशों को जोड़कर दो-दो नए शब्द लिखो

शील	शाली	कारी	ता
________	________	________	________
________	________	________	________

(v) वैसे तो खटकड़ कलां ज़िला नवाँशहर का छोटा-सा गाँव है पर यह किसी तीर्थ-स्थल से कम नहीं। क्या आपने खटकड़ कलां का नाम सुना है ?

ऊपर लिखे वाक्यों में 'वैसे तो' 'पर' रेखांकित शब्द दो वाक्यों का परस्पर संबंध जोड़ते हैं, अतः संबंध वाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं।

-'क्या' शब्द प्रश्न का बोध कराता है, अतः यह प्रश्न वाचक सर्वनाम का उदाहरण है।

(vi) भूत और भविष्य काल लिखें

एक छोटा-सा गाँव है = वर्तमान काल

-------------= भूतकाल

-------------= भविष्यकाल

II विचार-बोध

(क) 1. भगत सिंह के पैतृक गाँव का नाम क्या है?

2. भगत सिंह का नारा क्या था?

3. वे कैसा साहित्य पढ़ते थे?

4. उनके माता-पिता का क्या नाम था?

5. उन्हें किन साथियों के साथ फाँसी की सज़ा मिली?

6. लाला जी की मौत का बदला उन्होंने कैसे लिया?

7. अजीत सिंह का निधन कब हुआ?

8. पंजाब माता का सम्मान किसे दिया गया?

(ख) 1. जलियाँवाला बाग़ की घटना अपने शब्दों में लिखिए।

2. भगत सिंह को अमृतसर की मिट्टी ने किस प्रकार भावुक बना दिया? जलियाँवाला बाग़ हत्या कांड के आधार पर स्पष्ट करो।

3. आप कैसे कह सकते है कि यदि भगत सिंह क्राँतिक्रारी न होते तो बहुत बड़े लेखक होते?

4. भगत सिंह जैसे शहीदों की शहादत से देश आज़ाद हुआ। अपने देश की रक्षा के लिए आप क्या कर सकते हैं?

5. भगत सिंह के कौन-कौन से गुण आप अपनाना चाहेंगे?

III आत्म-बोध

1. शहीद भगत सिंह का चित्र कक्षा में लगायें।

2. पंजाब के स्वतंत्रता सेनानियों की सूची तैयार करें।

3. जब कभी उधर जाओ, तो खटकड़ कलां में भगतसिंह का स्मारक अवश्य देखकर आओ।

4. किसी महान पुरुष की जीवनी को पढ़ें और उनके गुणों को जीवन में उतारने का प्रयत्न करें।

पाठ-11

कराहती दहाड़

हु....ऊ.....ऊ.....हु..ऊ..... वन मानुषों की आवाज़ से चिड़ियाघर गूँज रहा था। बच्चे पेड़ों पर उछलते-कूदते इन प्राणियों के करतबों से आनंदित हो रहे थे, तभी अचानक ज़ोर की दहाड़ सुनाई दी। बच्चे सहम गए। कुछ साहसी बच्चे एक विशाल पिंजरानुमा आवास की ओर बढ़ गए।

तनु : यहाँ तो कुछ दिखाई नहीं देता।

संतोष : अरे वो देखो..... बड़ी बिल्ली-सा कोई जीव इधर आ रहा है।

कोमल : बिल्ली। पिंजरे में!

शारदा : बाप रे बाप...... इतना बड़ा बाघ। भागो..........

बाघ : बच्चो, दिल के सच्चो, डरो नहीं, मैं तुमसे बातें करने आया हूँ।

मधु : अरे इसकी बातों में न आओ, बड़ा खूँखार और चालाक है यह। एक ब्राह्मण को सोने के कंगन का लालच दे उसे मारकर खा गया था।

बाघ : अरे, वह तो कहानियों में होगा। सच बताऊँ, अब धरती का खतरनाक जानवर मैं नहीं मानव है, मानव, हा....हा....हा..... बाघ की हँसी पर चकित हो सब पिंजरे के पास आ गये।

कोमल : तुम तो बिल्ली जैसे हो.......पर इतने बड़े !

बाघ : बिल्ली प्रजाति से जो हूँ, पर बिल्ली नहीं।

संतोष : अच्छा बताओ आप हो कौन?

बाघ : अरे, मेरी पीली-संतरी चमड़ी पर काली धारियों को देखकर भी नहीं पहचाना...... मुझे बाघ कहते हैं।

शारदा : अच्छा बघिरा जी, तुम्हारा निवास तो खुले आसमान तले विशाल जंगल है, झर-झर बहते झरने, स्वच्छंद विचरते वन प्राणी, पुष्प-लताओं से सुसज्जित वन......., हैं न।

बाघ : बस बस, मत कुरेदो मेरे जख़्मों को...... यह स्वार्थी, लालची, घमंडी मानव हम वन प्राणियों के प्राकृतिक आश्रय-स्थल को नष्ट करता जा रहा है। माँ बताती थी जब हम दो भाई-बहन जन्में तो हमारा वजन मात्र एक-एक किलो था। आँखें बंद .... एक दम असहाय।

मधु : अब काफी भारी लगते हो!

बाघ : यह क्या? हमारा शरीर तो 11–11 फुट लम्बा होता है और वजन 300 किलो तक हो जाता है 10 से 20 वर्ष की आयु तक।

शारदा : बचपन में तुम्हें सम्भालना मुश्किल होता होगा?

बाघ : अरे, छह से आठ सप्ताह तक माँ का दूध पीते हैं। फिर अठारह महीने की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते माँस का स्वाद चखने लगते हैं। माँ के साथ घूमते हुए शिकार के दाँव-पेच सीखते हैं। 4 वर्ष तक तो हम युवा हो जाते हैं।

कोमल : फिर अपना घर परिवार?

बाघ : हम अकेले रहना पंसद करते हैं। एक विशेष गंध के द्वारा अपनी सीमा निर्धारित कर लेते हैं मजाल है कोई सीमा के भीतर आ जाए अन्यथा प्राणों के लाले पड़ जाएं।

संतोष : अच्छा, यहाँ भोजन-वोजन मिलता है?

बाघ : हाँ जीने के लिए खाना पड़ता है। पता नहीं कब का और किसका माँस? अरे! जंगल में चीतल, हिरन, बारहसिंघा, नील गाय, जंगली भैंसों के शिकार में जो आनंद और मस्ती भरा भोजन होता है वह यहाँ कहाँ? कभी-कभी तो सोचते हैं कि क्या सचमुच हम बाघ हैं?

तनु : अरे उदास क्यों होते हो? सभी मानव एक-से नहीं। देखो, राजस्थान में रणथंबोर, गुजरात में गिर वन और पश्चिम बंगाल में सुन्दरवन में तुम्हें संरक्षित किया गया है फिर भी कभी-कभी तुम आदमखोर बन जाते हो।

बाघ : हम आदमी को नहीं मारते। हाँ, पर मज़बूरी-वश जैसे आत्मरक्षा, बीमारी, कमज़ोरी या बुढ़ापे में ही आदमखोर बनना पड़ता है। फिर पेट तो भरना ही है। पर मानव हमारी हड्डियों, खाल, नाखून आदि अंगों के बदले पैसा कमाने के लिए हमारा शिकार करता है। देवी-देवताओं का वाहन कहा जाने वाला, भारत सहित कई एशियाई देशों का राष्ट्रीय प्राणी हूँ। फिर भी ऐसा बर्ताव!

शारदा : फिर भी तुम्हारी संख्या घटती जा रही है।

संतोष : हाँ, अब एशिया में मात्र 2100 बाघ हैं। 1400 भारत में, 200 बंगलादेश में, लगभग 150 नेपाल में और 100 के करीब भूटान में। सफेद बाघ का तो नामोनिशान मिटने को है हमारे देश में।

मधु : अरे, इनकी संख्या में वृद्धि के लिए टाइगर परियोजना भी चल रही है।

बाघ : पर फिर भी देखो, चिड़ियाघर में पिछले दिनों हमारे कई साथी चल बसे।

हिमाचल से लाए एक शावक को इतना नशीला टीका दिया कि वह भी चल बसा।

शारदा : न जाने मानव क्यों इतना स्वार्थी हो गया? परमेश्वर की अनुपम सृष्टि वन और वन सम्पदा के नाश पर तुला हुआ है। केवल पर्यावरण-दिवस पर अख़बारों में छपने के लिए मगरमच्छ के आँसू बहाता है।

बाघ : अगर सचमुच वन और वन्य-जीवों पर ध्यान दें तो यह धरा कितनी सुन्दर हो जाए! (तभी अचानक सुरक्षा कर्मी आ जाता है।)

सुरक्षा कर्मी: बच्चो इस खूँखार जानवर के नज़दीक क्यों खड़े हो? चलो.....चलो, दूर हटो.....आगे जाओ.....आगे।

बाघ : देखा बच्चो.....कितना निर्दयी है यह! अच्छा मेरे और साथियों से मिल लो, विदा ....

सभी बच्चे :

मत व्यथित हो मित्र हम सब,
मिलकर तुम्हें बचाएँगे।
शस्य-श्यामला इस धरा को
वन और वन्य-जीवों से सजाएंगे।
(सुरक्षा कर्मी आश्चर्यचकित हो बच्चों को देखता है।)

अभ्यास

भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

वन-मानुष = एक तरह का बंदर

पिंजरानुमा = पिंजरे के आकार का

प्रजाति = पशु पक्षियों आदि का वह समूह, जिसमें सभी सदस्यों के नाक, कान, कपाल, केश आदि के आकार-प्रकार, रूपरंग आदि में समानता हो।

आश्रय-स्थल= शरण/ठिकाने का स्थान

आदमख़ोर = नर मांस भक्षी

सुरक्षा कर्मी = सुरक्षा करने वाली कर्मचारी

खूँखार = ज़ालिम, खूनी, डरावना

(ii) **मुहावरों के अर्थ दे दिये हैं। अर्थ समझते हुए वाक्य बनाओ**

ज़ख्म कुरेदना = बीते हुए कष्ट की याद दिलाना = ________________________________

नामोनिशान मिटाना =	कुछ भी निशान शेष न रहना =	______________________________
चल बसना =	मर जाना =	______________________________
प्राणों के लाले पड़ना=	जान खतरे में पड़ना =	______________________________
मगरमच्छ के आँसू बहाना =	झूठा रोना =	______________________________

(iii) **लिंग परिवर्तित करो**

बिल्ली	________	देवी	________	युवक	________
ब्राह्मण	________	बाघ	________	माली	________

(iv) **वचन बदलो**

बिल्ली	________	कहानी	________
हड्डी	________	देवी	________
धारी	________	नदी	________

(v) **पर्यायवाची शब्द लिखो**

नदी	________	वन	________	धरा	________
प्राणी	________	पुष्प	________	मानव	________

(vi) **कोष्ठक में दिए शब्द का सही रूप प्रयोग कर वाक्य बनाओ**

1. आज मानव कितना स्वार्थी बन गया है। (स्वार्थ)
2. मानव ——— सम्पदा के विनाश पर तुला है। (प्रकृति)
3. बाघ हमारा ———— प्राणी है। (राष्ट्र)
4. साँप ———— होता है। (विष)
5. जादूगर का खेल देखकर बच्चे ——— हो रहे थे। (आनन्द)

विचार-बोध

(क)
1. बाघ किस प्रजाति का प्राणी है ?
2. पेड़ों पर कौन-से जानवर उछलते-कूदते हैं ?
3. भारत का राष्ट्रीय प्राणी किसे कहा जाता है ?
4. वन्य-जीवों का वास्तविक आवास कहाँ है ?
5. बाघ का प्रिय आहार क्या है ?
6. बाघ कितने वर्ष में युवा हो जाता है ?
7. एशिया में लगभग कितने बाघ पाए जाते हैं और कहाँ-कहाँ ?
8. बाघ आदमखोर कब बनता है ?

(ख) 1. बाघ की प्रमुख विशेषताएँ लिखो।

2. बचपन से युवा होने तक बाघ किसके संरक्षण में रहता है और क्या करता है?

3. बाघ हमारे गौरव का प्रतीक है, कैसे?

4. बाघ को बचाने के लिए भारत सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?

5. मानव बाघों का शिकार क्यों करता है?

आत्म-बोध

1. चिड़ियाघर की सैर पर जाओ और अपने प्रिय जानवर के बारे में जानकारी एकत्र करो।
2. वन्य-जीवों के चित्रों का संग्रह करो।
3. लुप्त हो रहे प्राणियों की सूची बनाओ।

रचना-बोध

आपने चिड़ियाघर की सैर की है वहाँ आपने जो-जो देखा, अपना अनुभव दस पंक्तियों में लिखो।

पाठ-12

शून्य........, नहीं अनन्त !

सूरज गोल, चंदा गोल,
अनन्त नभ के तारे गोल,
मैं भी हूँ कुछ ऐसा ही,
मूल्य मेरा बड़ा अनमोल।

प्यारे साथियो पहचाना! अरे, सीधे तो दिख रहा हूँ। तुम जानते ही हो सारी प्रकृति गणित पर आधारित है। दिन, रात, सप्ताह, मास, वर्ष आदि या यूँ कहूँ गणित बिना सब सून......! पर मेरे बिना गणित सून। अरे मैं हूँ तुम्हारा प्रिय शून्य! हँसे क्यों? अच्छा, कुछ के शून्य अंक आ जाते होंगे! ....तो उसमें मेरा क्या दोष? मेहनत करो और छू लो आसमां।

कितना आसान-सा अंक चिह्न '0' हूँ मैं, पर जानते हो मेरे आविष्कार के लिए विद्वानों ने बड़ी तपस्या की है। वैसे तो सभ्यता के प्रारंभ में ही मानव ने पाँच-पाँच, दस-दस, बीस, दर्जन आदि को आधार बनाकर गणना प्रारंभ कर दी थी पर समस्या बनी रही। वह तिनकों, कौड़ियों, कंकर आदि से याद रखने की कोशिश करता। अत: अंक चिह्न बनाने लगा।

प्राचीन मिस्र के लोगों ने एक अंक के लिए 1, रेखा पर दस के लिए '∩' चिह्न बीस के लिए '∩∩' और चालीस के लिए '∩∩∩∩' आदि चिह्न बनाए। पर शून्य नहीं था। सोचो, हज़ार लिखने के लिए क्या करते होंगे?

अशोक के शिलालेखों में जो सिन्धु सभ्यता पर आधारित चिह्नों में रेखाओं और विशेष चिह्न का प्रयोग मिलता है जैसे चार (4) के लिए X, आठ के लिए XX और दस के लिए और बीस के लिए *3*

तीसरी शताब्दी में बेबीलोन निवासियों ने गणना के लिए 60 को आधार चिह्न बनाया अर्थात ' ' 60 के लिए, 64 के लिए , 3604 के लिए पर मेरा आविष्कार नदारद। हाँ, मध्य अमेरिका वासियों ने कोशिश की और मुझे रूप दिया ' '।

बाप रे बाप! कितनी जटिल रही होगी उस समय गणना करनी, व याद रखनी। यदि यही चिह्न अब भी होते तो नानी याद आ जाती सबकी।

मेरा भारत महान, भारतीय मनीषियों के ज्ञान के आगे विश्व नतमस्तक। वैदिक काल में मेरा प्रचलन एक बिन्दु (.) के रूप में हुआ। बिन्दु हाँ, जैसे बिन्दु-बिन्दु से सागर बनता है या

कहें बिन्दु में ही सागर समाहित। भले ही प्रारंभ में मेरा रूप 0 आदि मिलते हैं, पर मेरे जन्मदाता चौथी शताब्दी मध्य के आर्यभट्ट हैं। उनका जन्म कुसुमपुर, पाटलीपुत्र (पटना) बिहार में 476 ई०पू० माना जाता है। बड़े प्रकाण्ड पंडित थे आर्यभट्ट, गणित, खगोल शास्त्र और ज्योतिष में। उन्होंने अपनी पुस्तक 'आर्यभट्टीय' में गणित, ज्योतिष, खगोल विज्ञान के अनेक नियम देकर अनेक अन्ध-विश्वासों को तोड़ने का कार्य किया। उन्होंने मेरे इस रूप '0' को दिया जिसे दुनिया ने सराहा। महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त पहले भारतीय थे जिन्होंने शून्य का उपयोग करते हुए नियम बना दिए। हाँ, कुछ नियम सही नहीं थे जिसे बाद में अन्य गणितज्ञों ने ठीक किया। आर्यभट्ट ने पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्रों पर अनेक खोजें कीं। उन्होंने खोज निकाला कि धरती अपने अक्ष पर घूमती है जिससे दिन-रात बनते हैं। सूर्य व चन्द्र ग्रहण सूर्य की परिक्रमा के दौरान एक रेखा में होने पर लगते हैं जिसे बाद में योरोपीय विद्वानों ने हज़ारों साल बाद प्रमाणित भी किया। है न भारत महान, ज्ञान का आगार तभी तो विदेशी यात्री ह्यून-सांग, फाहियान आदि ज्ञान की खोज में भारत आए और हमारे ग्रन्थों का अध्ययन किया।

खैर, भारत में जन्म ले मैं चीन, अरब के देशों से होता हुआ शेष विश्व में गया। मेरे रूप में निखार आया। सबने मुझे सिर आँखों पर बिठाया और मैं सबका प्यारा हूँ। अरे जिस कम्प्यूटर के सामने तुम बैठे इतराते हो जानते हो उसके आधार अंकों में एक मैं हूँ। चाहे पूछ लो अपने कम्प्यूटर अध्यापक से। और शून्य अर्थात '0' ही इसके आधार हैं जिनके आधार पर बड़ी-बड़ी गणनाएं होती हैं। दशमिक प्रणाली का आधार भी तो मैं ही हूँ।

तो हूँ न मैं रूप-गुण से भरपूर और चमत्कारी। जैनाचार्य महावीर जी ने तो अपने ग्रन्थ 'गणित सार संग्रह' में तो चौबीस स्थान तक मेरा मान बढ़ाया है।

सचमुच, आर्यभट्ट दुनिया में मुझे लाकर स्वयं भी अमर हो गए और मुझे चाँद-सितारों में जड़ दिया। अकेला रहूँ तो रहस्य, किसी के साथ लगता जाऊँ तो उसका मान दस गुणा बढ़ाता-बढ़ाता अनन्त हो जाता हूँ। तो मैं शून्य कहाँ? मैं अनंत अनमोल! तो आप लोग क्यों बैठे हो? नए विचार, नई सोच, नई उमंग से बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ और छू लो आसमान!

अभ्यास

(I) **भाषा-बोध**

(i) **शब्दार्थ**

मास	:	महीना	खगोल शास्त्र	:	सौर-मण्डल सम्बन्धी अध्ययन
सून	:	खाली, रिक्त	गणितज्ञ	:	गणित को जानने वाला
आविष्कार	:	खोज	गणना	:	गिनना, गिनती
कौड़ी	:	घोंघे, शंख आदि	परिक्रमा	:	फेरी, प्रदक्षिणा
शिलालेख	:	किसी सम्राट द्वारा पत्थर पर खुदवाया आदेश			

अक्ष : धरती की धुरी
शताब्दी : सौ वर्ष का समय
अनमोल : अमूल्य
वैदिक काल : वेदों की रचना का युग
दशमिक प्रणाली : दस गुना तथा अपने से ठीक ऊँचे मान का दसवाँ भाग।

(ii) **अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ**

अंक : ________ ____
अंग : ________ ____
हंस : ________ ____
हँस : ________ ____
मास : ________ ____
मांस : ________ ____
शून्य : ________ ____
सुन्न : ________ ____
बालू : ________ ____
भालू : ________ ____

(iii) **रिक्त स्थान भरो**

1. बेबीलोन निवासियों की गणना का आधार अंक___________जिसका चिह्न _____ था।
2. भारत में ज्ञान की खोज में__________विदेशी यात्री आए।
3. ब्रह्मगुप्त________भारतीय_______थे, जिन्होंने अनेक गणित के नियम बनाए।
4. ________की खोज आर्यभट्ट ने की, उनका प्रसिद्ध________था।
5. कम्प्यूटर के आधार अंक________और________हैं।

(II) **विचार-बोध**

1. प्राचीन काल में मुनष्य कैसे गणना करता था?
2. अशोक के शिलालेखों के अंक चिह्न का संबंध किस सभ्यता से है?
3. मिस्र में दस, बीस चालीस अंक चिह्न लिखो?
4. बेबीलोन निवासियों का गणना अंक कितना था?
5. भारत में बिन्दु चिह्न कब से मिलता है?
6. आर्यभट्ट कौन थे, उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम लिखो।
7. आर्यभट्ट ने कौन-सी महत्वपूर्ण खोजें कीं?
8. ब्रह्मगुप्त कौन थे?

9. आचार्य महावीर के ग्रन्थ का नाम लिखो।

10. कम्प्यूटर के आधार अंक कौन-कौन से हैं ?

(III) आत्म-बोध

कल्पना करो कि आपके पास एक रुपया है यदि उसके साथ एक-एक करके शून्य लगाते जाएँ तो यही एक रुपया करोड़ों, अरबों रुपयों में बदल जाएगा। इसलिए शून्य का भी बहुत महत्व है। इसी तरह जीवन में हरेक इन्सान महत्वपूर्ण है अत: कभी भी अपने आपको कम मत आँकों। अपनी शक्तियों को पहचानो और जीवन में आगे बढ़ते जाओ।

(IV) रचना-बोध

1. अपनी कॉपी पर एक (1) लिखो। उसके आगे शून्य (0) लगाओ। अब इस संख्या को शब्दों में लिखो जैसे 10-दस। इसी प्रकार शून्य लगाकर बनी संख्या को शब्दों में लिखते जाओ।
2. पुराने सिक्कों का संग्रह करो।

पाठ–13

नर हो, न निराश करो मन को

नर हो, न निराश करो मन को।
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ काम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो, जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को।
नर हो, न निराश करो मन को॥

समझो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला!
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप करो प्रशस्त अपना।
अखिलेश्वर है अवलम्बन को।
नर हो, न निराश करो मन को॥

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
सब जाए अभी पर मान रहे,
मरने पर गुंजित गान रहे।
कुछ हो न तजो निज साधन को।
नर हो, न निराश करो मन को॥

प्रभु ने तुमको कर दान किये,
सब वांछित वस्तु–विधान दिये।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर है किसका यह दोष कहो।
समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

किस गौरव के तुम योग्य नहीं?
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के।
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को?
नर हो, न निराश करो मन को॥

–मैथिलीशरण गुप्त

अभ्यास

(I) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

जग = संसार तन = शरीर सुयोग = सुंदर योग, बढ़िया मौका

सदुपाय = (सद्+ उपाय) अच्छा उपाय प्रशस्त = जिसकी प्रशंसा की गई हो

अखिलेश्वर = (अखिल + ईश्वर) सबका स्वामी, परमेश्वर

अवलम्बन = सहारा तजो = छोड़ो कर = हाथ

अलभ्य = जो प्राप्त न हो सके।

(ii) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो

सुयोग ______________________________

अवलम्बन ______________________________

दान ______________________________

धन ______________________________

सुख ______________________________

(iii) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखोः-

नर ________ जग ________ तन ________

पथ ________ प्रभु ________ कर ________

धन ________

(iv) 'सुयोग' शब्द सु+योग से बना है। इसी प्रकार 'अलभ्य' शब्द अ + लभ्य से बना है। 'सु' और 'अ' का प्रयोग करते हुए पाँच-पाँच नए शब्द बनाओ

________ ________ ________

________ ________ ________

________ ________ ________

________ ________ ________

________ ________ ________

(v) काव्य-पंक्तियाँ पूरी करो

निज गौरव का ________________।

हम भी है यह ________________।

प्रभु ने तुमको _________________।

सब वाँछित ___________________।

(II) विचार-बोध

(क) 1. कवि ने क्या करने की प्रेरणा दी है?

2. मनुष्य को किस प्रकार कर्म करने को कहा है?

3. प्रभु ने मनुष्य को क्या दिया है?

4. कवि ने मनुष्य को किस प्रकार प्रोत्साहित किया है?

(ख) सप्रसंग व्याख्या लिखो

निज गौरव---मन को।

III आत्म-बोध

1. इस कविता को कंठस्थ करो। नित्य प्रति इनका गुणगान करते हुए इससे प्रेरणा लो।
2. मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी के राष्ट्रकवि थे। अपने अध्यापक से पता करो कि अन्य कौन-कौन से राष्ट्र कवि हुए हैं। गुप्त जी की रचनाओं के बारे पढ़ो।
3. कविता में निंरतर कर्म करने की प्रेरणा दी है। 'श्रीमद्भगवत गीता' से उन पंक्तियों को ढूँढ़ो जिनमें कर्म रत रहने को कहा गया है।

पाठ-14

तीज

''सावन'' हिन्दुस्तानी साल का पाँचवाँ महीना है। भारतीय वर्ष के प्रत्येक मास के दो पक्ष होते हैं। एक पखवाड़े को ''शुक्ल पक्ष'' कहा जाता है और दूसरे को ''कृष्ण पक्ष''। महीने के जिन पंद्रह दिनों में सूरज डूबने के कुछ समय बाद आकाश में चाँद दिखाई पड़ने लगता है, उसे ''शुक्ल पक्ष'' कहा जाता है। जिन पंद्रह दिनों में चाँद देर से उदय होता है, उसे ''कृष्ण पक्ष'' कहा जाता है। सावन के शुक्ल पक्ष के तीसरे दिन से ''तीज'' का त्योहार आरम्भ होता है। यह लोकपर्व लगभग तेरह दिन तक मनाया जाता है।

संस्कृत भाषा में ''तीन'' के लिए ''त्रय'' और तीसरी के लिए ''तृतीया'' शब्द मिलते हैं। ''तृतीया'' से बिगड़ कर हिन्दी में ''तीज'' शब्द बना है। यही ''तीज'' शब्द पंजाबी भाषा में ''तीआं'' बन गया है। भारत के अन्य भागों में सावन के शुक्ल पक्ष की तृतीया को 'श्रावण तीज'' अथवा केवल ''तीज'' कहा जाता है। यही ''तीज'' का त्योहार पंजाब में ''तीआं'' बन गया है। झूलों की चहल-पहल के कारण पंजाब से बाहर यह कहीं-कहीं ''झूला उत्सव'' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

सावन के महीने में आकाश में बादल उमड़-उमड़ कर आँखमिचौनी खेलते दिखाई पड़ते हैं। कभी हल्की बूँदाबाँदी और कभी वर्षा की तेज़ बौछार से गर्मी की तपिश मिट जाती है। जल-थल एक हो जाता है। सूखे पेड़ों पर हरियाली झलकने लगती है। ऐसे सुहावने वातावरण को देखकर मोर के पैर भी थिरकने लगते हैं और वह भी पंख फैलाकर नाच उठता है। इसीलिए किसी व्यक्ति के अत्यंत प्रसन्न होने पर एक मुहावरे का प्रयोग होता है- ''उसका मन -मयूर नाच उठा।''

जब सावन ऋतु पशु-पक्षियों को आनंदित कर सकती है तो मनुष्य के मन की क्या दशा होगी, यह सोचने की बात है। ''तीज'' के त्योहार के तेरह दिनों में स्त्रियाँ बन-ठन कर शाम को झूला झूलने के लिए गाँव या नगर के किसी निश्चित स्थान पर एकत्र होती हैं। वहीं पर छोटा-सा बाज़ार लग जाता है। 'तीज' के मेले में आने वाली सजी-धजी महिलाओं को देखकर यह पहचानना कठिन हो जाता है कि कौन-सी विवाहित है और कौन-सी कुँवारी। बड़ी और छोटी उम्र की औरतें मिलजुल कर अपने मन के भावों को खुलकर प्रकट कर सकें, इसीलिए शिष्टाचार के नाते 'तीज' के मेले में पुरुषों का प्रवेश वर्जित माना जाता है। किन्तु कुछ मनचले नौजवान कई बार लुक-छिप कर किसी-न-किसी बहाने यह मेला देखने पहुँच ही जाते हैं। नई सभ्यता के प्रभाव के कारण अब ''तीज का मेला'' बड़े शहरों में एक-दो दिन के ''झूला-उत्सव'' के रूप में ''महिला-क्लबों'' तक ही सिमटता जा रहा है।

''तीज'' का त्योहार पुत्रवधू को सम्मान देने का प्रतीक भी है। इस अवसर पर नव-विवाहिता को ससुराल की ओर से नए कपड़े, आभूषण तथा मिठाइयाँ भेजी जाती हैं। मायके पहुँची हुई बहूरानी को सजने के लिए इत्र, क्रीम, बिंदी, सुरखी, मेंहदी और सिर की चोटी भी ससुराल से ही भिजवाई जाती है। सासू माँ बहूरानी को झूलने के लिए बड़ी-सी रस्सी तथा पटरी के साथ ही उसके भतीजे-भतीजियों के खेलने के लिए कुछ खिलौने भेजना भी नहीं भूलती। ऐसे खिलौनों में एक बुड्ढा एवं गुड़िया भी होती है। बुड्ढा एक छोटी-सी डिबिया में बंद होता है। डिबिया का ढक्कन खोलते ही, लोहे की तारों से बँधा बुड्ढा फुदक कर बाहर आ जाता है। गुड़िया के पेट के पास की तार को दबाने से ताली बजने लगती है। बूढ़े की सफेद दाढ़ी के साथ हिलता हुआ सिर देखकर बच्चों की तो क्या बड़ों तक की हँसी फूट पड़ती है। सास की इस सारी सौगात को ''संधारा'' कहा जाता है।

''रक्षा-बन्धन'' की शाम को ''तीज'' का आखिरी दिन होता है। बहन दिन में अपने भाइयों को तथा बुआ अपने भतीजों की कलाई पर राखी बाँधकर और तिलक लगाकर ''सलूनो'' का शगुन मनाती है। अब बहन और बुआ की विदाई की वेला भी समीप आ गई है। ''राखी'' से अगले दिन भादों का महीना आरंभ हो जायेगा। विवाहिता स्त्रियाँ सहेलियों के साथ बिताए 'तीज' के दिनों की मीठी यादें लेकर ससुराल लौटने वाली हैं। त्योहार के अंतिम दिन वे प्रतिदिन की तरह मधुर गीत गा कर झूला झूलती हैं। 'तीज' के मेले से लौटते समय वे अपनी सहेलियों से गले मिलती हैं और यह दो तुक दोहराती हैं :

सौण वीर इकट्ठीयाँ करे।
भादों चंदरी बिछोड़े पावे॥

अपनों से मिलाप करवाने वाले सावन महीने को भोली-भाली लड़कियाँ भाई बनाकर अपने हृदय का सुख प्रकट करती हैं। वहीं दूसरी ओर भादों को अपने से अलग कर देने वाली मान कर ''चंदरी'' कह कर कोसती हैं। इस प्रकार के मिलन-विछोह की विचित्र कहानी न जाने कब शुरू हुई होगी। फिर भी यह ''तीआँ'' का त्योहार बनकर हर वर्ष सब के हृदय को छू लेती है।

-डॉ. नवरत्न कपूर

अभ्यास

(I) भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

सावन	=	श्रावण (एक महीने का नाम)	बौछार	=	झोंका
शगुन	=	शुभ	तपिश	=	गर्मी
प्रतीक	=	बताने वाला चिह्न	सिमटना	=	सीमित रह जाना
थिरकन	=	नाचना	वर्जित	=	मनाही
सौगात	=	उपहार, भेंट	पखवाड़ा	=	पंद्रह दिन का समय

(ii) निम्न मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में प्रयुक्त करें

1. आँख-मिचौनी खेलना- लुका छिपी ________________________________
2. मन-मयूर नाच उठना- बहुत प्रसन्न होना ________________________________

(iii) विपरीतार्थक लिखें

आरम्भ	________	सूखा	________	शुक्ल पक्ष	________
उदय	________	गर्मी	________	विवाहित	________
मिलाप	________				

(iv) लिंग बदलो

मोर	________	नौजवान	________	पुत्रवधू	________
बुड्ढा	________	गुड़िया	________	बुआ	________
स्त्री	________				

(v) वचन बदलो

कपड़ा	________	खिलौना	________	बुड्ढा	________
मिठाई	________	चोटी	________	भतीजी	________
डिब्बी	________	सखी	________	कहानी	________
लड़की	________				

(vi) शुद्ध करें

अभुषण	________	त्याहार	________	ढकन	________
विवाहत	________	वयकति	________	वरजित	________
उतसव	________	षिषटाचार	________	सहेलीयाँ	________
विचीतर	________	पंदरह	________		

(vii) मूल शब्द अलग करो

हरियाली = हरा

आनन्दित = _______

विवाहित = _______

(viii) निम्न शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनायें

सिमटना ____

प्रतीक ____

बौछार ____

वर्जित ____

निश्चित ____

पुत्रवधू ____

अंतिम दिन, पाँचवाँ महीना, सफेद दाढ़ी, विचित्र कहानी आदि शब्द-युग्मों में अंतिम, पाँचवाँ, सफेद, विचित्र शब्द क्रमशः दिन, महीना, दाढ़ी, कहानी शब्दों की विशेषता बतलाते हैं। स्पष्ट है कि **किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं । जिस शब्द की विशेषता बतलाई जाती है,उसे विशेष्य कहते हैं। अंतिम दिन में अंतिम विशेषण है, जबकि दिन विशेष्य है।** अब नीचे लिखे शब्दों में से विशेषण और विशेष्य शब्द अलग अलग लिखिए:-

पाँचवाँ महीना, पंजाबी भाषा, तेज़ बौछार, सुहावना वातावरण, सजी-धजी महिलाएँ, मनचले नौजवान, सफेद दाढ़ी, विचित्र कहानी, दो पक्ष, पंद्रह दिन।

ऊपर लिखे शब्दांशों में अन्तिम, पंजाबी, तेज़, सुहावना, सजी-धजी, मनचले, सफेद, विचित्र शब्द संज्ञा शब्दों के गुण, दशा, रंग, आकार आदि का बोध कराते हैं अतः गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। पाँचवाँ, दो, पंद्रह, आदि शब्द महीना, पक्ष, दिन की संख्या का बोध कराते हैं, अतः संख्या वाचक विशेषण कहलाते हैं।

(II) विचार-बोध

(क)
1. 'सावन' हिन्दुस्तानी साल का कौन-सा महीना है ?
2. तीज का त्योहार कब आरम्भ होता है ? यह कितने दिनों तक मनाया जाता है ?
3. 'तीज' शब्द कैसे बना ?
4. पंजाब में तीज के त्योहार को किस नाम से जाना जाता है ?
5. बड़े शहरों में तीज का मेला किस रूप में सिमटता जा रहा है ?
6. तीज पर पुत्रवधू को जो सौगात भेजी जाती है, उसे क्या कहते हैं ? उस सौगात में क्या-क्या भेजा जाता है ?
7. तीज का आखिरी दिन कब होता है ? बहनें इस दिन को कैसे मनाती हैं ?
8. सहेलियों से मिलते समय स्त्रियाँ कौन-सी तुक दोहराती हैं ?

(ख) 1. सावन के महीने में मौसम कैसा होता है ?

2. तीज का त्योहार स्त्रियाँ कैसे मनाती हैं ?

3. आप रक्षा-बन्धन कैसे मनाते हो, अपने शब्दों में लिखो।

आत्म-बोध

1. 'तीज' के त्योहार पर गाए जाने वाले गीत को मिलकर गायें।
2. छात्र परस्पर भाईचारे की भावना रखें।
3. अन्य त्योहारों का महत्व भी जानें और उसे समझकर प्रसन्नचित्त रहें।

रचना-बोध

1. अपनी सहेली को पत्र द्वारा सूचित करें कि आपके परिवेश में तीज का त्योहार कैसे मनाया गया ?
2. 'हमारे त्योहार' या 'रक्षा-बन्धन' पर निबन्ध लिखें।
3. देसी महीनों के नाम पता करके लिखें।

पाठ–15

पाँच प्यारे

सन् 1699 वर्ष था। वैशाखी के दिन भारी संख्या में बच्चे, बूढ़े तथा जवान आनंदपुर साहिब में एकत्र हुए। बहुत बड़ा एक शामियाना लगाया गया था। उस पंडाल में सहस्त्रों लोग उपस्थित थे। भगवान का कीर्तन हो रहा था। 'गुरु गोबिंद सिंह जी' पंडाल में सुशोभित थे और बड़े ध्यान-पूर्वक कीर्तन सुन रहे थे। कुछ समय के पश्चात् वह लोगों के सामने खड़े हो गए। उनके नेत्र लाल और सूर्य की किरणों की तरह चमक रहे थे। उनका चेहरा तमतमा रहा था। उन्होंने अपनी म्यान से तलवार निकाली और सिंह की तरह गर्जना करते हुए बोले, आज शक्ति की देवी एक वीर के शीश की माँग कर रही है। क्या यहाँ पर कोई ऐसा वीर है, जो अपने जीवन का बलिदान कर सकता हो? गुरु जी के इन शब्दों का जनता पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ देर के लिए चारों ओर चुप्पी छा गई। लोगों के हृदय दहल उठे। वे सोचने लगे आज गुरु जी को ऐसा क्या कष्ट है जो उन्होंने किसी वीर की बलि माँगी। कोई भी शूरवीर इस बलिदान के लिए तैयार न था। सभी अपनी-अपनी गर्दन नीचे किए बैठे रहे। गुरु जी क्या चाहते थे- यह कोई नहीं जानता था। फिर वे क्यों इतने बड़े बलिदान की माँग कर रहे थे। गुरु जी की इस माँग को देखकर सभी परेशान थे। गुरु जी ने अन्त में फिर कहा कि, "हज़ारों की इस संख्या में कोई भी ऐसा वीर नहीं, जिसे मुझ पर विश्वास हो?" लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उन्होंने देखा कि एक ओर से लाहौर का क्षत्रिय भाई दयाराम हाथ जोड़कर गुरु जी के सामने आ खड़ा हुआ है। उस समय एक अलौकिक दृश्य उपस्थित हो गया कि एक वीर अपना शीश भेंट कर रहा था। गुरु जी ने उसे बाजू से पकड़ा और साथ लगे तम्बू में ले गए, जो वहाँ इसी उद्देश्य के लिए लगाया गया था। तम्बू में किसी को काटने की आवाज़ सुनाई दी और रक्त से भरी तलवार सहित गुरु जी बाहर आ गए। रक्त तम्बू के बाहर भी बहने लगा। लोगों ने खून से रंगी तलवार देखी। बाहर आकर गुरु जी ने फिर ललकारा कि शक्ति की देवी एक और वीर की बलि माँग रही है। इस बार दिल्ली का जाट भाई धर्मदास निकला। गुरु जी उसे भी तम्बू में ले गए और फिर खून से रंगी तलवार लेकर बाहर निकले। भयभीत जनता को विश्वास हो गया कि दूसरे वीर की भी बलि दी गई है। भीड़ तितर-बितर होने लगी। चारों ओर स्तब्धता छा गई। कुछ लोग गुरु जी की माता के पास दौड़े हुए गए। उन्होंने बताया कि गुरु जी अकारण ही अपने सेवकों का वध किए जा रहे हैं, अत: उन्हें जाकर समझाएं। दूसरी ओर गुरु जी की ललकारें जारी रहीं। लोग गर्दन नीचे किए बैठे रहे। तीसरी बार द्वारिका का मोहकम चन्द सामने आया। उसे भी गुरु जी तम्बू में ले गए। इस पर भी लोग सोचने लगे कि वह भी बेचारा मारा गया है। भय तथा निराशा बढ़ती चली गई और लोगों ने वहाँ से खिसकना शुरू कर दिया।

गुरु जी का चेहरा रक्त से तमतमा रहा था। उन्होंने एक अन्य वीर की माँग की। दीवान में लोग पत्थर की मूर्ति बनकर बैठे हुए थे। इसी बीच एक अन्य श्रद्धालु साहब चंद भीड़ में से उठा और गुरु जी के चरणों को अपने हाथों से छुआ और देर से उठने की क्षमा माँगी। गुरु जी उसे भी तम्बू में ले गए और थोड़ी देर पश्चात खून से रंगी तलवार लेकर बाहर निकले।

दीवान में बैठे लोगों ने अकाल पुरुष से प्रार्थना की कि वह गुरु जी को सुबुद्धि प्रदान करे। जो कुछ भी हो चुका था, पर्याप्त था। चार वीर बलि चढ़ाए जा चुके थे। दूसरी ओर गुरु जी पाँचवें वीर की माँग कर रहे थे। इस बार जगन्नाथ का भाई हिम्मत राय, जो जाति का महरा था, गुरु जी के समक्ष उपस्थित हुआ। उसे भी गुरु जी तम्बू में ले गए। इस बार गुरु जी तम्बू में से शीघ्र नहीं लौटे। जनता असमंजस में पड़ी थी। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। लोगों की परेशानी की सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि गुरु जी उन पाँचों वीरों को साथ लेकर तम्बू से बाहर आ रहे हैं। उन पाँचों ने नए वस्त्र धारण कर रखे थे। उनके हाथों में तलवारें चमक रही थीं और वे बड़े शूरवीर सिपाही वेश में थे। लोग उन्हें देख कर आश्चर्य-चकित रह गए। गुरु जी ने उन्हें पाँच प्यारों की संज्ञा देकर घोषणा की, ''कि ये पाँच प्यारे अपने प्राणों की आहुति देकर भी अपने धर्म की रक्षा करेंगे।'' यह सुनकर सारे वातावरण से 'सत श्री अकाल' का जय-घोष होने लगा।

अभ्यास

I भाषा-बोध :

(i) शब्दार्थ :-

सहस्त्रों = हज़ारों

नेत्र = आँखें

चुप्पी = मौन, शान्त

दृश्य = नज़ारा

रक्त = खून

समक्ष = सामने

जय-घोष = विजय की गर्जना

तमतमाना = धूप या क्रोध से चेहरा लाल होना

असमंजस =ठीक-ठीक न पता होना

अलौकिक = दूसरे लोक का

स्तब्धता = एकदम शाँति, चुप्पी

आहुति = बलिदान

(ii) मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए

चुप्पी छा जाना ________ ____

चेहरा तमतमाना ________ ____

दिल दहलना ________ ____

तितर–बितर होना ________ ____

खून से रंगी तलवार ________ ____

पत्थर की मूर्ति बन बैठना ________ ____

प्राणों की आहुति देना ________ ____

बलि चढ़ाना ________ ____

(iii) समानार्थक लिखिए

विश्वास	________	शूरवीर	________	सूर्य	________
किरण	________	तलवार	________	पत्थर	________
उद्देश्य	________	बलिदान	________	घोषणा	________
पश्चात	________	शामियाना	________	श्रद्धालु	________

(iv) निम्न शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त करें

एकत्र ____

कीर्तन ____

चुप्पी ____

शामियाना ____

बलिदान ____

स्तब्धता ____

अलौकिक ____

दृश्य ____

प्रार्थना ____

(v) इन शब्दांशों में से विशेषण और विशेष्य अलग कर लिखो

	विशेषण		विशेष्य
बड़ा शामियाना	**बड़ा**		**शामियाना**
सहस्त्र लोग	________	,	________
लाल नेत्र	________	,	________

तमतमाता चेहरा	________	,	________
सिंह की तरह गर्जना	________	,	________
शक्ति की देवी	________	,	________
बड़ा बलिदान	________	,	________
लाहौर का क्षत्रिय	________	,	________
अलौकिक दृश्य	________	,	________
रक्त से भरी तलवार	________	,	________
दिल्ली का जाट	________	,	________
भयभीत जनता	________	,	________
नीची गर्दन किए बैठे लोग	________	,	________
पत्थर की मूर्ति बने लोग	________	,	________
चार वीर	________	,	________
नए वस्त्र	________	,	________
पाँच प्यारे	________	,	________

वर्ण विच्छेद करो

सहस्त्र	=	__ + __ + __+__+__+__+__
कीर्तन	=	__+__+__+__+__+__
शक्ति	=	__+__+__+__+__+__
अलौकिक	=	__+__+__+__+__+__+__
प्यारे	=	__+__+__+__+__

II विचार-बोध

(क) 1. म्यान से तलवार निकालते हुए गुरु जी ने क्या कहा?

2. सबसे पहले किसने अपनी बलि देने की इच्छा प्रकट की?

3. पण्डाल में से लोग क्यों खिसकने लगे?

4. बलि देने वाले पाँचों वीरों के क्या-क्या नाम थे?

(ख) पाँच प्यारे कौन-कौन थे? उनके बारे में जो कुछ जानते हो अपनी कापी में लिखें।

(ग) अपने अध्यापक से जानकारी प्राप्त करें :-

1. गुरु गोबिंद सिंह जी ने पाँच प्यारे क्यों चुने?

2. गुरु जी ने उन पाँच प्यारों का वेश क्यों बदल दिया?

(घ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्दों को लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:-

1. गुरु जी बोले, ''आज शक्ति की देवी एक----के शीश की माँग कर रही है।'' (नवयुवक, वीर, खत्री)

2. गुरु जी खून से भरी तलवार सहित---से बाहर आए। (कमरे, पण्डाल, तम्बू)

3. लोगों ने----से प्रार्थना की। (गुरु, गुरु -माता, अकालपुरुष)

4. गुरु जी का चेहरा----से तमतमा रहा था। (क्रोध, जोश, रक्त)

III आत्म-बोध :

1. धर्म की रक्षा के लिए गुरु गोबिन्द सिंह के त्याग की सभी घटनाओं को पढ़ो अथवा उनका पता करो और उनसे प्रेरणा लो।

रचना-बोध

'गुरु गोबिंद सिंह' पर लेख लिखो।

पाठ–16

मदर टेरेसा

ग़रीबों की मसीहा, भूखे, बेघर व बेसहारों की सहारा, अनाथों की नाथ, दीन–दुखियों के लिए करुणा का भंडार थी–मदर टेरेसा।

बेबस, लाचार, असहाय, उपेक्षित, तथा पीड़ित लोगों के लिए उनके मन में ऐसा नि:स्वार्थ सेवा भाव था कि एक दिन मदर टेरेसा को एक पेड़ के नीचे एक बीमार स्त्री मिली। उसकी स्थिति बहुत ही कष्टदायक और दयनीय थी। उसका शरीर फोड़े–फुँसियों से भरा हुआ था। शरीर पर मक्खियाँ भिन–भिना रही थीं और चींटियाँ रेंग रही थीं। उसकी दशा देखकर मदर का हृदय पिघल गया। वे उसे उठाकर अस्पताल ले गई। उसकी हालत देखकर आपातकालीन वार्ड के अधिकारियों ने उसे भर्ती करने से मना कर दिया किन्तु मदर की हठधर्मिता देखकर उन्हें महिला को भर्ती करना ही पड़ा।

ऐसी महान विभूति का जन्म 27 अगस्त 1910 ई० को यूगोस्लाविया के स्कापये शहर में हुआ। इनके माता–पिता अल्बानिया के निवासी थे। ये तीन भाई बहन थे। सात वर्ष की आयु में ही इन्होंने अपने पिता को खो दिया। इनका बचपन का नाम एग्नेस गौंझा बोजाक्यु था।

12 वर्ष की अल्पायु में ही इनमें 'नन' बनकर भारत आने की इच्छा प्रकट हुई। इन्होंने 18 वर्ष की अवस्था में ही धार्मिक जीवन स्वीकार कर लिया और नन बन गई। अपने इस धार्मिक जीवन की शिक्षा इन्होंने डबलिन में प्राप्त की। तत्पश्चात 1928 में ये कलकत्ता के इटाली स्थित लोरेटो कान्वेंट की शाखा सेंट मेरी स्कूल में भूगोल की अध्यापिका नियुक्त हुईं। यहाँ इन्हें नया नाम दिया गया–टेरेसा–सिस्टर टेरेसा। बाद में इन्होंने विद्यालय की प्रधानाध्यापिका के पद पर भी कार्य किया।

सेंट मेरी स्कूल की दीवार के बाहर मोती झील की बस्ती थी। इसी बस्ती में मदर टेरेसा ने सबसे पहले दरिद्रता से साक्षात्कार किया। वह गरीबों के बीच जाकर उनकी देखभाल करने, उनके बच्चों को पढ़ाने जैसे कार्य करना चाहती थीं पर लोरेटो के कड़े नियम उन्हें स्वतंत्र रूप से कोई काम करने की इजाजत नहीं देते थे।

इसी बीच मदर को 10 सितम्बर, 1946 को रेलगाड़ी से दार्जिलिंग जाते समय आभास हुआ कि जैसे ईसा मसीह आदेश दे रहे हों कि अपना जीवन दीन-दुखियों की सेवा में अर्पण कर दो। यही दिन उनके निर्णय लेने का दिन हुआ कि वे लोरेटो का सुखी जीवन छोड़कर झुग्गी-झोंपड़ियों में बसे बेबस और असहाय लोगों की सेवा में लगा देंगी। चूँकि लोरेटो के नियमानुसार उन्हें गरीबों की बस्तियों में, अस्पतालों में जाने पर पाबंदी थी। गरीबों की स्वतन्त्र रूप से सेवा के लिए एक संस्था (मिशनरीज ऑफ चैरिटी) बनानी ज़रूरी थी।

दार्जिलिंग से लौटते ही मदर टेरेसा ने प्रधानाध्यापिका के पद से त्यागपत्र देने का प्रार्थना-पत्र रोम भेजा और प्रार्थना-पत्र स्वीकृत हो गया। उन्होंने 17 अगस्त 1948 को लोरेटो के सक्रिय जीवन को अंतिम नमस्कार कह दिया और भारतीय नारी की पोशाक (नीली दो पट्टियों के बार्डर वाली सफ़ेद साड़ी को अपने मिशन की पोशाक) के रूप में ग्रहण कर लिया। अब उन्हें बस्तियों में काम करना था इसलिए पटना से चिकित्सीय प्रशिक्षण लिया। वहाँ से लौटकर उन्होंने अपना प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र कोलकाता को बनाया।

कोलकाता में मदर निराश्रित रोगियों के लिए उपयुक्त स्थान खोजने के लिए सरकारी दफ़्तरों के चक्कर लगाने लगीं। एक दिन नगरपालिका के दफ़्तर में चिकित्सा अधिकारी डॉ० अहमद ने जब उनसे पूछा 'क्या आपके पास चिकित्सा के लिए सभी साधन उपलब्ध हैं?' तो मदर ने कहा, 'चिकित्सा के लिए सेवा और प्रेम की आवश्यकता होती है। ये दोनों ही औषधियाँ मेरे पास अथाह मात्रा में हैं।' मदर के इस उत्तर से प्रभावित होकर उन्हें काली घाट के काली मंदिर से लगी धर्मशाला में दो बड़े हॉल सौंप दिए गए। यहीं इन्होंने अपना आश्रम खोला, नाम रखा-निर्मल हृदय। अब आश्रम में सड़कों से बेसहारा, मरणासन्न रोगी लाए जाने लगे।

कुछ दिन बाद मदर टेरेसा ने मिशनरीज ऑफ चैरिटी का दूसरा आश्रम खोला-'निर्मल शिशु भवन'। जहाँ अनाथ, बेसहारा तथा जन्मजात अपंग बच्चों का घर-सा पालन-पोषण होने लगा।

मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना सन् 1950 में हुई थी। मदर ने अकेले इस कार्य का आरम्भ किया था। मदर के दृढ़ विश्वास और अथक परिश्रम से सेवाकार्य का कार्यक्षेत्र अति विस्तृत होता गया। इस समय इनकी संस्था 70 विद्यालय, 250 अस्पताल, 28 कुष्ठ निवारण केन्द्र, 20 घर अनाथ बच्चों के लिए, 25 घर वृद्यों एवं जीवन से निराश व्यक्तियो के लिए चला रही है। यह कार्य भारत के 40 शहरों में चल रहा है। 131 देशों में मिशनरीज ऑफ चैरिटी के 700 से ज्यादा केन्द्र हैं। जहाँ 4500 से ज़्यादा सिस्टर्स सेवा-कार्यों में लगी हुई हैं। इन विभिन्न देशों की सिस्टर्स ने रंगभेद और धर्मों की सीमा को तोड़कर मानव सेवा का एक ही धर्म अपना लिया है।

मदर टेरेसा 1962 में भारत सरकार द्वारा 'पदम श्री' सम्मान से, 1979 में शाँति के लिए 'नोबेल पुरस्कार' से तथा 1980 में भारत की सर्वोच्च उपाधि 'भारत रत्न' से विभूषित हुईं।

5 सितम्बर, 1997 को ग़रीबों का मसीहा मदर टेरेसा ने प्राण त्याग दिए। विदेशी धरती में जन्म लेने के बावजूद मदर टेरेसा भारत की मिट्टी में पूरी तरह से रच-बस गई थीं। मदर ने अपने जीवन के 68 साल भारत विशेषकर बंगाल में बिताए और अपने सेवा-कार्य से विश्व में भारत का गौरव बढ़ाया।

19 अक्टूबर, 2003 को वेटिकन नगर में हुए एक समारोह में पोप जानपॉल ने इन्हें 'संत' घोषित किया है।

अभ्यास

भाषा-बोध

शब्दार्थ

विभूति =	अलौकिक शक्ति	उपेक्षित =	जिसकी उपेक्षा की गई हो
निस्वार्थ =	बिना किसी स्वार्थ के	हठ धर्मिता =	सत्य बात पर अड़े रहना
दरिद्रता =	निर्धनता	साक्षात्कार =	आँखों के सामने
स्वीकृति =	स्वीकारा हुआ	सक्रिय =	क्रियाशील
औषधियाँ =	दवाइयाँ	अल्पायु =	छोटी आयु
नियुक्त =	लगाया हुआ	मरणासन्न=	मृत्यु के निकट
विभूषित=	अलंकृत, सजाया हुआ		

चिकित्सीय प्रशिक्षण = चिकित्सा के क्षेत्र विशेष योग्यता

आभास = अनुभव होना

लिंग बदलो

माता	________	अध्यापिका	________	स्त्री	________
नारी	________	वृद्ध	________		

वचन बदलो

बच्चा	________	औषधि	________	साड़ी	________
चींटी	________	महिला	________	शाखा	________
झील	________	दीवार	________	बस्ती	________

विपरीतार्थक शब्द लिखो

अंतिम	________	सुखी	________	उपयुक्त	________
उपलब्ध	________	विदेशी	________	स्वीकृत	________
जीवन	________	रोगी	________	इच्छा	________

पर्यायवाची शब्द लिखो

शिक्षा ________ सफेद ________ बचपन ________
शरीर ________ पेड़ ________ नमस्कार ________
दशा ________

वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो

जिसका कोई घर न हो ________
जिसका कोई सहारा न हो ________
जिसके माँ-बाप न हो ________
जिसकी थाह न पाई जा सके (सीमा रहित) ________
धर्म अथवा परमार्थ हेतु बनवाया गया भवन ________
सबसे ऊँचा ________
बिना किसी स्वार्थ के ________

विशेषण बनाओ

वर्ष ________ धर्म ________ नियम ________
सेवा ________ परिश्रम ________ केंद्र ________
कर्म ________ अर्पण ________

भाववाचक संज्ञा बनाओ

निर्मल ________ मानव ________ स्वतंत्र ________
शिशु ________ स्वीकार ________

शुद्ध करो

चिकितसा ________ प्रारथना ________ पुरसकार ________
उपाधी ________ ग्रहण ________ परीश्रम ________
अर्पन ________ सथापना ________

वाक्यों में प्रयोग करो

पाबंदी ____
घोषित ____
समारोह ____
भंडार ____
करुणा ____
निराश्रित ____
दयनीय ____

विभूति ____

नियुक्ति ____

विचार-बोध

(क) 1. मदर टेरेसा का जन्म कब और कहाँ हुआ था? इनके बचपन का वर्णन करें।

2. मदर टेरेसा के मन में किस प्रकार का सेवाभाव था? किसी घटना द्वारा बताएं।

3. रेलगाड़ी से दार्जिलिंग जाते समय मदर टेरेसा को क्या आभास हुआ?

4. मदर टेरेसा ने प्रधानाध्यापिका के पद से त्यागपत्र देने के बाद क्या किया?

5. मदर टेरेसा ने पहला आश्रम कहाँ और किन के लिए खोला?

6. चिकित्सा अधिकारी द्वारा मदर से चिकित्सा के साधन पूछने पर मदर ने क्या कहा?

7. मदर टेरेसा विश्व तथा भारत सरकार की किन-किन उपाधियों से विभूषित हुईं?

(ख) 1. मदर टेरेसा के जीवन के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालें।

2. मदर टेरेसा द्वारा खोले गए आश्रमों का वर्णन करें।

3. मदर टेरेसा की संस्था कौन-कौन से कार्य कर रही है?

आत्म-बोध

1. दीन दु:खियों, बेसहारों की सेवा ही सच्ची सेवा है।

2. मदर टेरेसा के जीवन से प्रेरणा लेकर आप क्या करेंगे?

पाठ-17

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
देव! मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूँगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।
बह गई उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुद्र ओर आई अनमनी।
एक सुन्दर सीप का था मुँह खुला,
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किन्तु घर का छोड़ना अकसर उन्हें,
बूँद लौ कुछ और ही देता है कर।

-अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अभ्यास

भाषा-बोध

शब्दार्थ

धूल =	मिट्टी	अनमनी =	बिना मन के
कढ़ी =	निकलना	अँगारे =	आग के शोले

इन मुहावरों का अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करो

भाग्य में बदा, धूल में मिलना, हवा बहना

इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो

बादल = ________ , ________

घर = ________ , ________

कमल = ________ , ________

फूल = ________ , ________

हवा = ________ , ________

समुद्र = ________ , ________

अंतर समझो

कढ़ी = बेसन और लस्सी से बनी खाने की वस्तु = ______________

कड़ी = पैर में पहनी जाने वाली लोहे से बनी गोल वस्तु = ______________

बढ़ी = बढ़ना = ______________________________

बड़ी = लम्बी = ______________________________

काल = समय = ______________________________

काल = मृत्यु = ______________________________

कर = करना = ______________________________

कर = हाथ = ______________________________

इन शब्दों के मूल क्रिया-शब्द लिखो

बढ़ी =	__________	बचूँगी =	__________
निकल =	__________	मिलूँगी =	__________
सोच =	__________	जलूँगी =	__________
लगी =	__________	गिरुँगी =	__________
बदा =	__________	पड़ूँगी =	__________
बह =	__________	बनी =	__________

आई	=	__________	छोड़	=	__________
खुला	=	__________	देता	=	__________

कविता की उन पंक्तियों को लिखो जिनमें विस्मयादि बोधक चिह्न लगा है।

विचार-बोध

1. बादलों से निकलने पर बूँद क्या सोचने लगी?
2. बूँद मोती कैसे बनी?
3. मनुष्य घर छोड़ते समय क्या सोचता है?
4. इस कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

घर से बाहर निकलने पर व्यक्ति को लाभ और हानि दोनों होते हैं। लाभ नीचे दिए गए हैं आप हानियाँ लिखें

	लाभ		हानियाँ
1.	व्यक्ति आत्म निर्भर बनता है।	1.	____________________
2.	कठिनाइयों से लड़ना सीखता है।	2.	____________________
3.	घर से प्रेम भाव बढ़ता है।	3.	____________________
4.	व्यक्तित्व में निखार आता है।	4.	____________________
5.	आगे बढ़ने के नए-नए रास्ते ढूँढ़ता है।	5.	____________________

इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करो

देव! मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूँगी गिर अँगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।

आत्म-बोध

1. घर छोड़ने पर 'लाभ या हानि' विषय पर कक्षा में चर्चा करें।
2. घर त्यागकर जिन्होंने संसार में उन्नति की है, ऐसे व्यक्तित्व के जीवन पढ़ें और इनके गुणों को जीवन में उतारने का प्रयास करें।
3. स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, शंकराचार्य, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, लक्ष्मीबाई की जीवनी पढ़ें।

पाठ-18

तीन प्रश्न

एक बार एक राजा के मन में विचार उठा कि यदि मैं यह जान जाऊँ कि प्रत्येक कार्य को करने के लिए उचित समय कौन-सा है ? मेरे लिए उपयुक्त व्यक्ति कौन है ? परमावश्यक कर्तव्य क्या है ? तो फिर किसी कार्य में असफल होने की आशंका न रह जाएगी।

यह विचार उठते ही उसने अपने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी मुझे इन तीनों बातों की शिक्षा देगा, उसे मैं बहुत बड़ा पुरस्कार दूँगा।

यह समाचार पाकर राजा के पास पंडित लोग आने लगे। परंतु सभी ने उसके प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर दिए।

पहले प्रश्न के उत्तर में किसी ने कहा कि प्रत्येक कार्य के लिए उचित समय जानने के हेतु मनुष्य को अपने दिवसों, मासों और वर्षों का कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिए और ठीक उसी के अनुसार समय व्यतीत करना चाहिए। दूसरे लोगों ने कहा कि राजा अकेला उचित रूप से प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित नहीं कर सकता। उसे पंडितों की एक समिति बनानी चाहिए। यह समिति उसे प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित करने में सहायक होगी। परंतु कुछ अन्य लोगों ने यह भी बताया कि बहुत से ऐसे कार्य हैं जिनके विषय में तुरंत निर्णय कर लेना आवश्यक है और यह निर्णय करने के लिए भविष्य का ज्ञान होने की ज़रूरत है और भविष्य का ज्ञान केवल तांत्रिकों को होता है, अतएव प्रत्येक कार्य के लिए उचित समय जानने के लिए तांत्रिकों की सम्मति लेनी चाहिए।

इसी प्रकार दूसरे प्रश्न के उत्तर भी भिन्न-भिन्न थे। कुछ लोगों ने बताया कि राजा को मंत्रियों की सबसे अधिक आवश्यकता है। कुछ ने पुरोहितों की, कुछ ने वैद्यों की और कुछ ने योद्धाओं की आवश्यकता बताई।

तीसरे प्रश्न के उत्तर में कुछ लोगों ने 'उपासना' को परम कर्त्तव्य बताया। सभी उत्तर भिन्न-भिन्न थे। राजा किसी भी उत्तर से संतुष्ट नहीं हुआ और न किसी को पुरस्कार ही दिया। परंतु इन प्रश्नों के यथार्थ उत्तर पाने की अभिलाषा उसे बनी रही। इससे राजा ने एक ऐसे साधु की सम्मति लेने का निश्चय किया, जो अपने ज्ञान के लिए बहुत दूर-दूर तक विख्यात था।

वह साधु एक जंगल में रहता था। जंगल छोड़कर वह कभी बाहर नहीं जाता था और केवल साधारण लोगों से भेंट करता था। इसलिए राजा ने सादे वस्त्र पहने, साधु की कंदरा से कुछ दूरी पर वह अपने घोड़े से उतर गया और अपने शरीर-रक्षकों को पीछे छोड़कर अकेला ही साधु के पास गया।

जिस समय राजा वहाँ पहुँचा, साधु अपनी कुटी के सामने धरती गोड़ रहा था। साधु ने राजा को देखकर उसका स्वागत किया और वह अपने काम में लगा रहा। साधु दुर्बल और कमज़ोर था। अपनी कुदाली से थोड़ी-थोड़ी धरती खोदकर वह रुक-रुककर दम ले लिया करता था।

राजा उसके निकट जाकर बोला– ''ज्ञानी पुरुष मैं आपके पास तीन प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा से आया हूँ। उचित कार्य को करने के लिए उचित समय कौन–सा है? मेरे लिए परमावश्यक व्यक्ति कौन है? और मेरा परम कर्तव्य क्या है?

साधु ने राजा की बातें सुनी, तुरंत उनका कुछ उत्तर नहीं दिया। उसने अपने हाथ से पसीना पोंछा और फिर से गोड़ना आरम्भ कर दिया। राजा ने कहा–''आप थक गए हैं, लाइए, मुझे कुदाली दीजिए। थोड़ी देर मैं आपका काम कर दूँ।''

साधु ने 'धन्यवाद' कहकर कुदाली राजा को दे दी और खुद धरती पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद साधु ने उठकर कुदाली के लिए हाथ बढ़ाया और कहा –''अब तुम दम ले लो। लाओ मैं भी थोड़ा–सा श्रम कर लूँ।''

परंतु राजा ने कुदाली न लौटाई और धरती गोड़ता ही रहा। एक घंटा बीता, दो घंटे बीते। सूर्य वृक्षों के पीछे डूबने लगा। अंत में राजा ने कुदाली को धरती में मारकर कहा–

''हे ज्ञानी पुरुष, मैं अपने प्रश्नों का उत्तर पाने आपके पास आया हूँ। यदि आप उत्तर नहीं देना चाहते तो वैसा कह दीजिए, जिससे मैं घर लौट जाऊँ।''

साधु ने कहा– ''देखो, कोई दौड़ा हुआ यहाँ आ रहा है। आओ, उसे देखें।''

राजा ने घूमकर देखा कि एक दढ़ियल आदमी जंगल से दौड़ता हुआ आ रहा है। वह अपने हाथों से अपना पेट दबाए हुए था। उसके हाथों के नीचे से रुधिर बह रहा था। जब वह राजा के निकट पहुँचा

तो धीमे अस्फुट शब्दों में कुछ कहता हुआ मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। राजा और साधु ने मिलकर उसके कपड़े खोले। उसके पेट में एक बड़ा घाव था। राजा ने उसे अच्छी तरह धोया। अपने रुमाल तथा साधु के तौलिये से उस पर पट्टी बाँधी। परन्तु रुधिर न रुका राजा ने बार-बार गर्म रक्त से भीगी पट्टी खोली और घाव को धोकर फिर से पट्टी बाँधी। अंत में रुधिर का स्राव बंद हुआ और मनुष्य को कुछ चैन मिला। तब उसने पीने के लिए कुछ पानी माँगा।

राजा ने उसे ताजा पानी लाकर पिलाया। इस बीच सूर्यास्त हो चुका था और ठंडक हो आई थी। अतएव साधु की सहायता से राजा घायल आदमी को कुटी के भीतर ले गया और वहाँ उसे बिस्तर पर लिटा दिया। बिस्तर पर लेटने के पश्चात उस मनुष्य ने अपनी आँखें बंद कर लीं और चुपचाप पड़ा रहा।

परंतु राजा भी पैदल चलने के कारण और परिश्रम करने के कारण इतना थक गया था कि वह भी द्वार के सहारे लेटा और सो गया। उसे गहरी नींद आ गई। गर्मी की छोटी रात शीघ्र ही बीत गई। जब वह सवेरे उठा तो कुछ देर तक समझ न पाया कि मैं कहाँ हूँ। थोड़ी देर बाद उसे उस अपरिचित दढ़ियल व्यक्ति का हाल भी मालूम हुआ, जो बिस्तर पर लेटा हुआ बड़ी एकाग्रता से राजा की ओर दृष्टि लगाए हुए था।

जब दाढ़ीवाले पुरुष ने देखा कि राजा जगा हुआ है और मेरी ओर देख रहा है, तो उसने दुर्बल स्वर में कहा- ''मुझे क्षमा करो।''

राजा ने कहा- ''मैं तुम्हें जानता भी नहीं। फिर तुमने कोई अपराध भी नहीं किया, जिसके लिए मैं तुम्हें क्षमा करूँ।''

''तुम मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं तुम्हें जानता हूँ। मैं तुम्हारा वह शत्रु हूँ, जिसने तुमसे बदला लेने की प्रतिज्ञा की थी। कारण यह कि तुमने मेरे भाई का वध किया और उसकी जायदाद अपहृत कर ली। मुझे मालूम हुआ कि तुम साधु के पास अकेले गए हो और मैंने निश्चय किया कि जब लौटोगे तब तुम्हारी हत्या करूँगा। परंतु दिन बीत गया और तुम लौटे नहीं। इसलिए मैं तुम्हें ढूँढ़ने के लिए अपने गुप्त स्थान से निकला। तुम्हारे शरीर-रक्षकों से सामना हो गया और उन्होंने मुझे पहचानकर घायल किया। मैं उनसे बचकर भागा अवश्य, लेकिन यदि तुमने मेरे घाव की पट्टी न की होती, तो रुधिर निकलने के कारण मैं अवश्य मर जाता। मैंने तुम्हें मारना चाहा था, लेकिन तुमने मेरी जान बचाई। अब यदि मैं जिऊँ और तुम्हारी ऐसी इच्छा हो तो मैं तुम्हारा सबसे सच्चा गुलाम होकर रहूँगा और अपने पुत्रों को भी इसी बात की आज्ञा दूँगा। मुझे क्षमा करो।''

इस प्रकार घायल व्यक्ति से विदा होकर राजा बाहर आया और साधु को देखने लगा।

लौटने से पूर्व वह एक बार फिर अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए साधु से प्रार्थना करना चाहता था।

साधु बाहर घुटनों के बल खड़ा पिछले दिन गोड़ी हुई क्यारियों में बीज बो रहा था।

राजा उसके निकट जाकर बोला, -''हे ज्ञानी पुरुष, अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए मैं आपसे अंतिम बार प्रार्थना करने आया हूँ। ''

अपने दुबले पैरों को उसी भांति टेके हुए सिर ऊपर उठाकर साधु ने राजा से कहा, ''तुम्हें उत्तर मिल चुका है।''

राजा ने कहा– ''क्या उत्तर मिला? आपका क्या तात्पर्य है?''

साधु ने कहा– ''तुमने नहीं समझा। मेरी दुर्बलता पर यदि तुम कल तरस नहीं खाते और मेरी क्यारियाँ खोदे बिना लौट जाते, तो यह मनुष्य तुम पर आक्रमण करता और तुम उस समय पछताते कि मैं साधु के पास क्यों न ठहर गया। तुम्हारा सबसे मूल्यवान समय वह था जब तुम धरती खोद रहे थे।''

''सबसे आवश्यक व्यक्ति मैं था, और मेरा उपकार करना तुम्हारा सबसे परम कर्त्तव्य था। उसके बाद जब वह आदमी हम लोगों की ओर दौड़ा हुआ आया, तब सबसे मूल्यवान समय तुम्हारे लिए वह था, तुम उसकी शुश्रूषा कर रहे थे क्योंकि यदि तुमने उसकी मरहम पट्टी न की होती तो वह तुमसे मैत्रीभाव किए बिना ही मर जाता। वही तुम्हारे लिए परम आवश्यक व्यक्ति था और उसके लिए जो कुछ तुमने किया वही तुम्हारा परम कर्त्तव्य था। इसलिए यह ध्यान रखो कि वर्तमान क्षण ही सबसे महत्वपूर्ण समय है।''

''वर्तमान समय परम आवश्यक इसलिए है कि इसी समय पर तुम्हारा अधिकार है। सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति वही है जिसके साथ तुम हो –कोई नहीं जानता कि किसी दूसरे से तुम्हारी भेंट हो या न हो, और उस पर उपकार करना ही तुम्हारा परमावश्यक कर्त्तव्य है, क्योंकि इसी हेतु मनुष्य संसार में जन्म लेता है।''

–टालस्टाय

अभ्यास

I भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

विख्यात = मशहूर

आशंका = शंका होना

अपहृत =छीन ली, ले ली

ढिंढोरा पीटना = सभी को जानकारी देना

कंदरा = गुफा

सम्मति = सहमति

कुदाली = फावड़ा

रुधिर = रक्त, खून

स्राव = प्रवाह

अस्फुट शब्द = टूटे-फूटे शब्द

रक्षक = रक्षा करने वाला

(ii) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(क) साधु ने राजा को देखकर उसका----किया। (स्वागत, अपमान)

(ख) राजा ने घायल आदमी को----पानी पिलाया। (ताज़ा, गंदा)

(ग) जब राजा साधु की कुटी के सामने पहुँचा, तब वह----रहा था। (नहा, धरती गोड़)

(iii) **लिंग बदलें**

साधु	________	पंडित	________
आदमी	________	राजा	________

(iv) **समानार्थक लिखिए**

कर्त्तव्य	________	शुश्रूषा	________	स्राव	________
पंडित	________	व्यतीत	________	निश्चित	________
भविष्य	________	निर्णय	________		

(v) **शुद्ध रूप लिखें**

अपहिरत	________	कारयक्रम	________	नीरधारित	________
वयतीत	________	सूर्यासत	________	मूरछित	________

(vi) **साधु ने कहा- ''देखो, कोई दौड़ा हुआ यहाँ आ रहा है। आओ, उसे देखें।''**

–इस वाक्य में निर्देशक चिह्न है जो वक्ता की उक्ति के आरम्भ में कहा, बोला, पूछा आदि शब्दों के आगे लगता है।

– '' '' उद्धरण चिह्न है जो बोलने वाले की उक्ति को ज्यों का त्यों लिखने पर लगाए जाते हैं।

', ' चिह्न अल्प विराम का है। 'अल्प' का अर्थ है थोड़ा। वाक्य में जहाँ थोड़े समय के लिए रुकना पड़े वहाँ अल्प विराम चिह्न लगता है। इसके अतिरिक्त एक ही प्रकार के शब्दों, क्रियाओं, वाक्यांशों के मध्य, किसी के परिचय से पहले, दो वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों से पहले, वाक्यों में संबोधन से पहले, तारीख और सन् के मध्य इस चिह्न का प्रयोग होता है।

–(!) चिह्न का परिचय पहले दिया जा चुका है इसका नाम आप स्वयं बताएं।

अब नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाएं:–

1. राजा ने कहा आप थक गए हैं लाइए मुझे कुदाली दीजिए
2. राजा ने कहा मैं तुम्हें जानता भी नहीं फिर तुमने कोई अपराध भी नहीं किया जिसके लिए मैं तुम्हें क्षमा करूँ
3. साधु ने कहा देखो कोई दौड़ा हुआ यहाँ आ रहा है आओ उसे देखें
4. तुम मुझे नहीं जानते लेकिन मैं तुम्हें जानता हूँ

(vii) 1. साधु क्यारियों में बीज <u>बो रहा था</u>।

2. राजा ने शहर में ढिंढोरा <u>पिटवाया</u>।

3. सूर्य वृक्षों के पीछे <u>डूबने लगा</u>।

उपर्युक्त वाक्यों **में 'बो रहा था'** से काम का करना, **'पिटवाया'** से करवाना तथा **'डूबने लगा'** से होना प्रकट हो रहा है। अत: ये क्रिया पद हैं। **अतएव वाक्य में जिस पद से किसी काम का 'करना', 'करवाना' अथवा 'होना' प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं।**

(viii) निम्नलिखित में से क्रिया पद छाँटिए

1. उसके पेट में एक बड़ा घाव था।
2. साधु ने राजा की बातें सुनीं।
3. वहाँ उसे बिस्तर पर लिटा दिया।
4. उस मनुष्य ने अपनी आँखें बंद कर लीं।

(ix) 1. उसने पीने के लिए कुछ पानी माँगा।
2. साधु अपनी कुटी के सामने धरती गोड़ रहा था।
3. राजा सो गया।
4. वह बैठ गया।

पहले वाक्य में 'माँगने' का फल 'पानी' पर तथा दूसरे वाक्य में 'गोड़ने' का फल 'धरती' पर पड़ रहा है। अत: 'पानी' और 'धरती' कर्म हैं। इन पर क्रिया का फल पड़ने से माँगना और गोड़ना- ये सकर्मक क्रियाएँ हैं। तीसरे वाक्य में 'सोने' और चौथे वाक्य में 'बैठने' का फल सीधा क्रमश: 'राजा' और 'वह' पर पड़ रहा है। इन क्रियाओं में कर्म नहीं है अतएव ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

विशेष :- वाक्य में क्या, किसको अथवा किसे प्रश्न लगाकर यदि उत्तर हाँ में मिलता है तो क्रिया सकर्मक होगी अन्यथा अकर्मक होगी। उदाहरण: साधु अपनी कुटी के सामने धरती गोड़ रहा था। इस वाक्य में यदि प्रश्नस्वरूप 'क्या' लगा दें तो प्रश्न होगा-साधु अपनी कुटी के सामने क्या गोड़ रहा था? उत्तर होगा-धरती। अत: 'धरती' कर्म के रूप में प्रयुक्त हुआ जिसको गोड़ रहा था क्रिया की अपेक्षा है।

इसके विपरीत तीसरे वाक्य में प्रश्न स्वरूप 'क्या' 'किसको' 'किसे' प्रश्न करें जैसे:- राजा क्या/किसे/किसको सो गया? तो उत्तर नहीं मिलता है। अत: वाक्य में कर्म न होने के कारण यह अकर्मक क्रिया है।

निम्नलिखित में से सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाएँ छाँटिए।

1	राजा और साधु ने मिलकर उसके कपड़े खोले।	(सकर्मक क्रिया)
2	उसे बिस्तर पर लिटा दिया।	( )
3	वह अपने घोड़े से उतर गया।	( )
4	राजा ने घाव पर पट्टी बाँधी।	( )
5	उसने अपने हाथ से पसीना पोंछा।	( )

II विचार-बोध

(क) 1. राजा के मन में क्या विचार उठा?
2. राजा ने अपने राज्य में क्या ढिंढोरा पिटवाया?
3. राजा अपने प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए किस के पास गया?
4. प्रत्येक कार्य को करने के लिए उचित समय कौन-सा है?

(ख) 5. पहले प्रश्न के उत्तर में लोगों ने राजा को क्या-क्या बताया?
6. साधु ने राजा के प्रश्नों का क्या उत्तर दिया?

7 क्या राजा साधु के उत्तर से संतुष्ट हुआ?

8. किसने राजा को अपना शत्रु बताया और क्यों?

9. राजा ने शत्रु को क्यों क्षमा किया?

10. संसार में मनुष्य क्यों जन्म लेता है? साधु ने क्या बताया है?

III आत्म-बोध

1. अपने कर्त्तव्य को पहचानो और करो।
2. अपना कर्त्तव्य पूरा करके महान बनने वालों की जीवनियाँ पढ़िए और उनसे प्रेरणा लें।
3. जैसे राजा ने शत्रु की पट्टी की, ऐसे ही गुरु गोबिंद सिंह के युद्ध की घटना का पता करें।

पाठ-19

वायुयान के जन्मदाता : विल्बर राइट और ओरविल राइट

आज हम इक्कीसवीं सदी में रह रहे हैं। आज हवाई जहाज़ के द्वारा देश-विदेश की यात्रा करना बहुत आसान हो गया है। बच्चो आप में से जिसने अभी हवाई जहाज़ की यात्रा नहीं की उसके मन में ऊपर उड़ रहे जहाज़ को देखकर उसमें बैठने की इच्छा ज़रूर होती होगी। यदि वह जहाज़ आपके ऊपर से बहुत ही नज़दीक से उड़ रहा होता है तो आप उसे देखकर बहुत ही आश्चर्यचकित हो जाते हैं। जब तक वह जहाज़ आपकी आँखों से ओझल नहीं हो जाता तब तक आप उसे निहारते रहते हैं। सभी जहाज़ में बैठने की कल्पना ज़रूर करते हैं। परन्तु बच्चो! जब जहाज़ का आविष्कार नहीं हुआ था तब लोग सिर्फ पक्षियों को उड़ता देखकर मन में उड़ने की कल्पना करते थे।

यह सत्य है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जहाँ चाह होती है वहीं राह मिलती है। हवाई जहाज़ के आविष्कार से पहले इन्सान ने गुब्बारों से उड़ने की कोशिश की। लेकिन गुब्बारों से उड़ना वास्तव में उड़ना नहीं अपितु केवल हवा में तैरना ही था। इसके बाद ग्लाइडर के द्वारा उड़ा जाने लगा किन्तु इसमें इंजन तो होता नहीं था और ग्लाइडर की उड़ान बहुत हद तक हवा के प्रवाह द्वारा ही नियंत्रित होती थी। इस तरह उड़ने के प्रयोगों में कई आविष्कारकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। किन्तु जब इतने प्रयास हो रहे थे तो आविष्कार तो होना ही था। यह सब संभव हो सका अमरीका के दो भाइयों की लगन और अथक प्रयास के कारण। एक भाई का नाम था विल्बर राइट जिसका जन्म 16 अप्रैल 1867 को हुआ तथा दूसरे भाई का नाम था ओरविल राइट जिसका जन्म 19 अगस्त 1871 को हुआ।

विल्बर राइट और ओरविल राइट के पिता का नाम मिल्टन था जो कि एक पादरी थे। इन दोनों भाइयों को हाई स्कूल की शिक्षा भी नहीं मिली परन्तु उन्हें तरह-तरह की मशीनों से जूझने का शौक था। दोनों ही प्रखर बुद्धि के थे। उन्हें वैज्ञानिक तथा क्रियात्मक कार्यों को करने में अतीव आनन्द मिलता था। एक दिन इनके पिता दोनों के लिए एक उड़ने वाला खिलौना लाये जो छत की ऊँचाई तक उड़ सकता था। यह खिलौना हवा में सीधा उड़ता था और फिर नीचे आ जाता था। इस खिलौने को देख दोनों भाई बहुत हैरान व खुश हुए। तभी उनके मन में विचार आया कि यदि इतना छोटा-सा खिलौना छत तक उड़ सकता है तो कोई

बड़ी चीज़ ज़रूर आकाश में उड़ सकती है। दोनों भाइयों ने उसी खिलौने के जैसा बड़ा खिलौना बनाया वे बार-बार वैसा खिलौना बनाते परन्तु बड़ा होने के कारण वह बहुत कम ऊँचाई तक उड़ पाता था।

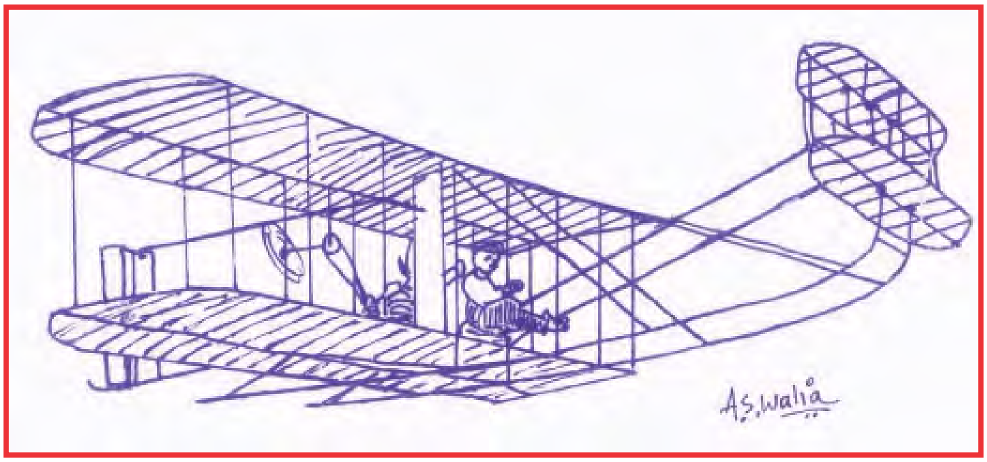

इसके बाद उन्होंने पतंगें बनानी शुरू कीं। उनकी बनाई पतंगें बहुत ही मशहूर थीं। उन्हें तरह-तरह के काम करने का शौक था। इसके बाद जब वे थोड़ा बड़े हुए तो दोनों भाइयों ने एक प्रैस खोली जिसमें वे अखबार छापने का काम करते। इस काम में उन्हें शुरू में सफलता मिली किन्तु उस समय कई प्रतिद्वंद्वी इस कारोबार में और आ चुके थे। अब कई बड़े-बड़े अखबार निकलने शुरू हो गए जिसके कारण उनका अखबार कम बिकने लगा अत: उन्होंने यह काम छोड़कर साइकिल बनाने व बेचने का काम शुरू कर दिया। उन्हीं दिनों जर्मनी के ओटोलिलिएन्थल की ग्लाइडर उड़ाने के दौरान मृत्यु हो गयी। चूँकि राइट ब्रदर्स के मन में अभी भी आकाश में उड़ान भरने की चाह थी अत: उन्होंने मन में इस सपने को साकार करने की ठान ली और हवा में उड़ने वाले जहाज़ों के लिए फिर से काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने कई वर्षों तक इस सम्बन्ध में कई परीक्षण किए। उन्हें बार-बार असफलताओं का सामना करना पड़ा परन्तु उनके लिए असफलताएँ तो केवल सफलता तक पहुँचने की सीढ़ियाँ थीं। इसी प्रयास में उन्होंने एक इंजन वाला यान तैयार किया। उन्होंने इसमें पहली उड़ान 17 दिसम्बर, 1903 में भरी। पहली उड़ान छोटे भाई ओरविल तथा दूसरी उड़ान विल्बर राइट ने भरी। इस दृश्य को उनके गाँव के पाँच लोगों ने देखा।

इस सफलता के बाद विल्बर तथा ओरविल ने इस दिशा में और सफल परीक्षण किये। विल्बर ने इसके बाद 91 मीटर की ऊँचाई तक उड़ानें भरीं किन्तु 1912 में टाइफाइड के कारण विल्बर की मृत्यु हो गयी। इससे भाई ओरविल को बड़ा धक्का लगा किन्तु उसने अपने भाई द्वारा किए गए परीक्षणों को जारी रखा और इस क्षेत्र में सतत प्रयास करते रहे। उन्होंने सन् 1916 में राइट एरोनोटिकल लेबोरेटरी खोली जिसमें उसके द्वारा हवाई जहाज़ों से संबंधित अनेक तकनीकी विकास किए गए। उन्होंने 27 मीटर की ऊँचाई पर उड़ने वाले अपने यान में 57

चक्कर लगाए। इस तरह अनेक प्रयोग करते हुए 30 जनवरी 1948 को उनकी मृत्यु हो गयी। वायुयान के विकास में दोनों भाइयों की अनुपम देन को भला कौन भुला सकता है? उन्होंने जो पहली उड़ान के समय यान प्रयोग में लाया था वह आज भी वाशिंगटन में नेशनल एयर एंड स्पेस म्यूज़ियम में रखा हुआ है।

अभ्यास

I. भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

ओझल	=	दिखाई न देना	आविष्कार	=	खोज
परीक्षण	=	प्रयोग			

(ii) इन मुहावरों/लोकोक्तियों के वाक्य बनाओ

जान से हाथ धोना	: जान गँवा देना	=	____________________________
मन में ठान लेना	: निश्चय कर लेना	=	____________________________
धक्का लगना	: दु:ख सहना	=	____________________________
जहाँ चाह वहाँ राह	: दृढ़ निश्चय होने पर रास्ता मिल ही जाता है	=	____________________________
आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है	: किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस होने पर ही उसकी खोज संभव होती है	=	____________________________

(iii) निम्नलिखित के विपरीत शब्द लिखो

नज़दीक	________	नियंत्रित	________	खुश	________
ऊँचा	________	सफलता	________	मृत्यु	________
मशहूर	________	शुरू	________	थोड़ा	________

(iv) इन वाक्यों में बताएं कि क्रिया अकर्मक है अथवा सकर्मक?

1. सभी जहाज़ में बैठने की कल्पना ज़रूर करते हैं। : ____________________
2. कई आविष्कारकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। :____________________
3. हम इक्कीसवीं सदी में रह रहे हैं। :____________________
4. वे बार-बार वैसा खिलौना बनाते। :____________________
5. इनके पिता इनके लिए एक खिलौना लाए। :____________________

(v) निम्नलिखित शब्दों को सही अक्षर लगाकर पूरा करें

देख__र, क__पना, अ__रीका, __लौना, सा__कि __, __काश, प्र__ग, गला __ड__, __रीक्षण

विचार-बोध

(क) 1. वायुयान के आविष्कार से पहले लोग उड़ने के बारे में क्या कल्पनाएँ करते थे ?

2. जब राइट ब्रदर्स के पिता उनके लिए उड़ने वाला खिलौना लाए तो उनके मन में क्या प्रतिक्रिया हुई ?

3. बचपन में राइट ब्रदर्स को किस तरह का शौक था ?

4. वायुयान को बनाने व उड़ाने के अलावा राइट ब्रदर्स ने और क्या-क्या काम किए ?

5. राइट ब्रदर्स ने सबसे पहली उड़ान कब भरी ? इस उड़ान को कितने लोगों ने देखा ?

6. विल्बर की मृत्यु के बाद ओरविल ने एरोनोटिकल लेबोरेटरी क्यों खोली ?

(ख) 1. राइट ब्रदर्स के लिए असफलताएँ केवल सफलता तक पहुँचने की सीढ़ियाँ थीं, कैसे ?

2. वायुयान के आविष्कार में राइट ब्रदर्स की अनुपम देन है। स्पष्ट करें।

आत्म-बोध

1. आप सपने देखिए और उन सपनों को पूरा करने में निरन्तर लगे रहो।
2. क्या आप का कोई सपना है ? आप उस सपने को कैसे साकार करेंगे।
3 असफलताएँ भी आपको ढेर सारी सीख देकर जाती हैं। असफल होने पर निराश मत होइए।
4 राइट ब्रदर्स के जीवन से प्रेरणा लेते हुए आप भी जीवन में कुछ रचनात्मक कार्य करने की कोशिश करें।

पाठ–20

मैराथन की दौड़

पहले जमाने में यूनान के लोग खेल–कूद में बहुत रुचि रखते थे। तब यह देश कई छोटे–छोटे पहाड़ी राज्यों में बँटा हुआ था। यूनान में ओलिम्पिस नाम का एक पर्वत है। इसकी तलहटी में प्रतिवर्ष खेल–कूद होते थे। उसमें सभी राज्यों के खिलाड़ी शामिल होते थे। इन्हीं खेल–कूद प्रतियोगिताओं को ओलिम्पिक कहते थे। इसी के नाम पर हर चार वर्ष पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली खेल–कूद प्रतियोगिताओं का नाम भी ओलिम्पिक रखा गया है। इसमें विविध प्रकार के खेल–कूद होते हैं। ओलिम्पिक खेलों में छोटी व लम्बी दूरी की अनेक दौड़ें होती हैं, 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर आदि। पर सबसे लम्बी दौड़ 41 किलोमीटर से कुछ अधिक की होती है। इस दौड़ का एक विशेष इतिहास है।

बहुत दिनों पहले ईरान का शक्तिशाली राजा दारा यूनानियों से नाराज़ हो गया। उसने यूनानियों की वीरता और बुद्धिमानी की अनेक कहानियाँ सुन रखी थीं। उसने एक बड़ी सेना लेकर यूनान पर चढ़ाई की तैयारी की। उसके मार्ग में एथेंस नाम का राज्य पड़ता था। यूनान पर आक्रमण करने के लिए एथेंस को जीतना ज़रूरी था।

दारा की सेना ने समुद्र पार कर लिया था और वह एथेंस की भूमि पर थी। एथेंस निवासियों को यह समाचार मिला तो वे बहुत चिंतित हुए। वे जानते थे कि दारा की सेना बहुत बड़ी थी। उन्होंने यूनान के एक अन्य सबल राज्य स्पार्टा से सहायता माँगने का निश्चय किया, क्योंकि स्पार्टा के से योद्धा उस

समय संसार में कहीं नहीं थे। किन्तु उनके सामने एक विकट समस्या थी– स्पार्टा एथेंस से एक सौ बानवे किलोमीटर दूर दक्षिण में था। पहाड़ी जमीन थी, ऊँची-नीची। समय कम था। घोड़े पर भी वहाँ नहीं जाया जा सकता था। मात्र पैदल ही पहुँचा जा सकता था। पर यह संदेश लेकर इतनी दूर जाएगा कौन? क्योंकि इनको विश्वास था कि संदेश मिलते ही स्पार्टा वाले अवश्य सहायता करेंगे। कई युवक संदेश ले जाने को तैयार हो गए। परंतु यह काम फिडीपिडीज नाम के बहादुर युवक को सौंपा गया। वह युवक उस वर्ष की ओलिम्पिक दौड़ों में यूनान में प्रथम आया था।

फिडीपिडीज जानता था कि यह काम कठिन है, परंतु देश की स्वतंत्रता के लिए वह अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार हो गया। मार्ग की बाधाओं और कष्टों को सहते हुए वह दो दिन और दो रात लगातार भागता रहा। उसके पाँवों में छाले पड़ गए। उसका शरीर थक कर चूर हो गया। ''मैं आराम नहीं करूँगा। मेरा देश परतंत्र नहीं होगा। मैं एक क्षण भी नहीं रुकूँगा''-यही सोचता हुआ वह अड़तालीस घंटों से कम समय में स्पार्टा पहुँच गया।

फिडीपिडीज ने हाँफते हुए कहा, ''ईरान ने यूनान पर आक्रमण कर दिया है। उनकी सेना समुद्र के किनारे मैराथन के पास उतर रही है। एथेंस वालों ने सहायता माँगी है। यदि सहायता न मिली तो सारा यूनान दास बन जाएगा। शीघ्रता करो?'' स्पार्टा वालों ने बहुत शीघ्र पहुँचने का आश्वासन दिया। थोड़ा-सा विश्राम करके वह वीर साहसी इस संदेश को लेकर लौट पड़ा। एथेंस निवासी इस संदेश को सुनकर बहुत उत्साहित हो गए। एथेंस की सेना दारा को रोकने के लिए मैराथन की ओर चल पड़ी। थका-हारा फिडीपिडीज भी अपना भाला और भारी ढाल लेकर युद्ध में शामिल हुआ। घमासान युद्ध के बाद, स्पार्टा की सेना के आने से पूर्व ही, एथेंस की सेना ने दारा को पराजित कर दिया।

फिडीपिडीज को फिर एक महान दायित्व सौंपा गया कि वह शीघ्रता से जाकर यह खुशी का समाचार एथेंस निवासियों को पहुँचा दे। मैराथन और एथेंस नगर के बीच पैंतीस किलोमीटर की दूरी थी। थका होने पर भी वह दौड़ा। एथेंस तक पहुँचते-पहुँचते उसके पाँव लड़खड़ा गए थे। नगर के फाटक बंद थे। उसने ऊँची आवाज़ में कहा, ''एथेंस की विजय हुई है। फाटक खोलो। खुशियाँ मनाओ।'' उसकी आवाज़ को पहचानकर नगर-निवासियों ने फाटक खोल दिया। उन्होंने देखा कि फिडीपिडीज के पाँव काँप रहे थे। उसका मुँह सूख गया था। बहुत धीमी आवाज़ में उसने कहा, ''हम जीत गए हैं। ईरानी हार गए हैं। यूनानी स्वतंत्र रहेंगे।'' इतना कहने पर वह वीर गिरा और फिर कभी न उठा।

इस महान बलिदान के कारण फिडीपिडीज का नाम अमर है। आज भी ओलिम्पिक की सबसे लम्बी दौड़ को मैराथन दौड़ कहते हैं। इस प्रकार उस वीर युवक को याद किया जाता है।

अभ्यास

I भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

रुचि = इच्छा, शौक आक्रमण = हमला,

चढ़ाई = आक्रमण

दायित्व = जिम्मेदारी

परतंत्र = गुलाम

आश्वासन = तसल्ली, विश्वास

सबल = शक्तिशाली

स्वतंत्र = आज़ाद, स्वाधीन

प्रतियोगिता = होड़, मुकाबला

अमर = कभी न मिटने वाला

शीघ्र = जल्दी,

(ii) **खाली स्थानों पर रेखांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए**

1. दारा यूनानियों से नाराज़ (------) हो गया।
2. उसने यूनान पर चढ़ाई (-----) की तैयारी की।
3. एथेंस को जीतना ज़रूरी (----) था।
4. स्पार्टा जैसे योद्धा (------) संसार (-----) में नहीं थे।
5. यह संदेश (------) लेकर इतनी दूर जाएगा कौन?
6. उसका शरीर (-----) थककर चूर-चूर हो गया।

(iii) **समानार्थक लिखिए**

शक्तिशाली	________	स्वतंत्रता	________	वीरता	________
कठिन	________	विश्राम	________	हार	________

(iv) **वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाँटकर लिखिए**

1. यूनान पहाड़ी राज्यों में बँटा है।
2. ईरान का शक्तिशाली राजा यूनानियों से नाराज़ हो गया।
3. उनके सामने एक विकट समस्या थी।
4. पहाड़ी जमीन थी।

(v) **मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो**

थक कर चूर होना ____

मुँह सूखना ____

पाँव लड़खड़ाना ____

(vi) **अपनी कल्पना से 5 युग्म शब्द लिखो जैसे पहुँचते-पहुँचते।**

______________ ______________ ______________

______________ ______________

(vii) **शुद्ध रूप लिखिए**

अंतरराष्ट्रीय	________	परतियोगिता	________	ओलम्पक	________
आशवासन	________	उत्साहत	________	आकरमण	________
प्रतंत्र	________	योधा	________		

(viii) **सही शब्द बनाओ**

1	सथेंए	____________
2	दालिबन	____________
3	टकफा	____________
4	रामैथन	____________
5	टरमीलोकी	____________
6	रगन	____________
7	ढ़ाईच	____________
8	पिजडीफिडी	____________

II विचार-बोध

1. ओलिम्पिस क्या है ? खेल-कूदों का ओलिम्पिक नाम कैसे पड़ा ?
2. दारा कौन था ? उसने किस पर चढ़ाई की और क्यों ?
3. चिंता में कौन पड़ गए और क्यों ?
4. वे किससे सहायता माँगना चाहते थे और क्यों ?
5. उनके सामने कौन-सी समस्या थी ?
6. फिडीपिडीज कौन था और उसे कौन-सा काम सौंपा गया था ?
7. वह कितने घंटों में स्पार्टा पहुँचा ?
8. उसे मार्ग में किन-किन कष्टों का सामना करना पड़ा ?
9. उसने हाँफते हुए क्या संदेश दिया ?
10. मैराथन के मैदान में किन-किन के बीच युद्ध हुआ ? जीत किसकी हुई ?
11. फिडीपिडीज ने अंतिम दौड़ कहाँ से कहाँ तक लगाई ?
12. उसने नगर-निवासियों को क्या संदेश दिया ?
13. मैराथन की दौड़ कितने किलोमीटर की होती है ?

III आत्म-बोध :

1. साहस और देश के लिए त्याग की कहानियाँ पढ़ो।
2. देश-सेवा के लिए तैयार रहो।
3. खेलों में भाग लेते हुए प्रसन्न रहो।
4. अपने अध्यापक से ओलिम्पिक, राष्ट्रमंडल व एशियाड खेलों की जानकारी हासिल करो।

पाठ-21

साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फौलादी हैं सीने अपने, फौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों से पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना।

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दु:ख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रास्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना।

एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इंसां, बस में कर ले किस्मत
साथी हाथ बढ़ाना।

–साहिर लुधियानवी

अभ्यास

I भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

फौलादी	=	बहुत मज़बूत	मंज़िल	=	लक्ष्य
लेख	=	भाग्य	नेक	=	अच्छा
गैरों	=	दूसरे, अन्य	खातिर	=	के लिए
दरिया	=	नदी	ज़र्रा	=	कण

(ii) **नीचे लिखे मुहवरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ**

हाथों-हाथ लगना - ________ ________________________________

हाथ साफ करना - ________ ________________________________

राई का पहाड़ बनाना - ________ ________________________________

एक और एक ग्यारह होना - ________ ________________________________

सीस झुकाना - ________ ________________________________

(iii) **पर्यायवाची शब्द लिखो**

साथी	________	सागर	________	सीस	________
बाँट	________	चट्टान	________	कतरा	________
दरिया	________				

(iv) **क्रिया शब्द चुनो**

1. एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
2. सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया।
3. एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत।
4. एक से एक मिले तो इंसां बस में कर ले किस्मत।

(v) **वचन बदलकर वाक्य बनाओ**

बाँह	________	सीना	________	राह	________
मंज़िल	________	चट्टान	________		

(vi) **उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरा करो**

1. —————— मिलकर रहना चाहिए। (सर्वनाम)
2. विविध सुमनों से मिलकर ——— बनती है। (संज्ञा)
3. नदी सागर में ———— है। (क्रिया)
4. —————— है सीना अपना। (विशेषण)
5. ———— मंज़िल सब की मंज़िल ——— रास्ता नेक। (सर्वनाम)

(vii) **विपरीत शब्द लिखो**

एक	________	मेहनती	________	गैर	________
नेक	________	फौलादी	________		

II. विचार-बोध

(क)
1. सागर ने रास्ता क्यों छोड़ा?
2. मेहनत से हम क्या-क्या कर सकते हैं?
3. दरिया कैसे बनता है?

4. भाग्य की रेखा कैसे बनती है ?

5. 'कल गैरों की खातिर' में गैरों का क्या अर्थ है ?

(ख) 1. मेहनत के महत्व पर पाँच वाक्य लिखें।

2. 'एक से मिले एक तो इंसां बस में कर ले किस्मत' पंक्ति का भावार्थ लिखो।

3. दरिया की क्या विशेषता है ?

4. इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

आत्म-बोध

1. अपने स्कूल, घर, मुहल्ले में अपने साथियों से मिलकर क्या-क्या काम करोगे जिससे आपको खुशी मिले ?

2. किसी असहाय व्यक्ति की सहायता करने का प्रण लो।

3. यह कविता समूहगान में गाएं।

4. किसी ऐसी घटना या कहानी को पढ़ो जिसमें मिलकर काम करने का अच्छा परिणाम मिला हो।

पाठ-22

आत्मबलिदान

पात्र-परिचय

महर्षि धौम्य : महान् ऋषि, पाँडवों के पुरोहित।

आरुणि
उपमन्यु | महर्षि धौम्य के शिष्य।

पहला दृश्य

[**स्थान :** धौम्य ऋषि का आश्रम। धौम्य ऋषि ध्यान मुद्रा में बैठे हैं। आरुणि का प्रवेश।]

आरुणि : (चरण छूकर) गुरुदेव, प्रणाम!

धौम्य : चिरंजीवी हो, बेटा ! कहो, कुशल है न?

आरुणि : हाँ, गुरुदेव ! आपकी कृपा है।

धौम्य : आज का मौसम कितना सुहावना है, आरुणि!

आरुणि : हाँ, गुरुदेव। ये काली घटाएँ तथा शीतल-मंद समीर चर-अचर सभी के मन में गुदगुदी कर रही है। और हाँ, आज तो मोर भी काली घटाओं को देखकर अत्यंत

आनंदित हो उठा है। वह मतवाला होकर कितना मनोरम नृत्य कर रहा है! अन्य सभी पक्षी भी मधुर आलाप कर रहे हैं। धूर्त भौंरा भी कैसी मधुर गुंजार कर रहा है!

धौम्य : हाँ, बेटा, सो तो है ही। पर देखो, उत्तर की ओर कितना घना अँधेरा होता चला जा रहा है! ऐसा जान पड़ता है कि धीरे-धीरे सारा तपोवन अँधेरे में डूब जाएगा।

आरुणि : गुरुदेव, उधर देखिए, कैसी मूसलाधार वर्षा हो रही है!

धौम्य : हाँ बेटा, इधर भी बूँदें पड़ने लगी हैं। बेटा, तुम बाहर क्यों खड़े हो, भीतर चले आओ।

(महर्षि धौम्य तथा आरुणि पर्णकुटी के भीतर चले जाते हैं।)

आरुणि : गुरुदेव, पानी कितना भी क्यों न बरसे, पर हमारी कुटिया का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता।

धौम्य : कुटिया तो मज़बूत है, बेटा। इसकी चिंता कैसी? पर......

आरुणि : (विस्मय से) पर क्या गुरुदेव, हमारे रहते हुए आपको चिंता कैसी?

धौम्य : अगर इसी तरह मूसलाधार वर्षा होती रही तो खेत की मेंड़ टूट जाएगी।

आरुणि : आप इस मामूली से काम के लिए चिंता क्यों करते हैं, गुरुदेव? मैं अभी जाकर मेंड़ मज़बूत कर आता हूँ।

धौम्य : लेकिन तुम अभी बच्चे हो। इस आँधी-पानी में कैसे जाओगे?

आरुणि : गुरुदेव, आपका आशीर्वाद मिल जाए तो फिर आँधी-पानी की क्या बिसात! उल्कापात भी आरुणि को किसी काम को करने से नहीं रोक सकते।

दूसरा दृश्य

(उपमन्यु का आश्रम में प्रवेश।)

धौम्य : बेटा उपमन्यु! देखो, घनघोर वर्षा के बाद तपोवन कैसा उजड़ा-उजड़ा हुआ दिखाई दे रहा है!

उपमन्यु : हाँ, गुरुदेव, न जाने कितने वृक्ष धराशायी हो गए हैं और कितने अपने पत्तों तथा टहनियों से हाथ धो बैठे हैं।

धौम्य : बेटा, चिंता मत करो। अब इस उपवन की सुंदरता में और भी निखार आएगा।

उपमन्यु : (एक पुष्प उठाकर) गुरुदेव, यह पुष्प टूटकर नीचे गिर पड़ा है, लेकिन फिर भी इसमें किसी प्रकार की मलिनता नहीं आई; पर यह पौधा, जिससे यह टूटकर गिरा है, कितना मुरझा गया है!

धौम्य : बेटा, यह अधखिला फूल है। इसके अलग होने के कारण इसके माता-पिता बादलों को कोसते-कोसते सुधबुध खो बैठे हैं।

उपमन्यु : गुरुदेव, पर वे बादलों को क्यों कोस रहे हैं, एक-न-एक दिन तो इसे उनसे अलग होना ही था?

धौम्य : बेटा, अभी तुम बच्चे हो, एक अधखिले पुष्प। तुम नहीं समझ पाओगे सारी बात।

उपमन्यु : गुरुदेव मैं समझा नहीं कि आप क्या कहना चाहते हैं! कृपया विस्तार से समझाइए।

धौम्य : हाँ, बेटा। अभी तुम अधखिले पुष्प के समान हो। अगर तुमको इसी पुष्प की भाँति अविकसित अवस्था में मुझ जैसे पौधे से अलग कर दिया जाए तो मुझे भी दुःख होगा। जानते हो क्यों?

उपमन्यु : हाँ, गुरुदेव, इसलिए कि आप मुझे बहुत चाहते हैं।

धौम्य : यह तो ठीक है, बेटा; लेकिन इसके अलावा एक बात और है।

उपमन्यु : वह क्या, गुरुदेव?

धौम्य : यह कि तुम अविकसित अवस्था में संसार में जाकर अपनी ज्ञान-सुरभि नहीं फैला सकते। उपमन्यु, अगर यह पुष्प पूरी तरह विकसित होकर अलग हुआ होता तो यह दसों दिशाओं में अपनी सुगंध फैलाकर सबके मन को आनंदित करता, कई लोगों द्वारा आदरपूर्वक ग्रहण किया जाता।

उपमन्यु : गुरुदेव, अब मैं सबकुछ समझ गया। (थोड़ी देर रुककर) गुरुदेव, अब संध्या का समय बीत रहा है। आप अनुमति दें तो मैं पुष्प ले आऊँ।

धौम्य : तुम जाकर क्या करोगे? आरुणि तो यहीं था। वह ज़रूर पुष्प लाया होगा।

उपमन्यु : जैसी आज्ञा, गुरुदेव!

(गुरुदेव 'आरुणि', 'आरुणि' कहकर आवाज़ देते हैं, पर कोई उत्तर नहीं आता।)

धौम्य : उपमन्यु, आरुणि का उत्तर क्यों नहीं आ रहा? पता नहीं वह कहाँ है!

उपमन्यु : गुरुदेव, मैं अभी पता करके आता हूँ।

(उपमन्यु इधर-उधर ढूँढ़ता हुआ कुटिया में पहुँचकर पता करता है और फिर लौटकर कहता है) गुरुदेव, खेत की मेंड़ टूटी हुई थी, कहीं सारा पानी न बह जाए, इसीलिए आरुणि खेत पर मेंड़ बाँधने गया है।

धौम्य : पर वह अभी तक आया क्यों नहीं? इतनी देर का कोई काम नहीं था। तूफान को रुके हुए भी बहुत देर हो गई है। वह बिना कारण रुकनेवाला नहीं है। कुछ समझ नहीं आता। चलो, उसका पता लगाएँ।

उपमन्यु : पर गुरुदेव, आप संध्या कर लीजिए।

धौम्य : संध्या करने से अधिक आवश्यक है आरुणि को ढूँढ़ना। थोड़ी-सी देरी किसी भारी विपत्ति का कारण बन सकती है।

उपमन्यु : जैसी आज्ञा, गुरुदेव!

(गुरु-शिष्य दोनों आरुणि का पता लगाने के लिए खेत की तरफ चल देते हैं।)

तीसरा दृश्य

(खेतों में चारों तरफ पानी है। कहीं कुछ सूझता नहीं।)

धौम्य : उपमन्यु!

उपमन्यु : हाँ, गुरुदेव।

धौम्य : बेटा, इस अँधेरी रात में तो कहीं हाथ को हाथ नहीं सूझता। ज़रा ज़ोर से आवाज़ दो, जिससे पता चले कि आरुणि किस दिशा में है।

उपमन्यु : (ज़ोर से आवाज़ देता है) आरुणि! आरुणि!! गुरुदेव, इधर से तो कोई आवाज़ नहीं आती।

धौम्य : आओ, उधर चलकर आवाज़ देते हैं।

(थोड़ा हटकर महर्षि स्वयं आवाज़ देते हैं।)

धौम्य : बेटा आरुणि! आरुणि! किधर हो, बेटा? जल्दी बोलो, बेटे, मैं तुम्हारे बिना बेचैन हूँ।

आरुणि : (प्रत्युत्तर में) गुरुदेव, आप चिंता मत कीजिए, मैं यहाँ.... (कहता हुआ रुक जाता है।)

धौम्य : पीछेवाले खेत से? अच्छा ! आओ जल्दी चलें, उपमन्यु।

(दोनों पीछेवाले खेत पर पहुँचते हैं।)

धौम्य : (आवाज़ लगाते हुए) आरुणि, मेरे पास आओ, बेटे।

(आरुणि उठकर आता है और गुरु के चरण छूता है।)

धौम्य : (उठाकर हृदय से लगाते हुए) चिरंजीवी हो, बेटा! तुम यहाँ इस तरह क्यों पड़े हो? तुम्हें वापस आ जाना चाहिए था। मेंड़ फिर बाँध लेते।

आरुणि : (ठंड से काँपता हुआ) गुरुदेव, जब मैं मेंड़ बाँधने लगा तो पानी के तेज़ बहाव के कारण काफी मिट्टी बह गई। मेरा हर प्रयत्न बेकार रहा।

धौम्य : तो फिर?

आरुणि : फिर मैंने सोचा, आश्रम जाकर यह ख़बर देने तक तो खेत की सारी मिट्टी बह जाएगी। इससे कितना नुकसान होगा। इसीलिए पानी के बहाव को रोकने के लिए मैं स्वयं मेंड़ बनकर लेट गया!

धौम्य : बेटा, पानी में लगातार देर तक इस तरह लेटने से तुम्हें कुछ हो जाता तो?

आरुणि : गुरुसेवा शिष्य का परम धर्म है। ऐसा करते हुए यदि प्राण भी चले जाएँ तो चिंता किस बात की?

धौम्य : बेटा, मैं तुम्हारी असीम गुरुभक्ति से बहुत खुश हूँ। बोलो, तुम्हें क्या वरदान दूँ?

आरुणि : (हाथ जोड़कर) गुरुदेव, आप जैसे गुरु को पाकर मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस, यही कामना है कि मुझपर आपकी कृपा-दृष्टि हमेशा बनी रहे।

धौम्य : (आरुणि के सिर पर हाथ रखकर) बेटा, तुम और उपमन्यु मेरे सबसे प्रिय शिष्य हो। तुम दोनों को जितना मैं जानता हूँ उतना शायद तुम भी स्वयं को नहीं जानते। मुझे मालूम था कि तुम यही कहोगे। मुझे तुम पर गर्व है। चलो, अब आश्रम चलें।

(महर्षि धौम्य, उपमन्यु तथा आरुणि को साथ लेकर चल देते हैं। परदा गिरता है।)

अभ्यास

I भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

चर-अचर	=	जड़ और चेतन	मेंड़	=	खेत के इर्द-गिर्द मिट्टी का बनाया घेरा, मेड़
धूर्त	=	छली, कपटी	विपत्ति	=	मुसीबत
मूसलाधार	=	तेज़ बारिश	आलाप	=	बातचीत, चहचहाहट (पक्षियों के संदर्भ में)
पर्णकुटी	=	पत्तों से बनी कुटिया	मंद	=	धीरे
बिसात	=	सामर्थ्य	विस्मय	=	हैरान
उल्कापात	=	जलते तारों का टूटकर गिरना			
धराशायी	=	गिर जाना, पूरी तरह से गिरकर नष्ट हो जाना			

(ii) **मुहावरों के वाक्य बनाइए**

मुहावरा		अर्थ	वाक्य
मन में गुदगुदी होना	:	मन खुश होना	____________________________
अंधेरे में डूब जाना	:	अँधेरा होना	____________________________
हाथ धो बैठना	:	खो देना, गंवा देना	____________________________

सुधबुध खो बैठना	:	होश खो देना	________________________
हाथ को हाथ न सूझना	:	घना अंधकार होना	________________________

(iii) **शुद्ध रूप लिखो**

अतिअंत	________	मुसलाधार	________	गुरूदेव	________
आशीरवाद	________	पुश्प	________	मलीनता	________
ग्रहण	________	सुरभी	________	गियान	________
गुरूभकती	________	महार्षि	________		

(iv) **प्रत्येक शब्द को उसके सही स्थान पर लिखें**

तुम्हें, कुटिया, मज़बूत, फूल, विकसित, लेटना, वह, मिट्टी, आप, आना, चलना, काली, खेत, तेज़, डूबना, मुझे

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
कुटिया	तुम्हें	मज़बूत	लेटना
____________	____________	____________	____________
____________	____________	____________	____________
____________	____________	____________	____________

(iv) **विपरीत शब्द लिखो**

कुशल	________	मधुर	________	अँधेरा	________
मज़बूत	________	सुगंध	________	ग्रहण	________
आशीर्वाद	________	बाँधना	________	प्रिय	________
शिष्य	________	नुकसान	________	संध्या	________

(iv) **समानार्थी शब्द लिखो**

नृत्य	________	पक्षी	________	वर्षा	________
चिंता	________	बादल	________	पौधा	________
अनुमति	________	विपत्ति	________	ज़रूर	________

(**II**) **विचार-बोध**

(क)
1. आरुणि ने गुरु धौम्य से किस प्रकार सुहावने मौसम का वर्णन किया ?
2. आरुणि तेज़ आँधी और वर्षा में भी मेंड़ बाँधने जाने से क्यों नहीं डरता ?
3. गुरु धौम्य ने उपमन्यु को अधखिला पुष्प क्यों कहा ?
4. गुरु धौम्य और उपमन्यु किसे ढूँढ़ने निकले और क्यों ?
5. गुरु धौम्य ने उपमन्यु को आरुणि को ढूँढ़ने के लिये क्या करने को कहा ?

(ख) 1. आरुणि ने खेत की मेंड़ टूटने की गुरु की चिंता को किस प्रकार दूर किया?

2. गुरु धौम्य के द्वारा वरदान देने पर आरुणि ने गुरु से क्या कहा?

3. गुरु धौम्य अपने शिष्यों पर क्यों गर्व महसूस करते थे?

(III) आत्म-बोध

1. अपने माँ-बाप, गुरु और ईश्वर पर श्रद्धा रखें और उनके बताये रास्ते पर चलें।

2. त्याग और समर्पण की भावना आपसी रिश्ते को और भी सुदृढ़ करती है।

3. आप जिस काम को करने के लिए किसी से वादा करते हैं तो उसे हर हाल में करना ही श्रेयस्कर माना जाएगा।

पाठ-23

बाबू जी बारात में

बाबू गजनंदन लाल पुरानी दिल्ली के एक पुराने मोहल्ले में रहते थे। वजन उनका कुछ बहुत भारी नहीं था, कुल दो मन बीस सेर के थे। लेकिन इतना तेज़ चलते थे कि लोग उन्हें देख पाएँ, इसी बीच में धमक-चाल से चलते हुए वह दूर निकल जाते थे। कॉलेज में पढ़ाते थे लेकिन बस में बैठे उन्हें कभी किसी ने नहीं देखा। बात यह थी कि जब शुरू-शुरू में नई बसें आयीं, तो उनके दरवाज़े कुछ तंग थे। बाबू गजनंदन लाल दरवाज़े में फँस गये। ऊपर से कंडक्टर चीख रहा है, नीचे से चढ़ने वाले चिल्ला रहे हैं, पर बाबू गजनंदनलाल हैं कि हँसे जा रहे हैं। काफी ज़ोर लगाने के बाद बोले, 'देखो भाई, शोर मत मचाओ। कहीं मेरा बैलेंस बिगड़ गया, तो बस उलट जाएगी।''

फिर तो वह ठहाका लगा कि बस सचमुच उलटते-उलटते बची! अच्छा यही हुआ कि उस झटके के साथ बाबू गजनंदनलाल नीचे आ गये। उन्होंने वहीं पर कान पकड़े, ''मैं अब कभी बस में नहीं चढ़ूँगा। देखो तो कैसा पिचक गया हूँ।''

एक बार ऐसा हुआ कि उन्हें अपने एक मित्र के लड़के की बारात में जाना पड़ा। बारात काफी दूर जा रही थी, इसलिए वर के पिता ने एक नई बस किराये पर ली। बाबू गजनंदन का ख्याल करते हुए उन्होंने यह भी देख लिया कि बस का दरवाज़ा काफी चौड़ा है। बाबू गजनंदन बहुत खुश हुए। बोले, ''आप बहुत चतुर हैं। जानते हैं कि मेरे कारण बारात में खूब मज़ा रहेगा, इसलिए मेरा बड़ा ध्यान रखते हैं!''

और सचमुच जिस घड़ी बाबू गजनंदन लाल पधारे, उसी घड़ी से ठहाके लगने शुरू हो गए। लेकिन बाबू गजनंदन कुछ उदास दिखाई दे रहे थे। एक मित्र ने पूछा, ''बाबू जी, बारात में जाते समय आप उदास क्यों हो गए?''

बाबू जी ने उत्तर दिया, ''क्या बताऊँ भाई, सवेरे जब चलने लगा, तो माँ बोली- बेटा, तुझे हो क्या गया है? दिन-पर-दिन सूखता जा रहा है, खुराक घट रही है। यहाँ तो मैं तेरा ध्यान रखती हूँ। बारात में तेरी देखभाल कौन करेगा? सो बेटा , तू संकोच मत करियो, खूब खाइयो।''

यह कहकर बाबू गजंनदन लाल थोड़ा मुस्कराये। बोले, ''बेचारी माँ! उसे क्या पता कि मैं बारात में जाने के लिए एक सप्ताह से आधे दिन का उपवास कर रहा हूँ। भला सोचो, लड़की वाले का ख्याल भी तो रखना है। बेचारा बड़े चाव से तरह-तरह के पकवान और मिठाइयाँ बनवाएगा और तुम आजकल के छोकरे, मिठाई से तुम्हें सख्त परहेज है। पकवान खाने से तुम्हारे पेट में दर्द हो जाता है। मैं तुम्हारी मदद करने के लिए ही तो जा रहा हूँ। जब लौटूँगा, तो माँ देखकर बहुत खुश होगी। समझ जाएगी कि उसका बेटा भोला नहीं है.....

उनकी बातें सुनकर बाराती खूब हँसे, वह भी हँसे, इतने कि तोंद नाचने लगी। तभी अचानक क्या हुआ कि बस एक झटके के साथ रुक गयी। पहले तो कोई कुछ नहीं बोला, फिर सब बाहर झाँकने लगे। चारों ओर हरे-भरे खेत थे और सामने एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन नज़र आ रहा था। उन्होंने समझा

कि शायद यहाँ से कोई बाराती चढ़ने वाला है, लेकिन तभी ड्राइवर ने आकर कहा, ''आप सब लोग नीचे उतर जाएँ। पहिए में पंक्चर हो गया है। सुधारने में कुछ देर लगेगी।''

''लो, सिर मुँडाते ही ओले पड़े! आखिर हुआ क्या, बिल्कुल नई बस है कैसा खराब जमाना आ गया है। लोग बेईमान हो गये हैं। नये टायर भी इतने रद्दी।''

इसी तरह की बातें करते हुए बाराती धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे। खेतों में काम करने वाले बहुत से देहाती भी वहाँ आकर जमा हो गए और जब उन्होंने बाबू गजनंदन लाल को धमक-चाल से नीचे उतरते हुए देखा, तो कोरस में अट्टहास करके चिल्ला उठे, ''हम भी कहें कि नई बस क्यों बिगड़ी। यह हाथी का बच्चा इसमें सवार जो था।''

बाबू गजनंदन लाल भी ज़ोर से हँसे, इतने कि तोंद बिलबिला उठी। बोले, ''तुम लोग समझदार मालूम होते हो। मेरा नाम गजनंदन है और उसका मतलब होता है, हाथी का बच्चा।''

एक युवक ने कहा, ''कितना वज़न होगा तुम्हारा?''

सहसा बाबू गजनंदन लाल की आवाज़ गिर गयी, ''वज़न की न पूछो, भाई, बहुत कमज़ोर हो गया हूँ।''

अब तक उन हँसते हुए देहाती युवकों ने उनको घेर लिया था। बोले, ''स्टेशन पर तोलने की मशीन लगी है। चलो देख लेते हैं।''

गजनंदन बोले, ''हाँ-हाँ, चलो।''

और सर्कस के हाथी की तरह आगे-आगे झूमते हुए वह, और पीछे-पीछे ठहाका लगाते हुए देहाती सब स्टेशन पर पहुँचे। मशीन पर खड़े हुए तो वज़न कुल दो मन पाँच सेर निकला। एक युवक ने कहा, ''यह शरीर और यह वज़न! तुम तो अपने शरीर को लजा रहे हो।''

बाबू गजनंदन लाल बोले, ''लाज तुम लोगों को आनी चाहिए। खेत में अनाज उगाते नहीं। दोष मुझे देते हो। अनाज नहीं होगा, तो मैं खाऊँगा क्या?''

इतना सुनना था कि सब चुप हो गए। बाबू जी ने चारों ओर देखा। बोले, ''यह क्या, तुम चुप क्यों हो गए?'' अरे, खूब हँसो और अन्न उगाओ। तब देखना पूरे ढाई मन की लाश हो जाऊँगा।''

और वह हँस पड़े। सभी लोग हँस पड़े। सबने वचन दिया कि वे खूब मेहनत करेंगे और खूब अनाज उगायेंगे।

आखिर बस ठीक हो गयी और हँसते-खिलखिलाते बारात जनवासे तक सकुशल पहुँच गयी। वहाँ खूब-स्वागत सत्कार हुआ। जिसे देखो वही बाबू गजनंदन लाल की ओर माला लिये बढ़ा आ रहा है। वर यह देखकर बहुत उदास हो गया। अपने साथी से बोला, ''पिता जी ने बाबू गजनंदनलाल को साथ लाकर बड़ी ग़लती की। सब लोग उन्हीं की ओर देखते हैं, मेरी ओर कोई नहीं देखता!''

जब नाश्ते का बुलावा आया, तब भी वही सबसे आगे थे और जीमते समय भी सबके बीच में गणेश जी की तरह डटकर बैठ गए। हर शुभ कार्य में सबसे पहले गणेश जी की ही पूजा होती है, सो कन्या पक्ष के लोग सबसे पहले उन्हीं की ओर आते। बाराती बार-बार कहते, ''नहीं-नहीं, इतना नहीं थोड़ा परोसो, राशन का ज़माना है।''

बाबू गजनंदन थोड़ी देर तो सुनते रहे, फिर बोले, ''मैं तो समझा था कि यहाँ के लोग बड़े समझदार होते हैं, लेकिन देखता हूँ आप लोगों को अकल छू भी नहीं गयी है।''

सन्नाटा छा गया। सब लोग परेशान होकर उनकी ओर देखने लगे। एक बुज़ुर्ग ने किसी तरह हाथ जोड़कर पूछा, ''हमसे क्या ग़लती हुई, साहब?''

बाबू गजनंदन बोले, ''ग़लती और क्या हो सकती है, आप इतना भी नहीं जानते कि आजकल अनाज की कमी है। उनके आगे ज्यादा अन्न परोसकर आप अन्न को खराब कर रहे हैं।'' फिर गम्भीर होकर बारातियों से कहा, ''भाइयो, आजकल अन्न की कमी है। हम उधार पर जी रहे हैं जूठा छोड़ना पाप है। तुम जितना खा सको अपनी ओर रखो, बाकी मेरी तरफ आने दो। फिर देख लेना, जो जूठन छोड़ूँ। जूठन छोड़ने वाले पर लानत भेजता हूँ।''

फिर तो वह ठहाका उठा कि लोग भागे-भागे आये। और इस तरह सब काम हँसी-खुशी के साथ पूरे होने लगे। बारात धूम-धाम से चढ़ी। अपनी चिर-परिचित तंग मोहरी की पतलून पहने बाबू गजनंदन आगे-आगे थे। अंग्रेज़ी बाजे को देखकर लोग इतने खुश नहीं हुए, जितने उनकी थिरकती हुई तोंद को देखकर। सब हँसते-हँसते दोहरे होने लगे। इसी हँसी में विवाह के सब काम पूरे होने लगे। फेरे भी पूरे हो गये, पर तभी वहाँ पर कुछ परेशानी नज़र आयी। बाबू गजनंदन ने पूछा, ''क्यों, भई, क्या बात है?''

वर के भाई ने कहा, ''कोई खास बात नहीं , चाचा जी, फोटोग्राफर वर-वधू का फोटो खींचना चाहता है। वह चाहता है कि बहू ज़रा हँसे। लेकिन वह सिर नीचा किए बैठी है, मुँह ऊपर उठाती ही नहीं!''

बाबू गजनंदन बोले, ''अरे, तो इसमें क्या बात है, आओ मेरे साथ।''

और धमक-चाल से दौड़ते हुए वह मंडप में आ खड़े हुए। देखा कि सभी लोग बहू से प्रार्थना कर रहे हैं, ''बेटा , ज़रा हँस दो। बस एक बार ज़रा मुस्करा दो।''

बाबू गजनंदन हाँफते-हाँफते एकाएक बोल उठे, ना-ना, बेटी, हँसना मत, मोती झर जायेंगे। बस तुम ज़रा एक बार मेरी ओर देख लो।''

नई आवाज़ थी और नई बात भी। बहू ने एकाएक सिर उठाकर जो उनकी ओर देखा, तो जैसे धूप खिल उठी। वह हँस पड़ी। बस उसी क्षण फोटोग्राफर ने एक-एक करके कई चित्र उतार लिये। फिर उनकी ओर मुड़कर कहा, बाबू साहब, जो कोई नहीं कर सका, वह आपने कर दिखाया। बहुत-बहुत शुक्रिया।''

बाबू गजनंदन सहसा कठोर होकर बोले, ''वाह जनाब, यह भी, खूब रही। शुक्रिया से मेरी भूख मिटने वाली नहीं है। अभी एक सुन्दर-सा फोटो मेरा भी उतारो। माँ को जाकर दिखाना होगा कि मैंने अपना कितना ध्यान रखा है।''

और सचमुच वह फोटो खिंचवाकर ही वहाँ से हटे। आज भी वह फोटो उनके कमरे में लगा हुआ है। मोटे-मोटे अक्षरों में उस पर लिखा हुआ है- बाबू गजनंदन लाल बारात में!

अभ्यास

I. भाषा-बोध

(i) शब्दार्थ

परहेज	= किसी चीज़ से दूर रहना		सकुशल	=	ठीक-ठाक
बुजुर्ग	= बूढ़ा		मंडप	=	शामियाना
चिर-परिचित	= पुरानी जान-पहचान		जीमते समय	=	भोजन करते समय
जनवासा	= बारातियों के ठहरने की जगह		कोरस	=	एक साथ मिलकर, वृन्दगान
उपवास	= व्रत		अट्टहास	=	ज़ोर की हँसी

(ii) मुहावरों का वाक्यो में प्रयोग करो

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
ठहाका लगाना	ज़ोर से हँसना	____________________
सिर मुंडाते ओले पड़ना	शुरू में ही बाधा पड़ना	____________________
सन्नाटा छा जाना	चुप्पी रह जाना	____________________
ढाई मन की लाश होना	स्वस्थ होना	____________________
दिन पर दिन सूखते जाना	कमज़ोर पड़ते जाना	____________________
कान पकड़ना	किसी बात से तौबा करना	____________________
हाथी का बच्चा	बहुत मोटा	____________________
अक्ल छू भी न जाना	बिल्कुल मूर्ख होना	____________________
लानत भेजना	कोसना, धिक्कारना	____________________
धूप खिल उठना	चेहरे पर रौनक आ जाना	____________________

(iii) शुद्ध करके लिखें

अनन	________	सनाटा	________	फोटोगराफर	________
अटहास	________	चिलाना	________	कंडकटर	________
मुसकराए	________	डराइबर	________	पनचर	________
बुर्जग	________	शुकरिया	________		

(iv) वचन बदलो

बेटा	________	मित्र	________	हाथी	________
युवक	________	देहाती	________	कार्य	________
ग़लती	________	बहू	________		

(v) इन वाक्यों को भूतकाल तथा भविष्यकाल में लिखो

हम उधार पर जी रहे हैं।

आजकल अन्न की कमी है।

मेरी भूख मिटने वाली नहीं है।

(vi)(क) 1. बाबू गजनंदन लाल का वज़न दो मन बीस सेर था।

2. उनका वज़न बहुत भारी नहीं था।

3. दरवाज़े कुछ तंग थे।

उपर्युक्त पहले वाक्य में रेखांकित शब्द, 'दो मन बीस सेर' बाबू गजनंदन लाल (संज्ञा) की निश्चित माप-तोल का दूसरे वाक्य में 'बहुत' उनका (सर्वनाम) की अनिश्चित माप तोल विशेषता का तथा 'कुछ' शब्द से दरवाज़े (संज्ञा) की अनिश्चित माप तोल विशेषता का पता चलता है अत: रेखांकित शब्द विशेषण है। **अत: जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित माप तोल विशेषता के बारे मे बताते हैं उन्हें निश्चित परिमाण वाचक तथा जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चित माप तोल विशेषता के बारे में बताते हैं उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।**

यह मिठाई खाने लायक है।

वे बाराती आ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यह' और 'वे' शब्द क्रमश: 'मिठाई' और 'बाराती' (संज्ञा शब्दों) की ओर संकेत करते हैं। अत: ऐसे शब्द संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं।

अतएव जो सर्वनाम संकेत द्वारा संज्ञा आदि की विशेषता बताते हैं वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं।

क्योंकि संकेतवाचक विशेषण सर्वनाम शब्दों से बनते हैं अतएव ये सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

निम्नलिखित में से विशेषण शब्दों को रेखांकित करो

1. इतना नहीं थोड़ा परोसो।
2. मैं एक सप्ताह से आधे दिन का उपवास कर रहा हूँ।
3. ये गजनंदन लाल जी हैं।
4. यह हाथी का बच्चा इसमें जो सवार था।
5. ये लोग बहू से प्रार्थना कर रहे हैं।

II विचार-बोध

(क) 1. बाबू गजनंदन लाल कहाँ रहते थे?

2. बाबू गजनंदन लाल का वज़न कितना था?

3. बाबू गजनंदन लाल के कमरे में लगी फोटो पर मोटे अक्षरों में क्या लिखा हुआ है?

4. बहू को किसने हँसाया?

(ख) 1. बारात में जाते समय बस झटके के साथ क्यों रुक गई?

2. बाबू गजनंदन लाल का स्वभाव कैसा था?

III आत्म-बोध

1. हंसी और मनोरंजन का महत्व समझो।
2. रोज़ थोड़ी देर अवश्य हँसो।

पाठ–24

ईमानदार बालक

पहला दृश्य

(स्थान–बाजार। बसंत फटे कपड़े पहने, थैले में सामान रखे उन्हें बेचने का प्रयत्न करता है।)

बसंत – छन्नी ले लो, बटन ले लो, दियासलाई ले लो। (इतने में मज़दूर–नेता राजकिशोर को देखकर उनके पीछे पड़ता हुआ।) साहब बटन लीजिए, देशी बटन। साहब। दियासलाई लीजिए।

राजकिशोर – नहीं भाई, कुछ नहीं चाहिए।

बसंत – (रुआँसा) साहब, सवेरे से अब तक कुछ नहीं बिका। एक तो ले लीजिए।

राजकिशोर – (जेब से पैसे निकालकर) तुम तो अच्छा, तुम्हें पैसे चाहिए? ये लो पैसे और जाओ।

बसंत – (एकदम) नहीं साहब, नहीं। मैं पैसे नहीं लूँगा। आप छन्नी ले लें।

राजकिशोर – भाई, मेरे पास पूरे पैसे नहीं हैं। होते तो ले लेता, नोट हैं। मेरे घर किशनगंज आना, वहीं ले लूँगा।

बसंत – लाइए, मैं बाज़ार से छुट्टा ला सकता हूँ। (नोट लेकर) आप यहीं ठहरें, मैं पलक मारते ही आया (बसंत जाता है। कुछ समय बीतने पर राजकिशोर उत्सुक होकर बाज़ार की ओर देखते हैं। तभी उनका परिचित कृष्णकुमार उन्हें देखकर ठहर जाता है।)

कृष्ण कुमार – कहिए पंडित जी, आप यहाँ कैसे?

राजकिशोर – भाई, एक लड़का छन्नी दे गया और मुझसे नोट लेकर भुनाने गया है। अभी तक लौटा नहीं। पंद्रह–बीस मिनट हो गए।

कृष्ण कुमार – तो बस, वह अब नहीं आएगा। बाज़ार के हर कोने पर आजकल ऐसे लड़के मिलते हैं, जिनका काम गिड़गिड़ाकर लोगों को ठगना है। पर हाँ, आपको क्या? आप तो गरीब मज़दूरों के सेवक हैं। ले भी गया, तो घर में ही है।

राजकिशोर – पर भाई, वह लड़का तो मुझे भला लगता था। चलो, कोई बात नहीं। समझेंगे एक रुपया देकर यह भी एक पाठ पढ़ा।

(दोनों जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

(स्थान–किशनगंज। बसंत का भाई प्रताप राजकिशोर का घर ढूँढ़ रहा है।)

प्रताप – (एक व्यक्ति से) क्यों भाई पं० राजकिशोर जी कहाँ रहते हैं?

व्यक्ति – कौन? वे जो मज़दूरों के नेता हैं? वे उस नीले परदे वाले घर में रहते हैं। (प्रताप उस घर के दरवाज़े पर जाकर राजकिशोर जी को पुकारता है। राजकिशोर बाहर आता है।)

राजकिशोर – क्यों भाई क्या बात है?

प्रताप – जी, मुझे मेरे भाई ने भेजा है। आज दोपहर को उसने आपको एक छन्नी दी थी। आपसे नोट लेकर भुनाने गया था। किन्तु जब भुनाकर लौट रहा था, तो मोटर के नीचे आ गया। उसके दोनों पैर कुचले गए। वह बेहोश हो गया, इसलिए वह आपके पैसे देने न आ सका। बड़ी मुश्किल से उसे घर ले गए। बड़ी देर में जब उसे होश आया, तो उसने मुझे आपके पैसे लौटाने को कहा। मैं आपके पैसे लाया हूँ।

राजकिशोर – तुम्हारे घर में कौन है?

प्रताप – कोई नहीं। मैं और मेरा भाई, हम दोनों भाई भीखू अहीर के घर में रहते हैं। दंगों के दिनों में हमारे माँ–बाप को किसी ने मार डाला.......... (रो पड़ता है।)

राजकिशोर – बच्चे रोओ मत। मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ। (अन्दर की ओर पुकारकर) अमरसिंह मैं अहीर टोला जा रहा हूँ। तुम इसी वक्त डा० वर्मा को लेकर वहाँ जल्दी आओ। भीखू अहीर का घर पूछ लेना।

(प्रताप को साथ लेकर चलते हैं।)

तीसरा दृश्य

(स्थान–भीखू अहीर का घर। बसंत ज़मीन पर पड़ा कराहता है। भीखू उसे डाँट रहा है)

भीखू – बड़ा दर्द है? दर्द नहीं तो क्या आराम मिलेगा? अस्पताल चला जाता, वहाँ आराम मिलता।

बसंत – चाचा तुम ही अब मुझे अस्पताल पहुँचा दो।

भीखू –मैं पहुँचा दूँ? हैं .... मुझे बड़ी रकम सौंप रखी है?

(प्रताप और राजकिशोर का प्रवेश)

प्रताप –यह रहा साहब।

बसंत – आप? आप आए हैं आप न जाने क्या सोचते होंगे?

राजकिशोर – चिंता न करो, बेटा! मैने डाक्टर को बुलाया है। तुम ठीक हो जाओगे।

(डॉक्टर का प्रवेश)

डाक्टर – हैलो पंडित जी! तो यह लड़का है? मैंने भी इसे बाज़ार में देखा है। (बसंत को देखकर) ऐसा लगता है कि एक पैर की हड्डी टूट गई है। इसे अभी अस्पताल ले जाना चाहिए।

राजकिशोर – मैं एंबुलेंस के लिए फोन कर आता हूँ। जब तक मैं नही आता,आप यहीं रहें। इसे बचाना ही होगा। यह ग़रीब है, पर इसमें एक दुर्लभ गुण है। यह ईमानदार है।

(राजकिशोर जाता है। डॉक्टर सुई लगाता है। प्रताप भाई का सिर पकड़ता है और पर्दा गिरता है।)

श्री विष्णु प्रभाकर

अभ्यास

I. भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थः**

छन्नी = द्रव पदार्थ आदि छानने का महीन कपड़ा, छलनी

रुआँसा = रोने को होने वाला

छुट्टा = रेज़गारी

भुनाना = रुपए को सिक्कों में बदलवाना

ऐंबुलेंस = घायलों एवं बीमारों को लिटाकर अस्पताल ले जाने वाली गाड़ी

दुर्लभ = कठिनाई से मिलने वाला

(ii) **शुद्ध करके लिखें**

रूपया	________	मजदूर	________	परिचीत	________
बजार	________	उत्सूक	________	असी	________
इमानदार	________	सूई	________	जलदी	________
पल्क	________				

(iii) **मुहावरों को वाक्यों में प्रयुक्त करो**

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
पलक मारते ही आना	झटपट आ जाना	______________________
गिड़गिड़ाकर ठगना	दीनतापूर्वक प्रार्थना करने का नाटक करके लूटना	______________________
घर में ही होना	घर की बात, घर का मामला	______________________
पाठ पढ़ना	सबक लेना, सीख लेना	______________________

(iv) **अंतर समझो व वाक्यों में प्रयोग करो**

शब्द	अर्थ	वाक्य
लौटा	'लौटना' क्रिया का भूतकाल रूप	______________________
लोटा	जल रखने का धातु का बना एक बर्तन	______________________
भुनाना	भूनने का काम करना	______________________
भुनाना	रुपए को सिक्कों में बदलवाना	______________________
भेजा	भेजना	______________________
भेजा	खोपड़ी के अंदर का गूदा, मगज	______________________
दिया	'देना' का भूतकाल	______________________
दिया	दीपक	______________________

(v) **समानार्थक शब्द लिखो**

माँ-बाप : ____________

सेवक : ____________

ग़रीब : ____________

जल्दी : ____________

घर : ____________

दर्द : ____________

डॉक्टर : ____________

(vi) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो**

जिसकी जानकारी हो चुकी हो : ____________

जहाँ रोगियों की चिकित्सा होती है : ____________

दवा-इलाज करने वाला : ____________

ईमान पर चलने वाला : ____________

(vii) पाठ में आए अंग्रेज़ी शब्दों को छाँटकर लिखो

(viii) निर्देशानुसार उत्तर लिखो:

(क) राजकिशोर कहाँ रहते हैं? (वाक्य को भूतकाल में बदलो)

(ख) मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। (वाक्य को भविष्यकाल में बदलो)

(ग) प्रताप भाई का सिर पकड़ता है। (वाक्य को भविष्यकाल में बदलो)

(घ) वे मज़दूरों के नेता हैं। (वाक्य को भूतकाल में बदलो)

(ङ) वह नोट भुनाने गया है। (वाक्य को वर्तमान काल में बदलो)

II विचार-बोध

(क) 1. बसंत बाज़ार में क्या-क्या बेच रहा था?

2. राजकिशोर ने बसंत से कोई भी सामान न खरीद पाने का क्या कारण बताया?

3. बसंत बार-बार राजकिशोर से कोई भी चीज़ लेने को क्यों कह रहा था?

4. कृष्णकुमार के अनुसार बाज़ार के हर कोने में किस तरह के लड़के मिलते हैं?

5. बसंत का काफी देर प्रतीक्षा करने पर राजकिशोर क्या सोचकर घर चल दिए?

(ख) 1. प्रताप राजकिशोर जी के घर क्यों गया था?

2. राजकिशोर प्रताप के साथ उसके घर क्यों गए?

3. डॉक्टर ने बसंत को देखकर क्या कहा?

4. राजकिशोर ने डॉक्टर से ऐसा क्यों कहा कि इसे बचाना ही होगा?

III आत्म-बोध

(क) 1. ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है-इसे जीवन में धारण करें।

2. 'बाज़ार के हर कोने पर आजकल ऐसे लड़के मिलते हैं, जिनका काम गिड़गिड़ाकर लोगों को ठगना है।' कृष्णकुमार ने बिना जाने-समझे बसंत के बारे में राजकिशोर को अपनी राय दी जो कि सर्वथा ग़लत साबित हुई। अत: किसी को जाने-समझे बिना किसी के बारे में गलत धारणा मत बनाएं।

कुछ करने को- स्कूल में किसी अवसर पर इस एकांकी का मंचन करें।

(ख) दिए गए शब्द संकेतों की सहायता से कहानी लिखिए और उचित शीर्षक दीजिए

मेधावी एक सच्ची लड़की ——— दुकान पर राशन लेने जाना, भिन्न-भिन्न सामान लेना, नौ सौ पचास रुपए का सामान लेना, मेधावी का दुकानदार को हज़ार रुपए देना————— दुकानदार का मेधावी को सौ रुपए बकाया वापिस करना———— मेधावी का दुकानदार को पचास रुपए ज़्यादा देने के कारण पैसे वापिस करना— दुकानदार का खुश होना— धन्यवाद करना।

पाठ-25

बाल लीला

(1)

खेलन मैं को काको गुसैंयाँ।
हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबस की कत करत रिसैयाँ।
जाति पाँति हमते बड़ नाहीं, नाहीं बसत तुम्हारी छैयाँ।
अति अधिकार जनावत मोतै, जाते अधिक तुम्हारी गैयाँ।
रूहठि करै तासौं के खेलै, रहे बैठि जहँ-जहँ सब गवैयाँ।
सूरदास प्रभु खेलन चाहत, दाउँ दियौ करि नन्द दुहैयाँ।

(2)

मैया मेरी ! मैं नहिं माखन खायो।
भोर भये गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो॥
चार पहर बंसीबट भटकयो, साँझ परे घर आयो।

मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि विधि पायो॥
ग्वाल बाल सब बैर पड़े हैं, बरबस मुख लपटायो।
तेरे जिय कुछ भेद उपजि है, जानि परायो जायो॥
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतै नाच नचायो।
सूरदास, तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो॥

अभ्यास

I. भाषा-बोध

(i) **शब्दार्थ**

गुसैयाँ	:	स्वामी, मालिक	दुहैयाँ	:	दुहाई देकर
रिसैयाँ	:	क्रोध करना, रूठना	दाउँ	:	दाँव देना
छैयाँ	:	अधीन	भोर	:	सुबह, प्रात:
रूहठि	:	रूठना	बरबस	:	ज़बरदस्ती
पठायो	:	भेजना	मोतै	:	मुझसे
तासौं	:	उससे			
छींका	:	रस्सी, तार आदि से बनी झोली, जिसे छत से लटकाकर उसमें खाने-पीने की चीज़ें रखते हैं।			
ग्वैया	:	साथी ग्वाले	बिहँसि	:	हँसकर
लकुटि	:	लाठी	बहियन	:	बाँहें
कमरिया	:	कंबल			

(ii) **निम्नलिखित प्राचीन हिंदी शब्दों के खड़ी बोली (हिंदी) रूप लिखो।**

करत	________	हमते	________	मोतै	________
गैया	________	मैया	________	माखन	________
पाछे	________	केहि	________	कछु	________
बैर	________				

विचार-बोध

(क) 1. श्री कृष्ण क्यों गुस्से हो जाते हैं?

2. कृष्ण के क्रोध करने पर ग्वाल सखा क्या जवाब देते हैं?

3. खेल में कौन जीतता है?

4. कृष्ण ने मक्खन न खाने की कौन-कौन सी दलीलें दीं?

5. कृष्ण की कौन-सी बात सुनकर माता ने हँसकर उसे गले लगा लिया?

(ख) 1. कृष्ण के क्रोधित होने पर ग्वाल सखा क्या कहते हैं ?

2. सूरदास के इन पदों में बाल-मन की किन-किन भावनाओं को अंकित किया गया है ?

आत्म-बोध

1. अपने अध्यापक से कृष्ण के जीवन व लीलाओं का परिचय प्राप्त करो।
2. अपने अभिभावक/माता-पिता के साथ जन्माष्टमी पर्व की जानकारी प्राप्त करो व मेला देखो।
3. सूरदास द्वारा लिखित बाल-लीला के अन्य पद पढ़ो।